॥ श्रीः ॥

# शैतानी माया

लेखक :—

देवकली सिंह

प्रकाशक :—

रिखबदास बाहिती,

प्रोप्राईटर :—"दुर्गा प्रेस" और

आर० डी० बाहिती एण्ड को०,

नं० ४, चोरबगान, कलकत्ता।

प्रथम बार } सन् १९२४ { मूल्य १।॥) रेशमी २।)

प्रकाशक :—
रिखबदास बाहिती,
आर० डी० बाहिती एण्ड को०,
नं० ४, घोरबगान, कलकत्ता ।
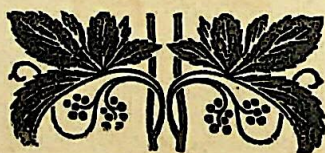


मुद्रक—
रिखबदास बाहिती,
"दुर्गा प्रेस"
नं० ४, घोरबगान,
कलकत्ता ।

# जासूसी ग्रन्थमाला

यदि आपको उत्तमोत्तम

## सचित्र जासूसी ग्रन्थ

पढ़नेकी इच्छा हो तो,

॥) प्रवेश फी भेजकर इस

## "जासूसी-ग्रन्थमाला"

—: के :—

ग्राहक बन जाइये.

प्रत्येक पुस्तक पौनी कीमतमें मिलेगी।

निम्नलिखित पुस्तकें निकल चुकी हैं—

शैतानी चक्कर—मूल्य १॥।)

शैतानी लीला या सुनहरा साँप—मूल्य १॥।)

शैतानी जाल या काल रात्रि—मूल्य १॥।)

शैतानी फन्दा— १॥)

शैतानी पञ्जा— २॥)

**आर० डी० बाहिती एण्ड कं०,**

नं० ४, चोरबगान कलकत्ता।

# आदर्श ग्रन्थमाला

यदि आपको उत्तमोत्तम

**सचित्र ग्रंथ**

उपन्यास, जीवनी, इतिहास प्रभृति

पढ़ना और अपनी

गृहस्थी सुखमयी, गुणमयी तथा

आदर्श बनाना हो, तो

॥) भेजकर

**'सचित्र आदर्श-ग्रन्थमाला'**

के

ग्राहक बन जाइये.

सब पुस्तकें पौने मूल्यमें मिलेंगी।

**आर० डी० बाहिती एण्ड कम्पनी,**

नं० ४, चोरबगान, कलकत्ता।

कमला एक तेज घोड़ेपर सवार, अपने पिताके बताये हुए स्थानपर शीघ्र पहुंचने

# शैतानी माया।

## पहिला खण्ड।

### पहिला परिच्छेद।

#### रोग-शय्या।

"यदि रामपालसे एक वार मेरी भेंट हो जाती तो दो लाख रुपयेका काम होता।"

राजस्थानके पहाड़ी प्रदेशमें बूंदीगढ़ नामका एक छोटा सा गाँव है। उसी गाँवके एक छोटेसे एक-तल्ले मकानमें रोग-शय्यापर पड़े हुए, अस्सी वर्षके एक बूढ़ेने अस्फुट स्वरमें, उपरोक्त शब्द कहे। इसके बाद दुःख तथा निराशासे आखें मूँद लीं। बूढ़ा अब दो घड़ीका मेहमान है। उसके प्रत्येक अङ्ग शिथिल और अवश हो गये हैं। लम्बी लम्बी सांसें चल रही हैं। बगलमें एक शोड़षी सुन्दरी बालिका बैठी हुई

रोगीको पङ्खा झल रही है। उसकी वेश-भूषा बहुत साधारण है। परन्तु उसकी असाधारण सौन्दर्य्य-छटासे सारा घर आलोकित हो रहा है! उसके कुसुम कोमल गात्रका रूप लावण्य देखकर सहसा ऐसा भ्रम हो सकता है, कि मानों कोई देवबाला स्वर्गसे उतरकर रोगीकी सेवामें निरत है।

किशोरीने पूछा—"रामपाल कौन बाबूजी ?"

वृद्ध रोगी बोला—रामपालसिंहको मैंने स्वयं कभी नहीं देखा है। परन्तु उनका नाम अनेकों बार सुना है। वह बड़े विश्वासी, साहसी, दूरदर्शी और विचारवान पुरुष हैं। उनके पिताके साथ मेरा घनिष्ट परिचय था। परिचय ही क्यों, गहरी मित्रता थी। सुना है, आजकल रामपालसिंह पुलीसमें नौकरी करते हैं। एक बड़े नामी जासूस हैं। उनके जैसा अद्भुत जासूस इस देशमें शायद दूसरा नहीं है।

किशोरीने चञ्चल दृष्टिसे पिताकी ओर देखते हुए पूछा—"एक चिट्ठी लिखनेसे क्या वह नहीं आ जायँगे, बाबूजी ?"

यह बात सुनकर वृद्धने किशोरीका हाथ अपने काँपते हुए हाथमें लेकर विह्वल भावसे कहा—"कमला! बेटी! अब चिट्ठी भेजनेके लिये समय कहाँ है! इस समय जैसी अवस्था मेरी हो रही है, उससे मालूम तो नहीं होता कि मैं अधिक देरतक बचूं। इसलिये, चिट्ठी लिखनेसे कोई लाभ नहीं। दुःख इसी बातका रह गया कि मरते समय मैं तेरे लिये कुछ भी न रख जा सका। इसीलिये कहता था, कि यदि एक बार राम-

पाल आ जाते तो उनके साथ कोई बन्दोबस्त कर मैं निश्चिन्त होकर मरता।”

किशोरीका नाम कमला बाई है। वृद्धकी यह बात सुनकर कमला बाईने रोकर कहा—“नहीं, बाबूजी, आप कोई फिक्र मत कीजिये। आप जरूर जी उठेंगे। आपके न रहनेपर मुझ अभागिनीको कौन देखे-सुनेगा! मैं किसकी शरण जाऊँगी? भगवान अवश्य ही मुझपर इतने निष्ठुर नहीं हो जायँगे।”

वृद्ध—बेटी, भगवान किसीपर निष्ठुर या सदय नहीं होते। वह भी कर्मकी रेखको टाल नहीं सकते हैं। यदि आज ही मेरे दिन पूज गये होंगे, तो कोई भी मेरी रक्षा न कर सकेगा। अब बात यह है, कि तू यदि अभी ऐसा कोई उपाय करती जिससे रामपालसिंह शीघ्र ही मेरे पास आ जाते तो बहुत उपकार होता। क्या कोई ऐसा आदमी नहीं है, जो अभी चिट्ठी लेकर रामपालके यहाँ जा सके?

कमलाने चिन्तित भावसे कहा—ऐसा तो कोई नहीं दीखता जो हम गरीबोंके लिये, इस भयङ्कर रातमें, बीहड़ जङ्गलों और पहाड़ोंसे होकर कहीं जा सके। तिसपर भी आजकल डाकुओंके उत्पातसे कोई दिनमें ही घरसे बाहर निकलनेका साहस नहीं करता। रातकी बात कौन चलावे। हाँ, यदि तुम उनका पता ठिकाना बता दो, तो मैं स्वयं जा सकती हूँ।

एक लम्बी साँस लेकर वृद्ध बोल उठा—नहीं बेटी, मैं तुझे नहीं भेज सकता। रातका समय है। बीहड़ जङ्गलके भीतरसे

होकर जाना है। आजकल चोर डाकुओंका उत्पात भी बहुत मचा रहता है। मैं तुझे कैसे भेज सकता हूँ।

कमला अल्पवयस्का बालिका थी; परन्तु थी राजपूतकुमारी। उसकी धमनियोंमें वीर जातियोंका गर्म खून दौड़ रहा था। राजपूत वीराङ्गनायें चिरकालसे युद्ध-कुशला, वीर-भर्त्तारा और उपयुक्त वीर-पत्नी होती आयी हैं। हथियार चलाने, घोड़ेपर चढ़कर दूर दूरका सफर कर आने, और मौका पड़नेपर बर्च्छा और कृपाण लेकर शत्रुका दमन करनेकी शिक्षा उन्हें बचपन हीसे मिलती है। कमलाको भी इस प्रथाके अनुसार रण-शिक्षा मिली है। बचपनसे ही मातृ-पितृहीन बालिकाने सदा समरसिंहके साथ साथ रहकर जंगलों और पहाड़ोंमें शिकार खेलकर अश्वारोहण, शस्त्र चलाना, यहाँ तक कि बन्दूक पिस्तौल छोड़ना भी सीख लिया था। यद्यपि उसकी बाल्यावस्था इन पुरुषोचित शिक्षा और अभ्यासोंमें ही व्यतीत हुई थी तथापि यौवन-समागमके साथ साथ स्त्रियोचित मधुरता, कोमलता और लज्जाशीलताके पूर्ण विकासमें किसी प्रकारकी कोर कसर न रहने पायी।

कमला आसपासके आठ दस कोसके भीतर सभी स्थानोंको अच्छी तरह जानती थी। इसलिये यदि वह घोड़ेपर सवार होकर चार पाँच कोस दूर लाल पहाड़पर जानेको तैयार हुई तो कोई आश्चर्य्यकी बात नहीं है। यह तो उसके लिये हँसी खेलकी बात थी। इसी लिये उसने धीर गम्भीर स्वरमें कहा—

"बाबूजी! मैं आपके कहनेसे कभी बाहर नहीं हुई हूं। किन्तु

आज आपकी अन्तिम अभिलाषा पूर्ण करनेके लिये आपके मना करने पर भी लाल पहाड़पर जाऊँगी। आप कोई चिन्ता न कीजिये। मैं निर्विघ्न वहाँ पहुंच कर उनको साथ लेकर शीघ्र ही लौट आऊंगी।"

मुमुर्षु पिता थोड़ी देरतक निस्तब्ध रह कर बोल उठे—"बेटी! बड़े दुस्साहसिक कार्यमें अग्रसर हो रही है। परन्तु न जानेसे भी काम चलने लायक नहीं है। अच्छा जाती है तो जा, परन्तु देखना जंगल वाले रास्तेसे मत जाना। आजकल वहाँ डाकुओंका बड़ा उपद्रव रहता है।

कमला—बाबूजी! आप कोई चिन्ता न कीजिये। आप तो जानते ही हैं, कि मैं कितना तेज घोड़ा दौड़ा सकती हूँ। चाहे कैसा भी डाकू क्यों न आवे, वह मुझे पकड़ नहीं सकता। रास्ता तो देखा ही हुआ है, फिर आपको चिन्ता क्या है?

वृद्ध—अच्छा, बेटी, रास्तेमें यदि भीमसिंह मिल जाय तो तू क्या कर सकेगी? वह तो आजकल उसी प्रदेशमें रहता है और आजकल वह तेरा घोर शत्रु हो रहा है।

यह नाम सुनते ही कमलाका चेहरा क्रोधसे तमतमा उठा। आखें चमक उठीं। उसने निर्भीकतासे कहा—मैं भीमसे डरती नहीं हूँ बल्कि उसे नरकके कीड़ेकी तरह घृणित और अस्पृश्य समझती हूं।

वृद्धने कहा—राजपूतबालाके मुखसे ऐसा वाक्य ही शोभा पाता है।

वृद्धने जिस भीमसिंहकी बात कही थी, वह राजपूत कुलमें उत्पन्न हुआ, एक उच्छृङ्खल और दुराचारी युवक था। वह बचपन हीसे कमलाको जानता था। कमलाके पालक पिता (इस मुमुर्षु वृद्ध) का मकान भीमसिंहके मकानके पास ही था। कमला और भीम बचपनसे ही एक साथ खेले खाये थे। बचपनसे ही उनमें बड़ा मेल-मिलाप था। कमलाने धीरे धीरे बाल्यावस्थाको पार कर यौवनमें पदार्पण किया। इधर भीम-सिंह भी शिक्षाके अभावसे और बुरे संसर्गके कारण पाप-पथपर अग्रसर होने लगा। उसकी पाप-दृष्टि कमलापर भी पड़ी—उसने कमलासे व्याह करना चाहा। कमला भी उसे प्यार करती थी, पर ठीक वैसे ही प्यार करती थी, जैसे एक बहन अपने भाईको प्यार करती है—एक लड़का अपने खेलके साथीको प्यार करता है और एक विद्यार्थी अपने सहपाठीको प्यार करता है। अतएव, बचपनसे ही कमला भीमसिंहको स्नेह और ममत्वकी दृष्टिसे देखती थी परन्तु उससे व्याह करनेका विचार उसके मनमें कभी भी नहीं उठा था। इसलिये भीमका प्रस्ताव सुनकर उसने घृणाके साथ उसका प्रत्याख्यान कर दिया। विफल मनोरथ होनेपर भीमके मनमें ईर्ष्याकी आग धधक उठी—प्रतिहिंसाके लिये वह उन्मत्त हो उठा—भले बुरेका ज्ञान जाता रहा। उसने प्रतिज्ञा की कि जिस तरहसे होगा, वह अपनी प्रतिज्ञा पूरी करेगा—कमलाको अपनी दासी बनाकर ही दम लेगा। पहले ही कहा जा चुका है, कि संगदोषसे वह पापा-

चारमें निमग्न हो गया था। अब कमलासे उपेक्षित होने-पर उसने समाजका बन्धन एक बारगी तोड़ डाला और चोर-डाकुओंका संग्रह कर उनका दलपति बन बैठा। चोरी डकैती-जाल ही उसका पेशा हो गया—परन्तु पुलीसकी दृष्टिसे वह कब बच सकता था? पुलीसकी दृष्टि उसपर पड़ी। बाध्य होकर उसे अरावलीकी शरण लेनी पड़ी। अरावलीमें छिपा छिपा वह सारे प्रदेश पर अपना आतङ्क और अत्याचार फैलाने लगा। प्रजा उसके भयसे त्राहि त्राहि करने लगी।

कमला बाईके पालक पिताके पास एक बहुत ही दामी अरबी घोड़ा था। उसकी शानका एक भी घोड़ा उस प्रदेशमें न था। भीमसिंहके दलके लोगोंकी बहुत दिनोंसे उस घोड़ेपर दृष्टि थी परन्तु समरसिंह भी कोई साधारण आदमी नहीं थे। उनके यहाँसे इस अमूल्य रत्नको चुरा लाना कोई साधारण बात न थी। भीमसिंहके दलवालोंने उसको चुरानेकी अनेकों बार चेष्टा की थी परन्तु उन्हें कभी सफलता न मिल सकी।

कमला बाई पितासे आज्ञा पाकर आवश्यक अस्त्र शस्त्र और उपयुक्त वेश भूषासे सुसज्जित होकर अस्तबलमें गयी और उसी अरबी घोड़ेपर जीन कसकर सवार हो गयी। रास्तेमें कैसी विभीषिका मुख फैलाये, उसे निगलनेके लिये बैठी है, अबोध कमला, उस समय कुछ भी अनुमान न कर सकी।

# दूसरा परिच्छेद ।

## पथ-कराटक ।

शुक्ल पक्षकी सुहावनी रात है। भगवान तारापति असंख्य तारका मण्डलीके बीच पूर्णकलाके साथ विराज रहे हैं। उनकी अमृतवर्षी किरणोंसे पृथ्वी-तल हरा-भरा और सजीव हो रहा है। ऐसे समय यदि पाठकगण अरावली पर्वत मालाके वन्य पथपर दृष्टि दौड़ायें तो देखेंगे कि एक अपूर्व लावण्यवती षोड़षी सुन्दरी बाला विद्युद्वेगसे घोड़ा दौड़ाती हुई, वन-जङ्गलोंको पार करती चली जा रही है। रमणीका यह कोमल कठिन भाव और अपूर्व वीरवेश देखते ही बनता है। उसके अश्वसञ्चालनके कौशल को देखकर मनमें सहज ही एक प्रश्न उठता है, :राजस्थानकी वीराङ्गनायें, वीर-पत्नी और वीर-प्रसू क्यों होती हैं।

पाठकगण तो समझ ही गये होंगे, कि अश्वारोहिनी वीर रमणी हमारी पूर्व परिचिता कमला बाई है। पिताके बताये हुए स्थानपर जानेके लिये राजपथको छोड़, शीघ्र पहुँचनेकी इच्छासे बीहड़ वन्य-पथसे जा रही है। कमलाका घोड़ा हवासे बातें करता चला जा रहा है।. पर्वत शिलाओंपर उसकी टाप पड़नेसे ऐसा जान पड़ता है, मानों कोई विजयी वीर गर्वके साथ अपने पराजित शत्रुका पीछा करता चला जा रहा है। कमला निर्भीक

भावसे घोड़ा दौड़ा रही है। सहसा घोड़ेकी चालमें वाधा पड़ी। घोड़ा एकबारगी विगड़ खड़ा हुआ और हिनहिनाता हुआ पीछे हटने लगा। कमलाने वहुतेरा प्रयत्न किया कि घोड़ेको आगे बढ़ाये पर किसी प्रकार भी वह सफल न हुई। घोड़ा जोर जोरसे हिनहिनाने और कूद फांद मचाने लगा। कमलाने समझा कि किसी जङ्गली जानवरको देखकर घोड़ा डर गया है। वह प्यारसे उसकी पीठ ठोककर पुचकारती हुई उसे आगे बढ़ानेकी चेष्टा करने लगी। वहुत चेष्टाके बाद घोड़ा किसी तरह शान्त तो हुआ पर एक डेग भी आगे न बढ़ा।

विस्मित और चकित नेत्रोंसे कमलाने एकबार चारों ओर देखा। ठीक सामने घोड़ेके सिरके पास सहसा एक भीषणाकार मूर्त्ति दीख पड़ी। इतनी देरके बाद घोड़ेके भयका कारण मालूम हुआ।

चन्द्रालोकमें सौन्दर्य्य विकसित रमणी मूर्त्ति देखकर भीषणाकृति मनुष्य मूर्त्तिने कहा—"कहो सुन्दरी, इतनी रातको कहां चली हो?"

घोर स्थिर और निर्भीक भावसे कमलाने उत्तर दिया—"आप हटकर खड़े हों। आपको देखकर मेरा घोड़ा भड़क रहा है। मैं जल्दीमें हूं।"

भीषण मूर्त्तिने भीषण अट्टहास्यकर अपने स्वाभाविक कर्कश स्वरमें कहा—"अरे! बात क्या है? तुम इतनी रातको कहां चली हो?" इतना कहकर उसने तुरत कुर्त्तेकी जेबसे

वंशी निकालकर बजायी। दूसरे क्षण उत्तरमें एक वंशीकी आवाज सुन पड़ी। थोड़ी देरके बाद वैसे ही भीषणाकार और भी कई मनुष्य वहां आ पहुंचे। उनमेंसे एकने तुरत आगे बढ़कर घोड़ेकी लगाम पकड़ ली।

रमणी घबड़ा कर कातर स्वरमें बोल उठी—"रास्ता छोड़ो, तुमलोगोंका चेहरा देखकर मेरा घोड़ा बिगड़ रहा है, मुझको पहाड़से गिरा न दे।"

दूसरे ही क्षण रमणीका हृदय भयसे कांप उठा। उनमेंसे एकके परिचित स्वरने उसके समस्त उत्साह, साहस और आशाको तिरोहित कर दिया। वह आदमी कह रहा था—"चन्द्र सूरज झूठे हो सकते हैं, परन्तु मेरी बात झूठी नहीं हो सकती। मैं ज़ोर देकर कह सकता हूं कि यह वही है। यह उसीके गलेकी आवाज है।"

एक दूसरेने उत्तर दिया—"तब तो अच्छा ही हुआ। बहुत दिनोंसे बूढ़े के इस घोड़ेपर मेरी नजर लगी हुई थी। परन्तु कभी दांव नहीं लगता था। आज अच्छा मौका मिला है।"

कमलाको अब समझनेमें देर न लगी कि वह डाकुओंके पंजेमें पड़ गयी है। बहुत देरतक मन ही मन अपनी भावी विपदको हृदयंगम करती हुई वह चुपचाप डाकुओंके सामने घोड़ेकी पीठपर बैठी रही। इसी बीचमें डाकू इशारेसे अपना अपना काम बाँटकर, तैयार हो, खड़े हो गये।



पहलेके डाकूने फिर अपने स्वाभाविक कर्कश स्वरमें पूछा—

"सुन्दरी, चुप क्यों हो गयीं ? कोकिल-कण्ठ खोलो। कहाँ जाना चाहती हो ?"

इतनी देरमें कमलाने सम्भवतः भागनेका उपाय सोच लिया था। मृत्यु हो, वह भी स्वीकार, पर निश्चेष्ट होकर शत्रुओं को कभी आत्मसमर्पण नहीं कर सकती। यदि एकबार घोड़ेको उत्तेजित कर चला सकी तो उसे कौन पकड़ सकता है ? वेरोक टोक क्षण भरमें वह इनकी पहुँचसे बाहर निकल जा सकती है। परन्तु घोड़ेको चलाना भी तो बड़ा कठिन है। दो आदमी दोनों ओरसे लगाम पकड़कर खड़े हुए हैं। उसने गम्भीर स्वरमें कहा—"हट जाओ, रास्ता छोड़ो—मुझे जरूरी काम है। जाना ही होगा।"

डाकूओंमेंसे एकने घोड़ेकी लगामको और भी जोरसे पकड़ कर विकट हास्य करते हुए कहा—इतनी जल्दी क्या पड़ी है। सुन्दरी, एक बार घोड़ेसे उतर तो पड़ो। हम लोग तुम्हारा चन्द्रमुखका दर्शन कर लें। फिर जाना। तुम्हारा कोमल शरीर क्या घोड़ेपर बैठने लायक है ? यदि चढ़ना ही है, तो एक अच्छे घोड़ेपर चढ़ कर साध मिटा लेना।

इस आकस्मिक विपदमें पड़कर कमला हतबुद्धि हो गयी थी। वह अभी भागनेका उपाय सोचनेमें ही लगी थी। घोड़ेकी रास पकड़े हुए डाकुओंको दो एक बातोंमें भुलावादेकर भागने-का मौका ढूंढ़नेकी आशासे उसने कहा—"देखें तो तुम्हारा घोडा कहाँ है, यदि वह मेरे घोड़ेसे तेज होगा तो मैं वही लूँगी।"

लगाम पकड़े हुए एक डाकूने कहा—"वाह बीबी जान! तुम तो बड़ी चालाक मालूम होती हो। हमने समझा था कि तुम कोकिल कण्ठ न खोलोगी।"

कमला समझ गयी कि इन डाकुओंको ठगना सहज नहीं है। इधर उनकी असभ्य दिल्लगी भी नहीं सही जाती थी। परन्तु क्या करती, कोई उपाय नहीं था। इस विषम सङ्कटमें पड़कर भी कमला एक बारगी दया-ममता-हीन इन डाकुओंको आत्मसमर्पण करनेकी अपेक्षा किसी न किसी प्रकार निकल भागनेकी चेष्टा करना अच्छा समझती थी।

इस लिये अनन्योपाय होकर कमलाने सहसा लगामको जोरसे खींचकर "कुमार" की पीठपर चाबुक मारा। इसी बीचमें घोड़ा कुछ शान्त हो गया था—मानों वह भी विपदको हृदयंगम कर सका था। अपनी आरोहिणी द्वारा उत्साहित होकर वह एकाएक कूदकर तीव्र वेगसे पर्वतकी ओर दौड़ पड़ा। जिन दोनों डाकुओंने घोड़ेकी रास पकड़ी थी, वे घोड़ेका भीषण वेग सम्हाल न सकनेके कारण चितपटान होकर लोट गये। यहां यह कह देना आवश्यक है कि कमला उस अरबी घोड़ेको प्यार से "कुमार" कहकर पुकारा करती थी। "कुमार" शब्द कमलाके मुखसे निकलते ही घोड़ा चञ्चल हो उठता था। कमला घोड़ेको ज़ोर जोरसे चाबुक मार मार कर उसे उत्तेजित करती हुई कहने लगी—"उड़ो उड़ो "कुमार"! उड़ चलो" सचमुच कुमार भी पीछे विपद समझकर हवासे बातें करता हुआ दौड़ने लगा।

रात्रिकी भीषण निस्तब्धताको भंग करती हुई पिस्तौलकी अनेकों आवाजें हुई—कमलाके कानोंके निकटसे होकर सों सों करती हुई कितनी ही गोलियाँ चली गयीं। कमला समझ गयी कि डाकू पीछा कर रहे हैं। उनकी गोलियोंसे वह आहत न हो जाय, इस डरसे वह घोड़ेपर झुक गयी और उसे जोर जोरसे दौड़ाने लगी।

# तीसरा परिच्छेद ।

## डाकुओंके हाथोंमें ।

कमलाको पहाड़ी रास्ता अच्छी तरह मालूम रहने पर भी विपदमें पड़कर उसे दिकभ्रम हो गया। उसे मालूम होने लगा, मानों वह किसी नवीन स्थानपर चली आयी है। कुछ दूर अग्रसर होकर वह एक ऐसे स्थानपर पहुंची, जहाँसे दो तीन रास्ते भिन्न भिन्न दिशाओंको निकल गये थे। दूसरा समय होनेपर कमला उदयपुर जानेके रास्तेको सहज ही पहचान ले सकती परन्तु आज भयङ्कर विपदसे जान बचानेके लिये वह इतनी व्याकुल हो रही थी, कि ठीक रास्तेको चुननेमें समय न खोकर, वह एक ओर चल पड़ी। यह पथ-निर्वाचनकी त्रुटि ही उसके शत्रुओंके हाथमें पड़नेका कारण हुई। कुछ दूर जानेके बाद उसको मालूम हुआ, कि वह दूसरे रास्तेसे चली आयी है। सामने कुछ ही गजपर सैकड़ों फीट नीची एक तराई है और पीछे नर-मांस लोलुप हिंस्र दस्युओंका दल है और दो पग आगे बढ़ते ही घोड़ेके साथ उसको तराईमें चिरविश्राम करना पड़ेगा। कमलाको वाध्य होकर घोड़ेको पीछे हटाना पड़ा! डाकू अब निकट आ पहुंचे थे। उनके पैरोंकी आहट साफ सुनायी पड़ती थी। दूसरा कोई रास्ता न मिलनेके कारण, डाकू जिधरसे

आ रहे थे उसी ओर कमलाने जोरसे घोड़ा दौड़ा दिया। उसने सोचा, कि डाकुओंके पहुंचनेके पहले ही मैं ठीक रास्तेसे होकर उदयपुरकी राह पकड़ लूँगी। निडर राजपूत-कन्या इस आशासे पुनरुत्साहित होकर पीछेकी ओर लौट पड़ी। परन्तु उसकी सारी आशा धूलमें मिल गयी। क्योंकि उसने दश हाथ जाने न जाते देखा कि डाकुओंका दल रास्ता रोककर खड़ा है।

भीम चिल्लाकर बोला—"कमला! अब भी घोड़ा रोको!" भीमकी आवाज सुनकर मन्त्रमुग्धकी तरह कमलाने घोड़ेको रोक लिया। अब भागनेका संकल्प हवा हो गया। भीमको देखते ही कमलाका हृदय भयसे काँप उठा—सर्वाङ्गमें मानों सन्निपात हो गया। क्षणभरमें सशस्त्र डाकुओंने चारों ओरसे उसको घेर लिया। शिकार फिर हाथ लगनेके कारण उनके आनन्द और उत्साहकी सीमा न रही। पहले एक बार उन्हें इस युवतीसे धोखा खाना पड़ा था, इसलिये इस बार सभी सावधान होकर घोड़ेको घेरकर खड़े हुए।

सभीके हाथोंमें पिस्तौलें हैं, जिनका लक्ष्य एकमात्र कमला-का वक्षस्थल है। असहाय अबला युवतीको इस प्रकार आक्रमण करनेमें हत्यारोंको कुछ भी लज्जा और संकोच नहीं होता है। संकोच हो कैसे? मनुष्यत्व यदि हो तब तो?

भीम पैशाचिक हँसी हंसकर कर्कश स्वरमें बोला—"क्यों मैना! खूब उड़ी थी! अबकी बार न उड़ सको, इसका उपाय मैं अभी करता हूं। कमले! दया करके एक बार घोड़ेसे उतर

पड़ो तो सही।" भीमके उस विकट हास्य और धीर सम्भाषणको सुनकर कमलाका शरीर सिहर उठा। इधर सरदारके हुक्मसे दो डाकुओंने खूब सावधानीके साथ घोड़ेकी लगाम पकड़ ली। कमलाको अब घोड़ा चलानेकी कोई सुविधा न रही। अब उसका जीवन शैतानोंकी दयापर निर्भर करने लगा। परन्तु कमलाको अपने प्राणनाशका भय नहीं था। वह जानती थी कि भीम किसी प्रकार भी मुझपर हाथ न उठायेगा परन्तु इस वार अवसर मिलते ही वह अपनी पाप वासनाको पूर्ण करनेकी चेष्टा करेगा। कुमारी युवती बालाके लिये इससे बढ़कर विपद् और कौन हो सकती है?

मृत्यु तो इसके सामने सहस्रों वार उसके लिये काम्य वस्तु है। कमलाके मनमें यह भय उठते ही उसका हाथ अपनी पिस्तौलपर पड़ा। इस समय यदि वह चाहती तो अनायास भीमसिंहको मारकर अपना कण्टक दूर कर सकती थी। और सरदारके मरते ही सम्भवतः अन्यायी डाकू भी जंगलका रास्ता लेते, कोई उसको पकड़ रखने और उस पर अत्याचार करनेका साहस न करता। परन्तु नहीं, कोमल प्रकृति नारीके हाथसे नर-हत्या सम्भव नहीं। यद्यपि कमला बाई वीर वंशमें उत्पन्न हुई थी और सैनिक शिक्षा भी उसको यथेष्ट मिली थी परन्तु उसका हृदय स्वभावतः नारी सुलभ कोमल उपादानोंसे बना हुआ था। नर हत्याका विचार मनमें उठते ही उसका शरीर शिहर उठा—जो मनुष्य उसके सामने साक्षात् शैतानकी तरह

खड़ा हुआ नाच रहा है, जिसके हृदयमें क्षण भरके लिये भी मृत्यु-चिन्ता स्थान नहीं पाती, उसके सामने सहसा भीषण नरकका चित्र खड़ा कर देना न्यायानुमोदित भले ही हो परन्तु उससे निष्ठुरताका परिचय मिलता है। यद्यपि भीमसिंह कमलाका सर्वनाश करनेको उत्सुक हो रहा है, यद्यपि शैतानको दण्ड देनेके लिये कमलाको अच्छा अवसर मिला था, परन्तु राजपूत कन्याको नरहत्या करनेका साहस नहीं होता है। जीव-हत्या स्त्रीका काम नहीं है। इसलिये किंकर्त्तव्य विमूढ़ होकर कमला काठकी पुतलीकी तरह घोड़ेपर बैठी हैं।

भीम बोला—"आओ कमला! मैं तुम्हारा हाथ पकड़कर घोड़ेसे उतार दूँ।" इतना कहकर भीमने उसका हाथ पकड़नेके लिये अपना हाथ बढ़ाया।

जरा चौंककर कमलाने उत्तर दिया—"भीमसिंह, तुम क्यों मुझपर इतना अत्याचार कर रहे हो? मुझे इस प्रकार पकड़ रखनेसे तुम्हें क्या फायदा होगा? बचपनकी बात एक वार याद करके मुझ पर दया करो। आज मुझे छोड़ दो। मैं एक जरूरी कामसे कहीं जा रही हूँ।"

भीम—क्यों अबूझकी तरह बकवाद करती हो? मैं इन बातोंमें नहीं भूलनेका। अब भी कहता हूँ, मेरी बात सुनो। यदि तुम बुद्धिमानीसे काम लेकर मेरी बात मानोगी तो कोई भी तुम्हारा अनिष्ट न कर सकेगा।



कमलाने विवश होकर कहा—"भीमसिंह, क्यों तुम बीच

रास्तेमें मुझे इस प्रकार रोक रहे हो? तुम यदि मेरा घोड़ा लेने ही से सन्तुष्ट होओ तो मेरे साथ चलो, गन्तव्य-स्थानपर पहुंच कर मैं तुम्हें यह घोड़ा दे दूँगी। मेरे पिता मृत्यु-शय्यापर पड़े हुए हैं। देर होनेसे मैं अन्तिम समय उनका मुख तक नहीं देख सकूँगी।"

यह बात सुनकर भीमको और भी खुशी हुई। वह निधड़क बोल उठा—"ऐं! क्या कहती हो? तुम्हारे पिता मर रहे हैं?"

बाधा देकर कमलाने कहा—हाँ, उनका अन्तिम समय आ गया है। मृत्युके पहले वह अपने एक मित्रसे भेंट करना चाहते थे। इसी लिये मैं शीघ्रतासे उनको बुलानेके लिये जा रही हूं। बीच रास्तेमें तुमने नाहक ही मुझको रोक रखा है। यदि घोड़ा लेना ही तुम्हारा मतलब हो तो घोड़ेको लेकर मुझे छोड़ दो। पिताके साथ अन्तिम भेंट करनेका मुझे अवसर दो।

भीम—कमला, तुम क्या समझती हो, कि सिर्फ घोड़ा ही लेकर मैं सन्तुष्ट हो जाऊँगा? मैं घोड़ा नहीं चाहता, तुमको ही चाहता हूं।

कमला—अच्छा, तो मुझे लौट आने दो, फिर तुम्हारी जो इच्छा हो करना।

भीमने हँसकर कहा—आज छोड़ देनेपर फिर क्या कभी तुम मिलोगी? अब व्यर्थकी बात छोड़कर धीरेसे घोड़ेसे उतर पड़ो। बस इसीमें भलाई है। मैं तुम्हारी पट्टीमें नहीं आ सकता।

कमलाकी सभी आशा निर्म्मूल हो गयी। वह समझ गयी, कि भीमसिंह अब किसी प्रकार भी उसके भुलावेमें नहीं आ सकता। भय दिखलाकर भीमको वाध्य करना पागलपन है। ये डाकू, सज्जनता किसे कहते हैं, जानते ही नहीं, कानूनके भी ये पावन्द नहीं, दया ममताका तो इन्होंने पाठ ही नहीं पढ़ा है। इनसे दयाकी आशा करना मूर्खता है। अरावली पर्वत मालामें इन्हींका राज्य है, पुलीस इनके भयसे थर थर काँपती रहती है। बहुत दिनोंसे सरकार इनका दमन करनेकी चेष्टा कर रही है, परन्तु इनका प्रावल्य दिन दिन बढ़ता ही जाता है। भारतवर्षका कोई भी प्रान्त और प्रदेश बाकी नहीं। जहां ये लोग अपनी राजधानी अरावली पर्वत मालासे निकल कर धावा नहीं मारते हों। सिर्फ अरावली माला ही इनका आश्रय-स्थल नहीं है, ये लोग नाना वेशोंमें दलबाँध बाँध कर घूमा फिरा करते है। परन्तु आश्चर्य्यकी बात है। हजारों मनुष्योंके इस बृहत संघके ऊपर भीमसिंहका निर्विवाद प्रताप छाया हुआ है। सभी उसके संकेत पर मरने जीनेके लिये तैयार रहते हैं।

जिस समयकी घटनाका हम उल्लेख कर रहे हैं, उस समय अरावली पर्वत मालाके आसपासके गाँवोंमें, एक भारी आतङ्क फैला हुआ था, कि अरावली पर दानवोंका वास हुआ है। जो कोई उधरसे होकर जाता है, दानव उसे जीता निगल जाते हैं इस आतङ्कके कारण लोगोंका अरावली पर्वतपर जाना ए बन्द हो गया था। परन्तु पर्वत मालाकी दोनों ओर बड़े बड़े

शहर रहनेके कारण व्यापारियोंको वाध्य होकर घाटीसे जाना ही पड़ता था। यह जानी हुई बात थी, कि जिस आदमीका भाग्य तेज रहता था, वही दानवोंसे बचकर सकुशल अपने घर पहुँचता था। ये दानव और कोई नहीं, भीमसिंहके अनुचर होते थे। ये अनुचर कहाँसे, किस प्रकार धावा करते थे, कोई इसका अनुमान भी नहीं कर सकता था। पुलीसने एक एक करके सारी अरावली पर्वत माला को छान डाला परन्तु भीमसिंहके दलका कोई पता न लगा। कितने ही जासूसोंने अपना जीवन विपन्न करके भीमसिंको पकड़नेके लिये अरावली पर्वत मालामें प्रवेश किया—परन्तु दुर्भाग्यवश-वह प्रवेश मृत्यु मुखमें चिरप्रवेश ही होता था।

भीमसिंहने कमलाको घोड़ेसे उतारनेके लिये हाथ बढ़ाया। घोड़ा चञ्चल हो उठा। चार पाँच डाकुओंने मिलकर जब घोड़ेको शान्त किया, तब भीमसिंहने धीरेसे कमलाको उतार लिया, घोड़ेको लेकर और डाकू चले गये। इसी बीचमें जो चार डाकू घोड़ेको शान्त करनेमें लगे हुए थे, उनमेंसे एकने अवसर देखकर कमलाके पास सरक कर उसके कानमें गुन गुनाकर कहा :—"भय नहीं! तुम्हारी रक्षा करूँगा—तुम निश्चिन्त रहो।"

क्षण भरमें यह बात कहकर वह आदमी हट गया। इस आश्वासनपर निर्भर करनेका वैसा कोई कारण नहीं था। परन्तु न जाने क्यों कमलाके मनमें एक अपूर्व आशाका सञ्चार हुआ।

डाकुओंमें जो आदमी कहता है:—"भय नहीं, मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा—तुम निश्चिन्त रहो।" वह कोई साधारण आदमी नहीं है। कमलाके मनमें यह बात जम गयी। जिस आदमीने उसके कानमें ये बातें कहीं थीं, उसको ध्यानसे देखने पर कमलाको अत्यन्त आश्चर्य्य हुआ कि उस आदमीकी पोशाक भी अन्यान्य डाकुओं ही की तरह थी। यहाँ तक कि वह आदमी बात भी वैसे ही कर्कश स्वरमें करता था। परन्तु जब उसने धीरे धीरे उसके कानमें वे आशा की बातें कही थीं, उस समय उसका स्वर डाकुओंका सा नहीं था। उसमें एक प्रकारको कोमलता और मधुरता थी। कमलाको समझनेमें अब देर न लगी, कि जिस आदमीने ये बातें कही हैं, वह अवश्य ही कोई सहृदय और परोपकारी पुरुष हैं। किसी विशेष उद्देश्यके कारण वह डाकुओंके दलमें मिला हुआ है। कमलाको इस समय इतनेसे ही सन्तोष करना पड़ा कि कमसे कम एक आदमी तो उसके दुःखको दूर करनेकी चेष्टा करेगा।
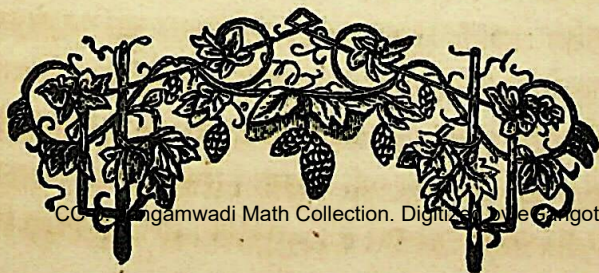
# चौथा परिच्छेद ।

## यह कौन है ?

धर कमलाकी करुण प्रार्थना सुनकर भीमने कुछ नरमीके साथ कहा—यदि तुम्हारे पिता मर ही रहे हैं, तो तुम वहां जाकर अब क्या करोगी ? वहाँ तुम्हारा दूसरा कौन है ?

मर्माहत होकर कमलाने उत्तर दिया—"छिः भीमसिंह तुम्हारा हृदय इतना कठिन है ! तुमने मनुष्यत्वको एक बार ही विसर्जन दे दिया है। मैं तुमसे बारम्बार अनुरोध करती हूं, कि तुम आज भरके लिये मुझे छोड़ दो। विश्वास न हो तो तुम मेरे साथ चलो। बाबूजीकी मृत्युके बाद यदि तुम अपनी यह जघन्य वृत्ति त्याग दोगे तो मैं खुशीसे तुम्हारा कहना माननेको तैयार हो जाऊँगी। यहाँ तक कि तुम्हारे साथ ब्याह करनेमें भी मुझे आपत्ति न होगी ।"

भीमसिंह—कमला, अब तुमपर मैं विश्वास नहीं कर सकता। मैं बचपनसे ही तुमको देखता हूं। तुम्हें मैं अच्छी तरहसे जानता हूं। यदि तुम्हारे पिता मुझसे तुम्हारा ब्याह कर दिये होते तो आज मैं डाकुओंके दलमें नहीं मिलता। तुमको न पानेके कारण ही मेरी यह अवस्था हो रही है। तुम्हींने मेरा सर्वनाश किया है।

है। पहले, मेरी अच्छी अवस्थामें, तुम मुझसे घृणा करती थीं। इसलिये आज इस घृण्य अवस्थामें तुमको प्राप्तकर मैं तुमसे प्रतिशोध लेनेकी चेष्टा करता हूं। तुम्हें जमींदार-पत्नी न बनाकर अब दस्यु-पत्नी बनाऊँगा। इसके बाद, मेरे भाग्यमें जो लिखा होगा सो होगा—मेरी एक मात्र यही लालसा—इस जीवनका उद्देश्य भीषण प्रतिशोध है !!

कातर-कण्ठसे कमलाने उत्तर दिया—"सिर्फ आज भरके लिये तुम मुझपर विश्वास करो। और देखो, मैं अबला नारी तुम्हारे साथ विश्वासघात कर क्या कुशलसे रह सकती हूँ ? तुम तो जब चाहो तब मुझे पकड़ सकते हो। फिर आज छोड़ देनेमें तुम्हें आपत्ति क्या है ?"

भीमसिंह झुंझलाकर बोल उठा—"चुप रहो। विश्वास अविश्वासकी बात मैं नहीं जानता। मैं अपनी सुविधा असुविधा देखता हूं। कौन वृथा ही तुम्हारे पीछे दौड़ना मंजूर करेगा ?

कमला इतनी देरके बाद अपनी भयंकर अवस्थाको पूर्ण रूपसे अनुभव कर सकी। उसका धीरज, साहस और भरोसा सभी एक साथ ही जाते रहे। उसका सारा अनुरोध उपरोध असफल हुआ। पत्थरका हृदय किसी प्रकार भी न पिघला। भीमने अन्तमें कहा—"कभी नहीं, कमला, मैं तुम्हें किसी तरह भी छोड़ नहीं सकता। मुझे अभी दूसरा काम है। मैं अधिक देरतक तुम्हारे साथ बात नहीं कर सकता। मैं तुम्हें जो कहता हूं सुन लो, फिर तुम्हारी जैसी इच्छा हो करना।"

बाध्य होकर कमला भीमसिंहके साथ साथ चली। जिस जगह आग जलाकर और डाकू चारों ओर बैठे हाथ पैर सेंक रहे थे, वहीं कमलाको साथ लिये भीमसिंह पहुंचा। जिस आदमीने कहा था--"डरो मत, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा। तुम निश्चिन्त रहो।" कमला उसी आदमीको डाकुओंके भीतर पह चाननेकी चेष्टा करने लगी। उसके चञ्चल चपल नेत्रोंसे वह सौभाग्यवान पुरुष किसी तरह भी छिप न सका। उसके सिर पर वही पहलेकी ही लाल पगड़ी थी। अन्यान्य कपड़े, लं डाकुओंकेसे ही थे। चेहरेसे एक ऐसी अपूर्व ज्योति झलकती थी, जिससे साहस, वीरता और निर्भीकताका अभास मिलता था—कमसे कम कमलाके नेत्रोंने तो यही भाव ग्रहण किया— "यह निश्चय ही वही आदमी है। मेरा अनुमान कभी झूठा नहीं हो सकता।" कमलाने अस्फुट स्वरमें अपने आप कहा— "ठीक" इसी समय शायद दूरसे किसीने सिसकारी दी। भीम- सिंहने चौंककर उधर ही देखते हुए पूछा—ऐं! यह कौन है?

सभी डाकू उधर ही देखने लगे। एकने कहा—"आज रातमें तो किसीके आनेकी बात नहीं है, फिर यह सीटी कैसी?

भीमसिंह—कोई जाकर चुपकेसे देख आओ। आज बहुत गोलमाल मालूम होता है।

तुरत एक डाकू, अन्धेरेमें, जिधरसे आवाज आयी थी, उधर ही चुपकेसे गया। और सभी डाकुओंने अपनी अपनी पिस्तौलें निकाल कर उधर ही लक्ष्य किया। जो आदमी देखने गया था

वह तुरन्त एक दूसरे आदमीको साथ लेकर लौट आया। सभी डाकुओंने उसको देखकर अपनी अपनी पिस्तौलें नीची कर लीं।

भीमसिंहने कहा—"अरे कौन है? कहाँ गया था?"

आगन्तुक आगके पास जाकर बैठ गया और बोला—"यह बात पीछे होगी। अभी एक बहुत ही जरूरी खबर है।"

भीमसिंह—क्या? रास्तेमें क्या तुमने किसीको देखा है? तुम्हें तो अन्धेरेमें जङ्गल झाड़ी देखकर भी डर लगता है। बोलो, किसीको आते हुए तो नहीं देखा है?

आगन्तुक—नहीं, क्या आप लोगोंने किसीको देखा है?

भीम—नहीं तो?

आग०—आज एक बड़ी खबर लाया हूं। बहुत परिश्रमसे मुझे यह पता मिला है।

भीमसिंह—उदयपुरके बाबू लोग हमें पकड़वानेके लिये षड़-यन्त्र कर रहे हैं, यही तो?

आग०—नहीं, इससे भी भीषण खबर है?

भीम०—भीषण खबर है!

आग०—तुम भीषण भी कह सकते हो और अच्छी भी कह सकते हो। परन्तु मेरा तो उसका नाम सुनते ही होश हवास उड़ गया है।

भीमसिंह झुँझलाकर बोल उठा—पाजी, बोलता क्यों नहीं, कबसे भूमिका बाँध रहा है।

आगन्तुक—इस वार जासूस रामपालसिंह हमें पकड़नेके लिये सरकारकी ओरसे नियुक्त हुए हैं। सुनता हूं, यह जासूस बड़ा धूर्त्त और दगाबाज है।

आगन्तुककी बात सुननेके लिये सभी डाकू उत्सुक हो रहे थे परन्तु उन्होंने ज्योंही विख्यात जासूस रामपालसिंहका नाम सुना त्योंही सबका कलेजा दहल उठा। सभीके चेहरेपर आतङ्क छा गया।

कमला इस समय निर्निमेष दृष्टिसे उस लाल पगड़ीवाले डाकूकी ओर देख रही थी। उसने देखा, कि उस आदमीके चेहरेका भाव सहसा बदल गया। भीमसिंहने अपने सभी अनुयाइयोंको भयभीत देखकर गर्वके साथ अपनी कमरसे एक बड़ा छुरा निकाल कर जोरसे जमीनमें गाड़ दिया और भीषण गर्जनके साथ बोला—"देखो, यदि रामपालसिंहने मेरा पीछा किया है तो मैं तुम लोगोंके सामने प्रतिज्ञा कर कहता हूं, कि इसी तरहसे उसकी छातीमें यह छुरा भोंक दूँगा। हजार हजार पुलीस पल्टनको अपनी तलवारसे काटकर मैंने अरावलीकी तराईमें डाल दिया है। इस वार रामपालसिंह चले हैं मुझे पकड़ने। जानते नहीं, पतिंगे जव मरनेपर होते हैं तो दीपकपर कूद पड़ते हैं।"

कमलाकी दृष्टि अब भी उस लाल पगड़ीवालेकी ओर ही लगी थी। उसने देखा, कि ये बातें सुनकर उसकी आँखें और भी चमकने लगीं। शरीरमें मानों एक अपूर्व आनन्द छा गया।

कमलाके मनमें अब दूसरा ही भाव उत्पन्न हो गया—तो क्या यही विश्वविजयी जासूस रामपालसिंह है? जिस आदमीकी हत्या करनेके लिये भीमसिंह इतनी शेखी बघार रहा है, वह महापुरुष क्या यही है?

# पांचवां परिच्छेद ।

———:*:———

## यह क्या आकाश-वाणी है ?

मलाको कुछ ढाढ़स हुआ। मानों किसीने उसके कानमें धीरेसे कहा—"कमला, डरना मत, मैं हूं भय नहीं, तेरा उद्धार होगा।" यही शब्द उसकी हृदय तन्त्रीकी प्रत्येक शिराओंसे प्रतिध्वनित होने लगे। इतनी देरके बाद कमलाकी समझमें आया, कि अवसर पाते ही रामपालसिंह चेष्टा करके मुझे छुड़ा लेंगे। साथ ही डाकू भी पकड़े जायँगे। फिर भी यह कल्पना कमलाको असम्भव सी प्रतीत हुई। जिसका पता लगानेके लिये ममूर्षु पिताको छोड़कर, त्रस्त व्यस्त भावसे वह उदयपुरकी ओर घोड़ा दौड़ाये जा रही थी, उसको अकस्मात् वह डाकुओंके दलमें पायेगी, इसकी कल्पना भी उसने नहीं की थी। यदि घटनावश वह भीमसिंह द्वारा पकड़ी न जाती तो रामपालसिंहको खोज निकालना उसके लिये एक प्रकारसे असम्भव ही था। जिसको उसने विपद समझा था, वही उसकी कार्य्य-सिद्धिका कारण होगा। यह आशा एक वार भी उसके मनमें नहीं उठी थी। सच है, चक्रीके कार्य्य-चक्रका रहस्य भेद करना क्षुद्र मानवका काम नहीं है। प्रत्येक कार्य्यका फलाफल

सुन्दर भविष्यत्‌के गाढ़ अन्धकारमें ढँका हुआ होता है। जिसको दिव्य दृष्टि है, वही उस रहस्यको देख सकता है।

कमला जब इस प्रकार आत्म-चिन्तामें तन्मय हो रही थी, उस समय दस्यु मण्डली अपनी विपद्की आलोचना करने लगी हुई थी। जिसका नाम सुनकर दुराचारी डाकुओंका लौ सूख जाता है, जिसके भयसे अधिकांश डाकू देश छोड़कर भागी गये हैं, उसकी चर्चा चलनेसे भीमसिंहके अनुयाइयोंके हृदयमें यदि आतङ्क छा गया तो कोई आश्चर्य्यकी बात नहीं। कमला चुपचाप ध्यान देकर डाकुओंका परामर्श सुनने लगी।

आगन्तुक बोला—चाहे तुम लोग जितनी ही शेखी बघारो, मेरा दृढ़ विश्वास है कि रामपालसिंहने जब हमारा पीछा पकड़ा है, तब कुछ किये विना वह कल नहीं लेगा। जबतक वह जीता रहेगा, तब तक हम लोग निरापद नहीं हो सकते।

भीमसिंह—मैं इसकी कुछ भी परवा नहीं करता। मैं तो उस छोकड़ेको चुटकीसे मलकर उड़ा दे सकता हूँ। यदि तुम लोगोंको उसका इतना ही भय लगा हुआ है, तो खबर भेजकर और और जगहोंसे अपने साथियोंको बुला लो। यहाँ भी तो हम लोग चालीस पचास जने हैं। दो चार पुलीस पल्टनके साथ रामपाल यदि आये भी तो हमारा क्या बिगाड़ सकता है?

एक डाकू बीच ही में बोल उठा—परन्तु मुझे तो कुछ "दालमें काला" मालूम होता है। रामपालकी चालाकीको

समझना बहुत कठिन काम है। मैं मानता हूं, वैसे वैसे अनेकों रामपालको आप चुटकीसे उड़ा दे सकते हैं, परन्तु फिर भी मुझे आशङ्का होती है, कि उसकी बुद्धिके सामने आपको भी हार ..नी पड़ेगी। यदि ऐसा हुआ तो हम लोग कहींके ..गे।

भीम—क्यों? उसने तुम्हें कैदखाने भेजा था, इसीलिये? देखता हूं, उसकी चर्चा छिड़ते ही तुम्हारा होश गुम हो जाया करता है। तुम्हारे समान यदि और भी दो चार डरपोक जाहिल मेरे दलमें होते, तो हमें कभी अरावली छोड़कर भागना पड़ा होता।

आगन्तुक—परन्तु सरदार! तुम्हारे मुखसे भी यह बात शोभा नहीं देती। तुम जमीनमें छुरा गाड़कर अपनी वीरता प्रकट कर सकते हो, हवासे युद्धकर सकते हो, अपनी अनुचर मण्डलीमें बैठे बैठे दम्भ प्रकट कर सकते हो, परन्तु रामपाल तुम्हारा काल है। इस बातको कभी न भूलना। याद पड़ता है न? एक दफे उससे कैसा पाला पड़ा था?

भीमसिंह—उस वार बिलकुल बेदाँव पड़ गया था और मैं अपनी सीमासे बाहर भी हो गया था—हाथमें कोई हथियार भी नहीं था। इस लिये वाध्य होकर मुझे भागना पड़ा था। अब सर्वदा अपने साथ पिस्तौल और छुरा रखता हूँ। अब यदि एक बार भेंट हो तो देखूंगा, कि रामपाल कैसा जासूस है।

अकस्मात् कहींसे आवाज आयी—"शीघ्र ही भेंट होगी, तैयार रहो।"

भीमसिंह चिल्लाकर बोल उठा—"कौन बोला है? यह बात किसने कही है?"

किसीने भी उत्तर नहीं दिया। जलती हुई आगकी लौ बहुत कुछ बुझ गयी थी, किसीका मुख साफ नहीं दिखलायी पड़ता था। गुस्सेके साथ भीमसिंहने चारों ओर देखा—किसीने भी कोई उत्तर न दिया।

इस वार क्रोधसे उन्मत्त होकर भीमसिंह फिर वज्र गम्भीर स्वरमें बोल उठा—"तब या तो मेरे दलमें कोई नमकहराम, विश्वास घाती है या रामपालका कोई गुप्तचर मेरे दलमें मिला हुआ है।"

आगन्तुक—अच्छा, इस बातको जाने दो! शायद किसीने तुम्हें चिढ़ानेके लिये मजाक किया है। अभी तुम रञ्ज हो गये हो, इस समय क्या कोई स्वीकार करेगा? कहो, अब हमें क्या करना उचित है? लड़ाई झगड़ा करनेसे तो कोई लाभ न होगा। खूब सोच विचार कर बड़ी सावधानीसे हमें काम करनेकी जरूरत है। जब तक रामपालको हम मार नहीं डालते तबतक निश्चिन्त नहीं हो सकते।

कमला पहलेसे जिसकी ओर देख रही थी, अब भी उसकी दृष्टि उसीकी ओर लगी हुई थी। उसके मनमें दृढ़ निश्चय हो गया कि "शीघ्र भेंट होगी, तैयार रहो।" ये शब्द कहने वाला

वही रामपालसिंह ही थे। यद्यपि ठीक शब्द निकलते समय उसकी दृष्टि उनके मुखकी ओर नहीं थी, तो भी उसने निश्चय कर लिया, कि ये शब्द किसी दूसरेने नहीं कहे हैं।

अब कमलाको प्रधान चिन्ता लगी, कि किस प्रकार अपने पिताका सन्देश रामपालको सुनाऊँ। मुमूर्षु पिताकी मृत्यु-शय्याके पास इस समय रामपालकी उपस्थिति अत्यन्त आवश्यकीय है। यह सन्देशा छद्मवेशी जासूसको किस प्रकार दूँ।

कमलाको इस समय अपनी विपद्का तनिक भी ख्याल नहीं है। वह इसी फिक्रमें लगी हुई है, कि रामपालसे कैसे बातें करूँ। बहुत देरके बाद कमलाके मनमें एक उपाय सूझ पड़ा। वह एक बारगी बोल उठी—भीमसिंह! तुम लोग जासूस रामपालकी बात कहते हो?

आश्चर्यसे आंखें फाड़ फाड़कर देखते हुए भीमसिंहने पूछा—हां, तुम उसके बारेमें क्या जानती हो?

कमलाने उत्तर दिया—मैं उन्हींकी खोजमें जा रही थी। रास्तेमें तुमने रोक लिया है।

कमलाने यह कह कर तिरछी नजरसे लाल पगड़ी वालेकी ओर देखा। वही आदमी रामपालसिंह है या नहीं, इस बार देखते ही वह समझ गयी।

रामपालसिंहका नाम उच्चारण करते ही वह आदमी विस्मयके साथ उसके मुखकी ओर देखने लगा था। उसके दोनों आंखोंसे एक अपूर्व तेज निकल रहा था। कमला

समझ गयी कि—गुप्त वेशमें स्वयं जासूस रामपालसिंह उसकी सहायताके लिये तैयार हैं।

जानकीसिंह नामक एक आदमीने पूछा—"तुम रामपाल-सिंहके पास जाती थीं ?"

कमला—हां।

सभी डाकू आश्चर्य्य-चकित होकर कमलाकी ओर देखने लगे।

नारायणरामने कमलाकी ओर फिर कर कहा—ओह! समझा, यहांके सभी लोग हमलोगोंको पकड़ा देनेकी लिये षड़यन्त्र कर रहे हैं। इस लड़कीके जरिये कोई रामपालके पास खबर भेज रहा होगा।

भीम—तुम क्या कहती हो कमला ? तुम रामपालके पास क्यों जा रही थीं ?

उपस्थित बुद्धि कमलाने तुरन्त उत्तर दिया—"मैं रामपाल जासूसके पास एक सन्देशा लेकर जा रही थी।"

जानकीसिंह एक छलांगमें बालिकाके सामने जा कर खड़ा हुआ और बोला—क्या तुम रामपालके पास खबर लेकर जा रही थीं ? अच्छा बताओ, वह क्या खबर है ? नहीं बताओगी तो तुम्हारा गला फाड़कर उसे बाहर निकाल लूंगा।

ज्यों ही जानकीसिंह गर्जन करता हुआ बालिकाके पास पहुँचा त्यों ही कहींसे रामपालसिंह भी अलक्षित भावसे उसके पीछे आकर खड़े हो गये। कमला समझ गयी कि, जानकी-

सिंहके आक्रमणसे मुझे बचानेके लिये ही रामपालसिंह उसके पीछे आकर खड़े हुए हैं। साहस कर कमलाने कहा—मुझे डराते क्यों हो? मैं तो यों ही कहती हूं। सुनो—बहुत दिन हुए, मेरे पिताके साथ रामपालसिंहके पिताकी मित्रता थी। रामपालके पिताकी उन्होंने जीवन रक्षा भी की थी। पिताजीने यद्यपि रामपालसिंहको देखा नहीं है, परन्तु उन्हें पूरा विश्वास है, कि रामपालसिंह कभी उनकी भलाई करनेसे बाज न आयेंगे।

जानकी सिंह बोल उठा—भाँड़में जाय तेरी भलाई और बुराई! अब यह बता कि, क्या खबर लेकर तू उसके पास जा रही थी?

कमला निर्भीक भावसे कहने लगी—मेरे पिता समरसिंह अभी मृत्यु शय्यापर पड़े हुए हैं। मरनेके पहले वह रामपाल-सिंहको कुछ गुप्त बातें बता जाना चाहते हैं। उन्होंने किसीसे सुना है, कि आजकल वे लाल पहाड़पर आये हुए हैं! इसी लिये उन्होंने स्वयं मुझे उन्हें बूँदी ग्राममें बुला लानेके लिये भेजा है। मैं यही सन्देशा लेकर जा रही थी।

तीक्ष्ण बुद्धि कमलाने इस प्रकार चतुराईके साथ अपना सन्देशा रामपालसिंहको बतला दिया। साथ ही अपना निवासस्थान भी कौशलके साथ बतला दिया। कमला इसी बीचमें कैसी चाल चली, डाकुओंको इसका कुछ भी पता न लगा, परन्तु इसीमें उसका काम बन गया।

जानकीसिंह बोल उठा—खूब कही तूने ! इससे हमलोगोंका क्या फायदा होगा ?

नारायणराम—बहुत उपकार होगा। मेरी तो इच्छा होती है, कि एक वार इस छोकड़ीको छोड़ दिया जाय और इसके पीछे पीछे हम भी रामपालके पास चलें। आज ही हमारा उसका कोई निपटारा हो जाय।

भीम—कुछ नहीं होगा। मैं सोचता हूं, कि रामपालके अनुचरोंको यह खबर मिल गयी है—क्योंकि हमारे दलमें ही उनका कोई अनुचर है। सम्भवतः आज ही रातको रामपाल बूँदी ग्राममें जायगा। आज यदि हम लोग वहीं उसपर आक्रमण करें तो कैसा अच्छा हो ?

ठीक उसी समय एक अद्भुत घटना हुई। कहींसे कोई बोल उठा—"ठीक कहते हो, आज रातही को रामपाल कमलाके पिताके पास जायगा। यदि तुम लोगोंकी शक्ति हो तो जाना।"

# छठवां परिच्छेद।

———:*:———

## रामपाल।
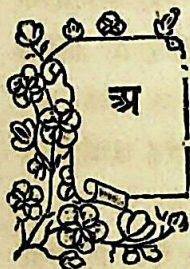
अचानक बिजली गिरनेसे डाकूओंको उतना भय और विस्मय न होता, जितना उस लक्ष्यहीन शब्दको सुनकर हुआ था। कुछ देरतक सभी स्तम्भित होकर एक दूसरेका मुख ताकते रहे।

इस शब्दसे सभी डाकू चञ्चल और विचलित हो उठे; परन्तु कमलाको अपार आनन्द प्राप्त हुआ। यह जानकर अब उसका मन निश्चिन्त हुआ कि रामपालसिंह खबर पा गये हैं और वह अभी पिताजीके पास जा रहे हैं!

भीमसिंह इस समय क्रोधसे उन्मत्त हो रहा था। उसकी आंखोंसे आगकी चिनगारियाँ निकल रही थीं! उसने उठकर एक एक कर सबके मुखकी ओर देखा और हरेकसे पूछा—"क्या तुमने यह बात कही है?" परन्तु किसीने भी स्वीकार न किया। अन्तमें उसने लाल पगड़ीवाले डाकूके पास जाकर कहा—मोती, क्या तुमने ही मुझे चिढ़ानेके लिये यह बात कही है?

पाठक! समझ रखिये, रामपालसिंहने डाकुओंके बीच अपना नाम मोतीसिंह रखा है।

मोतीसिंहने हँस कर कहा—"साबित करो।"

भीम०—साबित करनेकी कोई जरूरत नहीं है। मुझे निश्चय हो रहा है, कि तुम्हींने यह बात कही है। खैर, आजसे मैं तुम्हें सावधान कर देता हूं, कि इस प्रकार तुम फिर बेअदबी न करना। नहीं तो मैं तुम्हें ऐसा दण्ड दूँगा कि जन्म भरतक याद करोगे। खबरदार! मैं तुम्हें अच्छी तरह जान गया हूं। कल तुमसे मेरी बातें होंगी। आज किसी जरूरी कामसे मैं अभी एक जगह जा रहा हूं।

मोती सिंह उर्फ रामपालसिंहने कोई उत्तर न दिया। उनकी कार्रवाई साधारण लोगोंसे भिन्न प्रकारकी होती थी। दूसरा कोई होता तो सरदारका सन्देह दूर करनेके लिये झूठ-मूठ कितनी ही बातें बनाता परन्तु रामपालने ऐसा करना उचित नहीं समझा, इसमें भी उनका कोई विशेष अभिप्राय था!

रामपालसिंह आगके पास जाकर बैठ गये।

जानकीसिंहने पूछा—यह मोतीसिंह कौन है? कहाँसे आया है?

भीमसिंह—यह जयपुरकी हमारी शाखा मंडलीका सदस्य है।

एक तीसरा बोल उठा—इस दलमें भरती करते समय आपने अच्छी तरह इसकी परीक्षा की थी न?

भीमसिंह—हम लोगोंके संकेत तो इसने सभी बतला दिये थे और चाल चलनमें भी बहुत अच्छा आदमी मालूम हुआ। सभी काम बड़ी बहादुरीसे करता है। परन्तु इतना ही ऐब

है कि मेरा अदब नहीं रखता। इसीसे आजकल उसपर मुझे सन्देह हो रहा है। मैंने इसकी कड़ी परीक्षा लेना विचारा है।

जानकीसिंह—मैं तो कहता हूं, ऐसे बेअदब आदमीको अपने दलमें रखना ही अच्छा नहीं है। न जाने कब यह नमक-हरामी कर बैठे।

भीमसिंहने मुस्कुराकर कहा—धीरज धरो, भाई! धीरज धरो, मैं शीघ्र ही इसका उपाय करता हूं।

भीमसिंहने कमलाके पास जाकर कहा—"कमला! आज तुम इस छोटी रावटीमें जाकर सो रहो, कल तुमसे मेरी बातें होंगी। अभी मैं एक विशेष कामसे एक जगह जा रहा हूं। तुम्हें कोई चिन्ता नहीं। मैं सवेरे आकर फिर भेंट करूंगा।"

कमला भागने न पावे, इसका पूरा बन्दोबस्त कर भीम-सिंह अपने चार साथियोंको लेकर चला गया। निरुपाय होकर कमला भी अपनी रावटीकी ओर चली। इतने ही में मोती-सिंहने उसको इशारेसे बुलाया। कमला डरती हुई उनके पास गयी।

मोतीसिंह उर्फ रामपालसिंहने कहा—मेरी बातोंका उत्तर नहीं देना होगा। जो मैं कहता हूं, उसे सुनती जाओ। शायद तुम मुझे पहचान गयी हो?

कमलाने सम्मति सूचक सिर हिलाया।

रामपाल—यदि समझ गयी हो तो मुझपर निर्भर करके चुपचाप रावटीमें जाकर सो रहो। तुम्हारा कोई भी अनिष्ट

न कर सकेगा। यहां हर वक्त तुम्हारी रक्षा करनेके लिये मेरे चार पाँच अनुचर गुप्त वेशमें तैनात हैं। तुम्हें कोई भय नहीं। मैं तुम्हारे पिताके पास जा रहा हूं। मालूम होता है, भीमसिंह भी वहाँ जाता है। शायद, आज मुझसे उसकी भिड़ान होगी।"

रामपालसिंह चले गये। जबतक वह आँखोंसे ओझल नहीं हुए, कमला मन्त्रमुग्धकी तरह एकटक उनकी ओर देखती रही।
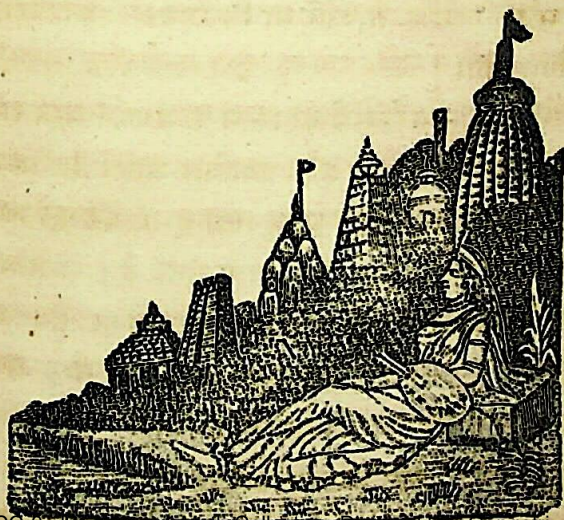
# सातवां परिच्छेद ।
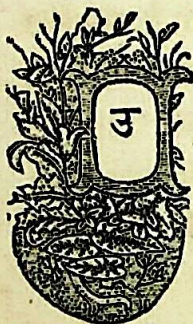
## रामपालसिंह—पहला या दूसरा ?

उपरोक्त घटनाके प्रायः तीन घण्टे बाद समर सिंहके बैठक खानेके दरवाजेपर किसीने धक्का दिया। शय्यापर पड़े पड़े रोगी समरसिंहने पूछा—"दरवाजा कौन खटखटाता है ?"

एक बूढ़ा समरसिंहकी बगलमें बैठा हुआ उनके शरीरपर हाथ फेर रहा था। उसने समरसिंहके प्रश्नके उत्तरमें कहा—"कोई होगा, चोर या भिखमङ्गा—इतनी रातको और कौन आवेगा ?"

समरसिंहने क्षीण स्वरमें कहा—नहीं, मँगरू ! आज रातको एक आदमीके आनेकी बात है ! एक बार जाकर देख तो आ।

बूढ़ा और कुछ न कहकर भुनभुनाता हुआ बैठकसे निकल कर दरवाजेपर आया। इस बूढ़ेका नाम मँगरू है। समरसिंहका जमाना जब अच्छा था, तभीका वह इनका नौकर है। बूढ़ेमें एक गुण था, वह नाड़ी देख सकता था और तरह तरहकी दवाइयाँ बनाकर बड़े बड़े रोगियोंको चङ्गा कर सकता था। वह बहुत सी ऐसी जड़ी बूटियाँ जानता था, जिनके गुण बड़े बड़े डाक्टरोंको भी मालूम न थे। मँगरू बहुत दिनसे नौकरी छोड़कर घर चला गया था। किन्तु इस विपदके समय अक

स्मात् वह न जाने कहाँसे आ पहुंचा । अचानक वह अपने स्वामीकी सेवा करनेके लिये आ पहुँचा हैं। इसको वह अपना अहोभाग्य समझता है। कमलाके जानेके थोड़ी ही देर बाद मँगरू आया हैं, तभीसे वह अपने मालिककी सेवा शुश्रूषा कर रहा है।

समरसिंहकी आज्ञासे मँगरूने जाकर दरवाजा खोल दिया ! एक हृष्ट पुष्ट नवयुवक कमरेमें दाखिल हुआ।

युवकने कमरेमें प्रवेश करते ही पूछा—"यही समरसिंहका मकान हैं ?"

मँगरू—हाँ।

युवक—यह रोगी ही समरसिंह हैं ?

क्षीण स्वरमें समरसिंहने उत्तर दिया—"हाँ, मेरा ही नाम समरसिंह है—आप कौन है ?

युवक—मेरा नाम राजा रामपालसिंह हैं। मैं सरकारी जासूस हूं।

इसी समय कमरेके भीतरसे कोई अलक्षित भावसे बोल उठा—"झूठ बात है।"

युवक चौंककर चारों ओर देखने लगा। जब कोई भी आदमी कमरेमें दिखलायी न पड़ा, तब गुस्सेसे दाँत पीसकर मंगरूकी ओर देखते हुए बोला—"कौन बोला है ? तुमने यह बात कही हैं ? बूढ़ा हरामजादा मुझसे दिल्लगी करता है।"

मँगरू—नहीं, मैंने तो कुछ भी नहीं कहा है।



समर—आप किस मतलबसे यहाँ आये हैं ?

युवक—किस मतलबसे? आपहीने तो मुझे बुलाया है। मेरा कोई अपना खास मतलब नहीं है।

समर—मैंने आपको बुलाया है? यह खबर आपको किसने दी?

युवक—आपकी लड़की कमलासे मुझे मालूम हुआ है।

समर—तो क्या कमलासे आपकी भेंट हुई थी?

युवक—जी हाँ।

समर—उसीने आपसे कहा है, कि मैं आपसे भेंट करना चाहता हूँ।

युवक—कमलाने कहा है कि आप मुझसे कोई गुप्त बात कहना चाहते हैं।

आगन्तुक युवकने जिस प्रकार समरसिंहके सभी प्रश्नोंका ठीक ठीक उत्तर दिया, उससे समरसिंहको अब निश्चय हो गया कि यही मेरे मित्रका लड़का रामपाल है। उसने आदरसे युवकको अपनी बगलमें बैठा कर संक्षेप ही में कुशल प्रश्न पूछा और अपने बुलानेका कारण कहना ही चाहता था, कि इसी समय एक आकस्मिक बाधा आ पहुँची। कमरेके किसी कोनेमें छिपी हुई आवाज आयी—"खबरदार! यह डाकू है।"

क्रोधसे आंखें लाल कर युवक मँगरूकी ओर झपटा और गरजकर बोला—"चुप! फिर बोला तो गला दाबकर मार डालूँगा। कौन डाकू है रे मूर्ख!" मँगरू काँपता हुआ प किनारे हट गया।

# आठवां परिच्छेद ।

## रामपाल दूसरा ।

इसी समय धीर गम्भीर भावसे एक सज्जनने कमरेमें प्रवेश किया। उनकी पोशाक राजपूतोंकी सी थी और चाल चलनसे मालूम होता था कि वह किसी उच्च घरानेके हैं। कमरेमें प्रवेश करते ही आगन्तुकने पूछा—तुम कौन हो?

कर्कश स्वरमें युवकने कहा—तुम कौन हो? दो आगन्तुक आपसमें लड़ न पड़ें, इस भयसे समरसिंहने नवागन्तुक युवकको सम्बोधन करके कहा—मैं तुम्हें पहचानता हूं। तुम्हारा मुख देखकर ही मैं तुम्हें पहचान गया हूं। जिसने तुम्हारे पिताको देखा है, वह अवश्य तुम्हें पहचान जायगा कि तुम उन्हींके लड़के हो। कमला, तुम्हें बुलाने गयी है। यदि उससे तुम्हारी भेंट न हुई हो तो कहना चाहिये कि ईश्वरने तुम्हें यहां भेज दिया है। इस समय तुम्हारी मुझे, बड़ी आवश्यकता है। कहो, तुम्हारा ही नाम रामपाल है या नहीं? तुम अवश्य ही सरकारके नामी जासूस रामपालसिंह हो।

रामपालसिंहने मुसकुराकर समरसिंहको प्रणाम किया और फिर पूछा—यह आदमी कौन है?

समर—जाने दो, कोई हो। मालूम होता हैं, कोई ठग जुआ-चोर हैं। अपनेको रामपाल कह कर परिचय देता था।

रामपालसिंहने जरा गुस्सेका भाव दिखलाकर कहा—“सचमुच? मेरे नामसे अपना परिचय देता था? तब तो देखना चाहिये कि यह आदमी कौन हैं।”

इतना कहकर रामपालसिंहने युवकके सम्हलनेके पहले ही उसकी दाढ़ी मूँछ पकड़कर जोरसे खींची। नकली दाढ़ी मूँछके खुलते ही भीमकाय भीमसिंहकी मूर्त्ति सामने खड़ी हुई मिली।

विस्मित होकर भीमसिंहकी ओर देखते हुए समरसिंहने कहा—क्यों भीम! तेरा इतना अधःपतन हो गया। मुझसे विश्वासघात करने आया है?

परन्तु भीमसिंहका इस तीव्र तिरस्कारपर कुछ भी ध्यान न था। इस समय वह कोई दूसरा ही उपाय सोच रहा था। भीम-सिंह इस तरह पीछेकी ओर हटा मानों वह समरसिंहका तिरस्कार सुनकर लज्जित हो गया है परन्तु इसी बहानेसे वह रामपालसिंहकी आंखें बचाकर उनके पीछे चला गया और कमरसे अपना चमकता हुआ छुरा निकालकर भोंकनेके लिये उद्यत हुआ।

भीमसिंहने यह सारी कार्रवाई इतनी फुर्त्ती और साव-धानीसे कर डाली कि रामपालसिंहको इसका पता भी न लगा। वह क्रोध और विस्मयसे नकली दाढ़ी मूँछकी ओर

क्षण भरके लिये देखने लग गये थे। इतनेहीमें भीमका पैना छुरा उनकी कोखमें घुसनेके लिये तैयार हो गया।

परन्तु दैवको यह मंजूर न था। उसी समय घरके एक कोनेसे सहसा एक दश वर्षके बालकने कूदकर भीमके पास जा, झटकेके साथ उसके हाथसे छुरा छीन लिया। दुबले पतले दश वर्षके लड़केके लिये यद्यपि यह सम्भव न था कि वह महाबली दस्यु सरदार भीमसिंहका सामना करता परन्तु उसके अचानक कूद पड़नेपर भीमसिंह स्तम्भित और किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो गया। उसका हाथ अवश हो गया। भीमसिंहने जब देखा कि रामपालसिंहके सावधान होते ही मेरे जानके लाले पड़ जायँगे, तो वह अपनी जान लेकर भागा। रामपालसिंहने भी उसके पकड़नेकी चेष्टा न की। इसमें उनका क्या उद्देश्य छिपा था, सो वही जाने।

बालकके आकस्मिक आगमनसे कमरेके अन्यान्य लोगोंको भी कम आश्चर्य्य न हुआ था। रामपालसिंहने उसकी ओर देखकर मुस्कुराते हुए कहा—क्यों बच्चा, तू यहाँ कैसे आया ? तुमको तो अभी मैं अरावलीके वनमें देखे आता हूँ !

बालक नाचता हुआ हँस हँस कर कहने लगा—"जिस तरहसे भीम आया है। आपने जब मुझे उसका पीछा करनेका भार दिया है तो मुझे पीछे पीछे फिरना ही पड़ेगा। मैं उसकी छाया हूं। वह जहां जायगा, वहीं मैं भी पहुंचूंगा। वह दूर चला गया होगा।" इतना कहकर बच्चा कूदता हुआ कमरेसे बाहर

निकल गया। पाठक तो समझ ही गये होंगे कि यह बालक रामपालसिंहका चर हैं। पाँच वर्षकी अवस्थामें बच्चेके माता पिता जब उसको रास्तेपर छोड़कर मर गये। तबसे अपनी देख रेखमें रखकर इस अनाथ बच्चेका पालन पोषण रामपालने किया है। पाँचही वर्षकी अवस्थासे उन्होंने इस लड़केको नाना प्रकारके वेश धरने, तरह तरहकी बोलियाँ बोलने और अपनेको छिपाकर दूसरेका पीछा करनेका कौशल सिखाया हैं। रामपालसिंह इस बच्चेको जो काम करनेको कहते हैं, बच्चा तुरत बिना हिच-किचाहटके उसको करनेके लिये दौड़ पड़ता हैं। रामपालसिंहके अन्यान्य अनुचरोंसे जो काम नहीं हो सकता, उसका भार बच्चाके ऊपर पड़ता है। एक शब्दमें बच्चा रामपालसिंहके दाहिने हाथके समान है! आजकल बच्चाके ऊपर भीमसिंहपर दृष्टि रखनेका भार पड़ा है। उसीका पीछा करता हुआ बच्चा समर-सिंहके मकान तक पहुंचा था और अवसर पाकर कमरेमें घुस गया था। कहनेकी आवश्यकता नहीं, कि समरसिंहको उसीने बार बार सावधान किया था।

भीमसिंहके भागनेपर रामपालसिंह स्थिर गम्भीर भावसे समरसिंहकी शय्याके पास आकर बैठे। बैठते ही उन्होंने पूछा, आप मुझसे भेंट करना चाहते थे ?

समर—तुम्हें किसने कहा ?

रामपाल०—यह जाननेकी अभी आपको जरूरत नहीं हैं ?



समर०—कमलासे तुम्हारी भेंट हुई थीं ?

रामपाल०—हुई थी।

समर०—वह कहाँ है ?

रामपाल—कमलाको डाकुओंने अभी कैद कर रखा है।

समर०—कैदकर रखा हैं ? कैसा हत्यारा है। तब तुमसे उसकी कैसे भेंट हुई।

रामपालसिंहने थोड़ेमें सब समझा कर कह दिया।

हाय मारकर समरसिंह रोने लगा—हाय कमला ! मेरे ही लिये तू कष्ट पा रही है। हाय ! भगवन् ! मैंने बड़ी भूल की कि उसको आधी रातके समय घरसे बाहर जाने दिया।

रामपालसिंह समरसिंहको सान्त्वना देनेकी चेष्टा करने लगे। रोते रोते समरसिंहने पूछा—भीमने उसे कहाँ कैद कर रखा है ?

रामपाल०—काला पहाड़के नीचेके जङ्गलमें उन्होंने डेरा जमाया है। वहीं उसे रोक रखा है।

समर०—क्या भीम भी प्रकाश्य भावसे डकैती करने लगा है ? पहले तो वह छिपे छिपे उनसे मिला रहता था।

रामपाल०—परन्तु आजकल एक बड़े भारी डाकुओंके दलका सरदार है। अरावली पर्वतमालामें उसका अखण्ड प्रताप छा रहा है। दल समेत इसको पकड़वा देनेके लिये सरकारने मुझे नियुक्त किया है।

समरसिंह अपनी लड़कीकी विपद चिन्ताकर विह्वल भावसे बोले—कहो बेटा, मेरी कमलाका कैसे उद्धार होगा। क्या वे उसको मार डालेंगे ?

धीर भावसे रामपालसिंहने कहा—आप घबड़ाते क्यों हैं? उसका वे कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। मेरी जान जाय तो जाय, परन्तु मैं उसका उद्धार करके ही कल लूँगा। कमलाने ही मुझे आपकी बात कही है।

समरसिंह एकाएक बोल उठे—"इस भयानक विपद्में उसे छोड़कर तुम चले क्यों आये? न मालूम इस समय उसपर कितने अत्याचार होते होंगे।"

रामपालसिंहने जरा मुस्कुराकर कहा—"मुझपर यदि आपका विश्वास हो तो आप निश्चिन्त रहिये। कमला पर कोई विपद नहीं पड़ी है, और न पड़ेगी। इस समय यदि आप मुझसे कुछ कहना चाहें तो जल्दी कहिये। मैं यहां देरतक् नहीं ठहर सकता।"

समर०—इतनी जल्दी क्यों?

रामपाल—याद रखिये, आपकी कमला अभी डाकुओंके हाथमें है। भीमसिंह भी अपमानित होकर जला भुना लौट गया है। इस समय मेरी भी उपस्थिति वहाँ अत्यन्त आवश्यक है। कौन जाने, यदि कमला पर कोई विपत्ति आ पड़े!

समर०—सो तो ठीक है—परन्तु मुझे बहुत कुछ कहना होगा—समय लगेगा। तुमको छोड़कर इस अनाथ लड़कीको पैतृक सम्पत्तिका उद्धार करने वाला दूसरा कोई नहीं है।

रामपाल—किस अनाथ लड़कीकी बाबत आप कहते हैं?



समर०—मेरी पालिता कन्या इसी कमला की!

रामपाल०—जान देकर भी यदि आपका कोई उपकार करना पड़े तो मैं करनेको तैयार हूं। सुना है, आपने एक बार मेरे पिताकी जान बचायी थी। मैं अकृतज्ञ नहीं हूं। यदि हो सका, तो मैं पिताका ऋण चुकानेकी चेष्टा करूँगा।

समर०—तुम्हींसे हो सकेगा बेटा! दूसरेके लिये यह काम असम्भव है। मेरी कमला अतुल ऐश्वर्य्यकी मालकिन है; परन्तु दलील दस्तावेज, कागज पत्र खो जानेके कारण वह सम्पत्ति दूसरेके हाथमें चली गयी है।

रामपाल०—आपको कैसे मालूम हुआ है कि कमलाकी सम्पत्ति पर आजकल जो लोग अधिकार जमाये बैठे हैं, उनके पास अब भी आपके खोये हुए कागज पत्र मौजूद हैं? क्या उन्होंने उनको नष्ट न कर दिया होगा?

समर०—नहीं, वे लोग नष्ट नहीं कर सकते। कागज पत्रोंके नष्ट हो जाने पर वे लोग उस सम्पत्ति पर अधिकार नहीं रख सकते।

रामपाल०—यदि ऐसा है तो आजतक यह बात आपने किसीसे कहीं क्यों नहीं?

समर०—आजतक कहनेसे कोई फायदा भी न होता! इस समय मुझे जो अवसर मिला हैं, वह पहले न मिला था। अभी मुझे कुछ ऐसे प्रमाण मिले हैं, जिनसे मुझे बहुत आशा होती है कि तुम्हारे जैसे उपयुक्त आदमीके हाथमें इस मुकदमेका भार देनेसे अभागिनीकी सम्पत्ति लौट सकती है।

रामपालसिंह अब अधीर होकर उठ खड़े हुए और बोले-अब मैं नहीं ठहर सकता।

समरसिंहने मंगरूको निकट बुलाकर पूछा—मंगरू! अब कबतक जीऊँगा ?

मंगरू—अभी अनेकों वर्ष।

समर०—आज मुझे धीरज बँधानेकी जरूरत नहीं है—ठीक ठीक बोलो, तुम्हें कैसा मालूम होता है।

मँगरू—मैं सच कहता हूं, यदि पहाड़ी जड़ी बूटियोंमें कुछ भी गुण होगा और मेरी इस वृद्धावस्थामें नाड़ी देखनेकी जानकारी नष्ट न हो गयी होगी, तो मैं ज़ोर कर कह सकता हूं कि आप अभी बहुत दिन जीयेंगे। कमसे कम इस बार तो आप बच ही उठेंगे।

समरसिंह कुछ आश्वस्त होकर बोले—अच्छा, जाओ राम-पाल! अपना काम देखो, कमलाको डाकुओंके हाथसे जिस तरहसे हो छुड़ाओ। अपना काम पूरा करके ही मेरे पास तुरन्त लौट आना। मैं अपनेको दो घड़ीका मेहमान समझता हूं। वह गुप्त बात तुम्हें बतानेके लिये मुझे बड़ी चिन्ता लगी हुई है।

रामपालसिंह इतने अधीर हो रहे थे, कि समरसिंहकी बातोंका कोई उत्तर दिये बिना ही वह चले गये। वह चाहते थे कि मैं भी भीमसिंहके साथ ही साथ अड्डे पर पहुँचूं पर बातों बातोंमें वह पिछड़ गये थे।



रास्तेमें भीमसिंहको एक जगह कुछ देर तक ठहरना पड़ा

था। रामपालसिंहको यह बात पहलेसे ही मालूम थी। इसी कारण वह कुछ देरतक समरसिंहसे बातचीत कर सके थे। पहाड़ी रास्तेपर घोड़ा चलानेका रामपालसिंहको अच्छा अभ्यास था, इसलिये कुछ विलम्ब होनेपर भी वह भीमसिंहसे पहले ही पहुंच गये। जिस स्थानपर कमला कैद की गयी थी, उससे थोड़ी दूरपर एक जङ्गलके पास, रामपालसिंहने अपना घोड़ा रोक दिया। तत्क्षण जङ्गलके भीतरसे किसानके वेशमें एक आदमी आया। रामपालसिंहने उससे पूछा—"भीम लौट आया है?"

किसान—अभी नहीं।

रामपाल—दूसरे घोड़ेकी टाप सुन पड़ती है। शायद भीम आ रहा है। जल्दी मेरा कपट वेश दो और घोड़ेको लेकर हट जाओ।

किसानने वैसा ही किया। दो चार मिनटोंमें ही रामपालसिंहका वेश परिवर्त्तित हो गया। किसान उनका उतारा हुआ कपड़ा और घोड़ा लेकर वनमें छिप गया। मोतीसिंहके वेशमें रामपालसिंह शिविरमें आये और जिस स्थानपर अन्यान्य डाकू पड़े खुर्राटे ले रहे थे, वहीं एक बगलमें चटपट लेट कर वह भी खुर्राटे परने लगे।

# नवां परिच्छेद.

## गुप्त परामर्श ।

भीमने अड्डेपर लौटकर पहले ही मोतीसिंहकी खोज की—मालूम हुआ कि शिविरमें एक बगल वह सो रहा हैं।

बहुत देरतक भीम मन-ही-मन कुछ सोचता रहा। उसने अनुमान किया था, कि लौटनेपर मोती दिखलायी न पड़ेगा। मोतीपर उसका पहले ही से सन्देह हुआ था। कभी वह सोचता था—यही रामपाल है और फिर कभी विचार उठता था, कि रामपालका कोई चर है। परन्तु आज उसका भ्रम दूर हो गया। उसे अब पूरा निश्चय हो गया, कि यह राम-पाल नहीं है। क्योंकि थोड़ी ही देर पहले वह रामपालको पाँच कोस दूर एक मकानके भीतर देख आया था। भीमने निश्चय किया कि हो न हो, यह रामपालका चर है।

सोये हुए डाकुओंमेंसे चुनकर भीमसिंहने एक डाकूको उठाया। नींद टूटनेपर पहले तो वह बड़ा रञ्ज हुआ। परन्तु भीमको देखकर वह चौंक कर उठ खड़ा हुआ। भीमसिंहने कहा—जानकीसिंह! एक बार मेरे साथ बाहर आओ, एक जरूरी काम है। जानकी अपने सरकारकी आज्ञासे चुपचाप उसके पीछे पीछे बाहर चला गया।

जिस रावटीमें कमला कैद की गयी थी। उसीके पीछे जा कर दोनों बातचीत करने लगे।

भीम—देखो, आज रातको जासूस रामपालसे भेंट हुई थी।

जानकी—इतने दिनोंके बाद शायद तुम्हारी आँखें खुली हैं?

भीमसिंह—क्यों?

जानकी०—पाँच घण्टे पहले यदि तुम मुझसे पूछते तो मैं बता सकता था, कि रामपाल मेरे ही दलमें मिला है।

भीम०—ऐं! तुम क्या कहते हो? हम लोगोंके दलमें मिला हुआ है?

जानकी०—हां।

भीम०—नहीं, तुम जो अनुमान करते हो, वह ठीक नहीं है। परन्तु हां, उसका एक चर यहाँ जरूर है। इतना मैं दावेके साथ कह सकता हूं।

जानकी०—वह कौन है।

भीम०—मोती जिसका नाम है।

जानकी०—क्या तुम्हें पूरा विश्वास है, कि मोती जासूस रामपाल नहीं है।

भीम०—हाँ, मुझे पूरा विश्वास है। इसका कारण भी है। आज रातको समरसिंहके मकानमें मैंने रामपालको देखा है।

जानकी०—क्या क्या हुआ है, विस्तारके साथ मुझे कह सुनाओ।



भीमसिंहने संक्षेप ही में सब वृत्तान्त कह सुनाया। सिर्फ

अपने अपमानित होनेकी बातको बारीकोके साथ बचा गया।

जानकी०—इसीसे तो कहता हूं, कि वह शैतान अगम-जानी है। जिस समय जहाँ जरूरत होती है, वहीं वह ठीक समयपर पहुँचा रहता है। भूतोंकी तरह वह हम लोगोंके आसपास ही घूमा करता है। परन्तु कोई उसको पकड़ नहीं सकता।

भीम०—कुछ दिनोंसे मेरे मनमें एक और भी सन्देह हो रहा है। जब कहीं मैं आता जाता हूं तो मुझे ऐसा मालूम होता है, कि कोई मेरा पोछा कर रहा है पर पीछा करनेवालेको, नहीं पकड़ सकता हूं। आहट मिलते ही जब मैं पीछे लौटकर देखता हूं तो किसीका पता ही नहीं लगता। कभी कोई लोमड़ी एक ओरसे दूसरी ओर दौड़ जाती है, कभी कोई बिल्ली। बड़े तअज्जुबकी बात है। मालूम होता है, कि वह छोटा सा बच्चा ही मेरे पीछे लगा हुआ है, जिसने आज रातको मुझे बाधा दी है। इस बार उस बच्चेको पाते ही मैं चबा जाऊँगा और रामपालकी तो कोई बात ही नहीं। मैंने उसे देखा कि अपनी बन्दूकका निशाना बनाया।

जानकी०—बड़ा कठिन काम है। जासूस रामपालका एक बाल भी बाँका कर डालना बड़े बूतेका काम है। यदि रातों रात उसका खून करके गुम कर दिया जाय तभी कुशल है।



भीम०—अभी क्या करना चाहिये, कहो तो सही।

जानकी०—यहाँसे डेरा कूच करो।

भीम०—मेरा भी यही मत है। रामपालने जब पीछा पकड़ा है, तब कुछ दिन छिप कर चुप रहना ही अच्छा है।

जानकी०—यही ठीक है।

भीम०—परन्तु जानेके पहले एक काम करना होगा। इस मोती सालेको मार कर गाड़ देना होगा। यह नमक हराम—रामपालका चर है।

जानकी—मैं भी यही सोचता था। उसको मारकर मिट्टीमें गाड़ देना ही अच्छा है। परन्तु उसको मारना भी तो कठिन है। दलके बहुतसे लोगोंसे उसकी मित्रता हो गयी है।

भीम०—मैंने इसके लिये एक उपाय सोचा है। ये जो नये तीन आदमी हमारे दलमें आकर भर्त्ती हुए हैं। वे इस देशके नहीं हैं। वे यहाँके लोगोंसे बड़ी घृणा रखते हैं। उन्हींके द्वारा मोतीका खून करवाना चाहिये। तुम उनको चुपकेसे बुला लाओ, फिर मैं सब समझाकर कह दूँगा।

दोनों इस तरह बातें करते चले गये। रावटीके भीतरसे कमला ये बातें सुन रही थी। कमलाके मनमें पूरा विश्वास हो गया था, कि मोतीसिंह उर्फ रामपालसिंह ही उसका उद्धार करेंगे। परन्तु उपरोक्त परामर्श सुनकर उसका हृदय काँप उठा। उसने एक बार झाँक कर देखा—भीमसिंह और जानकी-सिंह चले गये थे और जो पहरेदार उसके पहरेपर था, वह भी सो गया था। कमला अब निश्चेष्ट न रह सकी। चुपकेसे



अपनी रावटीसे निकलकर वह डाकुओंके तम्बूकी ओर चली।

वहाँ सभी डाकू सो रहे थे कमलाने जाकर देखा, मोतीसिंह एक किनारे सोये हुए हैं।

वास्तवमें मोतीसिंह क्षण भरके लिये भी सोये न थे। उनके दो एक चर भी बीच बीचमें उनको नयी नयी खबरें दे जाते थे। लेटे हुए वह जिस तरहसे खुर्राटे ले रहे थे, उसको देखकर कोई नहीं कह सकता था, कि वह जाग रहे हैं। वह पड़े ही पड़े आस-पासकी सारी कार्रवाही देख रहे थे।

उनके सिरके पास जाकर कमलाने कानमें कहा—मैं आपको एक बात कहने आई हूं। भीमसिंह आपकी हत्या करनेकी सलाह कर रहा है।

मोतीसिंहने मुस्कुराकर कहा—मुझे मालूम हुआ है। मेरे लिये तुम्हें कोई चिन्ता नहीं। परन्तु अपनी ओरसे मुझे सावधान कर देनेके लिये आयी हो, इसके लिये मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ। तुम जहाँ थीं, वही चली जाओ। भीमसिंह तुमको जहाँ ले जाय वहीं जाना। याद रखो, हम लोग छाया की तरह तुम्हारे साथ साथ रहेंगे। तुम यहां अब न ठहरो। मेरे पास तुम्हें देखकर ये लोग सन्देह करेंगे—सब काम विगड़ जायगा।

कमला कुछ भी न बोल सकी। वहाँसे उठकर वह रावटीकी ओर चली। कुछ दूर जाते ही उसको एक बात याद पड़ गयी। वह फिर मोतीसिंहके पास जानेके लिये लौट पड़ी। जैसे ही वह तम्बूमें घुसने जा रही थी वैसे ही किसीने पीछेसे उसका वस्त्र खींचा।

# दशवां परिच्छेद ।

---*---

## कमला और भीमसिंह ।

जिस आदमीने कमलाका वस्त्र खींचा था, वह और कोई नहीं, स्वयं भीमसिंह था। उसके पीछे ही जानकी खड़ा था।

भीमसिंह—कमला! तुम कहाँ जा रही हो?

कमला—मोतीसिंहको सावधान करनेके लिये?

भीम०—किससे सावधान करनेके लिये?

कमला—यही कि, तुम लोग उसका खून करना चाहते हो।

भीमने आश्चर्य्यसे पूछा—तुमको कैसे मालूम हुआ?

कमला—मैंने तुम लोगोंकी सलाह सुनी है।

भीम—हम लोगोंके बीचमें पड़नेकी तुम्हें कोई जरूरत नहीं। तुम अपने आप अपने पैरोंपर कुल्हाड़ी क्यों मारती हो? अभी तक हमने तुम्हें बाँध कर नहीं रखा है, पर देखता हूं कि अब वह भी करना पड़ेगा।

कमला रोकर बोली—"तुम्हारे कब्जेमें जब आ गयी हूं, तब तुम जो चाहो कर सकते हो, परन्तु याद रखना—ऊपर एक देखनेवाला है। वह अवश्य ही तुम्हारे पापोंका विचार करेगा। एक दिन तुम्हें उसका दण्ड भोगना ही पड़ेगा।"

बालिकाके मुखसे ऐसी तेज पूर्ण बातें सुनकर भीमको

बहुत क्रोध आया। कमलाको धक्का देता हुआ, वह उसको रावटीकी ओर ले गया। रावटीके दरवाजेपर पहुंचकर उसने कहा—"जाओ, तुम जहाँ थीं, वहीं चली जाओ। कुशल हुई कि ठीक समयपर मैं आ पहुंचा, नहीं तो मोतीसिंहसे सारी बातें तुम कह देतीं। फिर हम लोग हाथ मलकर रह जाते।"

डाकूके धक्केकी कड़ी चोट खाकर कमला रोती हुई रावटीमें चली गयी। भीमसिंहने कमलाको मोतीसे पहले बातचीत करते हुए नहीं देखा था। कमला जब दूसरी बार उनके पास जा रही थी, तभी उसने पकड़ा था। इसलिये भीमको विश्वास हो गया था, कि कमला मोतीसे अभी बातें नहीं कर पायी है।

भीमसिंहके हुक्मसे जानकीने सभी डाकुओंको एक एक करके जगाया पर मोतीसिंहको किसीने न जगाया। चुपकेसे सभी डाकू रावटी छोड़कर चले गये। सिर्फ भीमसिंह, जानकीसिंह और तीन नये डाकू मोतीसिंहकी हत्या करनेके लिये रह गये।

भीमसिंहके हुक्मसे कमलाको भी अन्यान्य डाकुओंके साथ जाना पड़ा। इतनी देरके बाद अभागिनीका अन्तिम अवलम्बन भी जाता रहा। अब वह एक बारगी निराश हो गयी।

किस प्रकार खून करना होगा, कहाँ गाड़ना होगा, ये सारी बातें तीनों नये डाकुओंको अच्छी तरह सिखा पढ़ाकर भीमसिंह जानकीको साथ लेकर अपने दलमें मिलनेके लिये चला गया। अब मोतीसिंह और तीनों डाकू रह गये।

जब सभी चले गये तब हँसते हुए मोतीसिंहने आँखें खोली। उन्होंने अपने तीनों आदमियोंको ओर फिर कर कहा—"शाबास, भाई तुम्हारी बहादुरी है। तुमने इन्हें खूब छकाया है। यह आश्चर्य्यकी बात है, कि तुम लोगोंपर भीमका जरा भी सन्देह नहीं हुआ हैं। तुमने उससे बातें करके इस तरहसे विश्वास उत्पन्न कर लिया था, कि वह तुम लोगोंपर हत्याका भार देकर निश्चिन्त हो गया है। इससे तुम्हारी कार्य्य कुशलताका अच्छा परिचय मिलता है। मैं इसे न भूलूँगा!" पाठक! इतनी देरके बाद समझ गये होंगे, कि बात क्या है। ये तीनों विदेशी डाकू रामपालके अनुचर हैं और उन्हींसे शिक्षा पाये हुए हैं। अनेकों बनावटी बातें कहकर, वे लोग भीमसिंहके दलमें भर्त्ती हुए थे। परन्तु भीमसिंहको एक दिन भी सन्देहका अवसर नहीं मिला था कि ये रामपालके सहायक हैं।

भीमसिंहने जब मोतीसिंहको रामपालका प्रधान अनुचर समझकर सोचा कि कहीं मोतीसिंहके जीवित रहनेसे उन लोगोंका गुप्त स्थान रामपालको मालूम न हो जाय तो इसी आशङ्कासे भीमसिंहने मोतीसिंहकी हत्या करनेका निश्चय किया था। परन्तु दुर्भाग्यसे पासा ही पलट गया।

मोतीसिंहने एक डाकूको (अपने अनुचरको) सम्बोधन कर कहा—दो छुरे खूनसे रङ्गकर भीमसिंहको दिखलाना ताकि उसे निश्चय हो जाये कि तुमने मोतीसिंहकी हत्या की है। इस समय वे लोग राजेश्वरी पर्वतकी उपत्यकामें होंगे।

लाल पहाड़के किनारेसे राजेश्वरी पहाड़को जानेका रास्ता है। डाकू उस रास्तेसे नहीं जायँगे। उनको बहुत घूम फिर कर जाना पड़ेगा। अढ़ाई तीन बजेके पहले वे लोग वहाँ नहीं पहुंच सकते। इसी बीचमें कुछ आवश्यकीय काम कर मैं लाल पहाड़के रास्तेसे राजेश्वरी उपत्यकामें आता हूं। मैंने जिसको जिस तरहसे काम करनेके लिये कह दिया है, ठीक उसी तरहसे करना। उससे जरा भी इधर उधर करनेसे पकड़े जाओगे। खबरदार! खूब सावधान।"

# ग्यारहवां परिच्छेद ।

## पहलेकी बात ।

इस घटनाके कुछ ही देर बाद मोतीसिंह ठीक उसी स्थानपर आये, जहाँ उन्होंने घोड़ा छोड़कर वेश परिवर्त्तन किया था। ज्यों ही वहाँ पहुंचे फिर वही किसानका लड़का, उनका घोड़ा और पोशाक लेकर हाजिर हुआ। मोतीसिंह अब रामपालसिंहके वेशमें सज्जित होकर मकानकी ओर चले।

उषाकी लालिमा अभी साफ नहीं दिखलायी पड़ती थी। पूर्व दिशामें सिर्फ एक हल्की सी लोहित आभा झलक मार रही है। समस्त वन्य पथ अन्धकारमें ढँका हुआ है। प्रभात होनेमें घण्टे दो घण्टेकी देर है। ऐसे समय रामपालसिंह घोड़ेपर चढ़कर समरसिंहके मकानकी ओर अग्रसर हुए। सूर्य्यका प्रकाश होनेके पहले ही वह समरसिंहके दरवाजेपर पहुंच गये। मँगरूने आकर दरवाजा खोल दिया। वह चुपचाप रोगीकी बगलमें जाकर बैठे।

समरसिंह तरह तरहके प्रश्न करने लगे। संक्षेप ही में उनके प्रश्नोंको उत्तर देकर, उन्होंने रातकी अद्योपान्त घटना कह सुनायी। सुनकर समरसिंह कहने लगे—"कमलाके पिता अतुल सम्पत्ति छोड़कर स्वर्गवासी हुए थे। कमला ही उनकी एक

मात्र सन्तान है। सम्पत्तिका दूसरा कोई अधिकारी नहीं है। कमलाके पिताने मरते समय विल तैयार किया था।

विलका सारांश यह था—"जबतक कमलाका विवाह नहीं हो, तबतक उसकी विमाता उसकी अभिभावक रहेगी। कमलाका विवाह होनेपर दामाद ही समस्त सम्पत्तिका मालिक होगा और कमलाकी विमाताको खुराक-पोशाकके अलावा ५००) रुपये महीनेमें मिला करेंगे। परन्तु यदि दैव दुर्विपाकसे कमलाकी पहले मृत्यु हो गयी, तो उसकी विमाता किसीको गोद लेगी और वही सब सम्पत्तिका मालिक होगा। उस अवस्थामें भी कमलाकी विमाताका पहला ही अधिकार रहेगा अर्थात् वह अन्य खास खर्चोंके सिवा ५००) रुपये महीनेमें पाया करेगी।"

"कमलाकी उमर जब पाँच वर्षकी हुई, तब उसकी विमाताने छल कर उसको उसके मौसीके घर भेज दिया। वहाँ किसी आदमीके द्वारा उसका प्राणवध कर उसको पोखरेमें फेंकवा दिया गया। उस समय हमें ऐसी ही खबर मिली।

"कमलाके पिता मेरे चचेरे भाई थे। हम दोनों भाइयोंमें बड़ी अनबन रहती थी। पहले हमारी पैत्रिक-सम्पत्तिका बटवारा नहीं हुआ था। परन्तु कमलाके पितासे अनबन होनेके कारण मैंने मामला-मुकद्दमा कर अपना हिस्सा अलग कर लिया था।

"कमलाके पिता व्यापार करते थे। तीन पुरुषसे हमारे खानदानका यही पेशा चला आता है मेरे परदादेके समयसे किसीने नौकरी नहीं की।

"सौभाग्यवश कमलाके पिताकी व्यापारमें बहुत उन्नति हुई और दुर्भाग्यवश व्यापार हीसे उनका सर्वनाश हो गया। उनकी मृत्युके कुछ दिन पहले मेरा उनका वैमनस्य दूर हो गया था।"

"जिस समय कमलाकी मृतदेह पोखरेमें पायी गयी थी उस समय उसको पहचाननेके लिये मैं नहीं जा सका था।"

रामपाल बोल उठे—"कमलाकी मृत देह ? आप क्या कहते हैं ? कमला तो अभी जीती है।"

समरसिंहने हँसकर कहा—"यही तो बात है। कमलाकी नहीं, ठीक कमला ही जैसी किसी दूसरी लड़की की मृत्यु अवश्य ही हुई थी। कमलाकी विमाताने उसीको कमलाकी मृत देह कहकर साबित किया था। इससे सब लोग यही जानते हैं कि कमलाकी मृत्यु हो गयी है।"

# बारहवां परिच्छेद ।

## पहिलेकी बातें ।

रामपालसिंहने पूछा—"फिर कमलाको आपने कैसे पाया और कैसे आपको मालूम हुआ कि यह कमला वही कमला है ?"

समरसिंहने बूढ़े मँगरूकी ओर इशारा करके कहा—"कमलाका जब जन्म हुआ था तब मँगरू मेरे भाई साहबके यहाँ नौकर था। जबतक मेरे भाई साहब जीते थे, मँगरू कमलाका पालन पोषण करता रहा। उनकी मृत्युके बाद यह मेरे यहाँ आकर रहने लगा। कमलाके मुखपर कई एक उसे चिह्न थे, जिन्हें मँगरू जानता था। उन्हीं चिह्नोंको देखकर मँगरूने कमलाको पहचान लिया था।

रामपाल—किस अभिप्रायसे कमलाकी विमाता उसे मार डालना चाहती थी ?

समर—कमलाको मार डालने ही से वह मेरे भाई साहबकी सम्पत्तिकी मालकिन हो सकती थी। नाम मात्रका एक पोष्य पुत्र लेकर वह स्वच्छन्दता पूर्वक ऐश्वर्य्य भोग कर सकती थी।

रामपाल—क्यों ? उसकी विमाताको जो मासिक वृत्ति मिलनेकी बात है, उससे तो वह सुखसे अपना जीवन बिता सकती है।

समर—ऐसा होनेसे क्या हुआ ? लालच बुरी वला है। इसके सिवा इसमें एक दूसरे आदमीका भी हाथ है। उसीके षड़यन्त्रसे ये सब गुल खिले हैं। कमलाकी विमाताका चरित्र अच्छा नहीं है। जगतसिंह नामक एक मनुष्यसे वह फँसी हुई है। उसीकी सलाहसे वह सारी कार्रवाई कर रही है। इस समय वह बदमाश ही सर्वेसर्वा हो रहा है। धन-सम्पत्ति सब इस समय उसीके हाथमें हैं। पहले वह मेरे भाई साहबके स्टेटका मैनेजर था। उनके जीवन-कालमें ही कमलाकी विमातासे उसका गुप्त प्रेम हुआ था। परन्तु उस समय यह वात किसीको मालूम नहीं हुई थी। इस समय वह नाम मात्रका मैनेजर है, वास्तवमें वही मालिक हैं।

रामपाल—आपको ये सब वातें कैसे मालूम हुईं ?

समर०—धीरज धरो, एक एक करके सब कहता हूं।

रामपाल—अच्छा, कहिये।

समर०—मेरे भाई साहबकी मृत्युके कुछ ही दिन वाद इन लोगोंने कमलाको चुराकर कहीं भेज दिया। मँगरू इसी समय छुट्टी लेकर घर गया था।

दो वर्षके वाद जब मंगरू घरसे लौट रहा था, तो इलाहाबादके निकट एक गाँवमें उसने कमलाको देखा। देखते ही पहचान गया। कमलाकी मृत्युकी खबर उसे पहले ही मिली थी। वहाँ कमलाको देखकर उसे बड़ा कौतूहल हुआ। जहाँ कमलाको उसने देखा था, उस मकानका मालिक जनार्दन

ओझा था। मँगरूने उनसे भेंट कर कमलाके बारेमें पूछा। कमला वहाँ जिसकी लड़की कहलाती थी, वह एक ब्राह्मण थे। उन्होंने कहा—बहुत दिन हुए राजपूतानेका एक राजपूत इस लड़कीको लेकर सन्ध्याके समय मेरे पास आया और रातमें टिकनेके लिये मुझसे आश्रय माँगने लगा। एक भले मानसको विपद्में देखकर, मैंने तुरत अपनी एक कोठरी उसके लिये छोड़ दी। खास करके लड़कीको देखकर मुझे बड़ी दया आयी थी। भोजन पान करके राजपूत मुसाफिर रातको लड़कीको लेकर कोठरीमें सोने गया। मैं भी अपनी कोठरीमें सोने चला गया। दूसरे दिन खूब तड़के ही मेरे एक नौकरने मुझे जगाकर कहा—"पण्डितजी, वह लड़की कोठरीमें पड़ी रो रही है और उस आदमीका कहीं पता ही नहीं।" मैं झटपटमें उठकर बाहर आया और उस मुसाफिरको खोजनेके लिये चारों ओर आदमी दौड़ाये परन्तु कहीं भी उस आदमीका पता न लगा। मँगरूने ब्राह्मणकी बातें सुनकर कमलाका असली परिचय बताया और लड़कीको अपने साथ ले जानेकी इच्छा प्रकट की। बहुत दिन तक पालन पोषण करनेके कारण उस ब्राह्मणकी कमलाके प्रति एक प्रकारकी ममता हो गयी थी। इसलिये वह जल्दी उसको छोड़नेको राजी नहीं होता था। मँगरूने मेरे पास पत्र भेजा तब मैं जाकर उसको लिवा लाया।

रामपाल—कमलाके मिलनेपर आपने अदालतमें नालिश क्यों नहीं की ?

समरसिंह—वर्षोंतक मुकद्मा लड़ा, पर अन्तमें मैं हार गया।

रामपाल—आप यथेष्ट प्रमाण नहीं पेश कर सके थे क्या?

समर—नहीं। कमलाकी विमाताने इजहार दिया था कि मैंने इस लड़कीको कभी नहीं देखा है। उसकी बहन यानी कमलाकी चचेरी मौसी, जिसके यहां छलसे वह भेजी गयी थी, उसने भी इज़हार दिया कि मैंने भी इस लड़कीको कभी नहीं देखा है। जिस मछुएने कमलाकी लाश (जाली कमला) पोखरेसे निकाली थी, उसने भी हलफ़ लेकर कहा कि मैंने मरी हुई कमलाको तालाबसे, निकाला था। इसके सिवा घूसके जोरसे दो चार पड़ोसियोंने भी झूठी गवाही दी थी। इन सब कारणोंसे मैं असली कमलाके अस्तित्वको साबित न कर सका। इस मुकद्दमेमें हार जानेसे मेरी जो कुछ बची खुची जायदाद थी, वह भी जाती रही। बड़े दुःख कष्टके साथ कमलाका भरण पोषण करता आ रहा हूं। यदि भगवान कृपा करेंगे तो कमला एक दिन सुखी होगी। इस समय मेरी एक मात्र यही अभिलाषा है, कि मैं कमलाको सुखी देख जाता।

# तेरहवां परिच्छेद ।

## आशा ।

मपालने कहा—अब आपको कौनसे ऐसे प्रमाण मिले हैं, जिनसे आप कमलाका सत्व प्रमाणित करनेकी आशा कर रहे हैं।

समर०—कागजपत्रोंके सिवा इस समय मुझे तीन प्रमाण ऐसे मिल गये हैं, जिनकी सहायतासे मैं उसकी सम्पत्तिका उद्धार कर सकता हूं!

रामपाल—कहिये, वे क्या हैं ?

समर—मेरा पहला और प्रधान प्रमाण यह मँगरू है। बचपनमें इसने कमलाको पाला पोसा था। इसलिये अदालत इसकी गवाही पर विश्वास करेगी।

रामपाल—विश्वास न भी कर सकती है। बचपनमें उसने लड़कीको देखा था, इसलिये बड़ी होनेपर भी वह उसको पहचान सकता है, ऐसी कोई बात नहीं हैं।

समर—दूसरा प्रमाण मुखसे न बताकर हाथोंसे आंखोंके सामने रखता हूं। देखो, तो यह किसका चित्र है ?

समरसिंहने हाथी दाँतके ऊपर खुदी हुई बहुत ही पुरानी तसवीरको रामपालके हाथमें देकर कहा—"कहो तो सही, यह किसका चित्र है ?

रामपालसिंह देखते ही पहचान गये। उन्होंने तुरन्त कहा, यह तो कमलाका ही चित्र है।

समर—अच्छी तरह देख लो।

रामपाल—अच्छी तरह ही देखता हूं। यह जरूर ही कमलाका चित्र है।

समर०—कमलाने इस चित्रको कभी देखा ही नहीं।

रामपाल—आप क्या कहते हैं? तब यह चित्र है किसका?

समर०—तुम अभी पूछते थे कि मैंने कमलाको कैसे पहचाना। इसी चित्रसे तुम इस प्रश्नका उत्तर पावोगे। यह चित्र कमलाकी माँ अर्थात्—मेरी पहली "भावज" का है। इस चित्रको देखकर यदि कमलाका भ्रम होता है तो असली कमलाको पहचानना कौनसी बड़ी बात है?

रामपाल०—अदालत इस तर्कको कहांतक मानेगी सो मैं नहीं कह सकता।

समर०—अच्छा, यदि यह प्रमाण भी विश्वसनीय न हो तो मैं एक और प्रमाण भी उपस्थित करता हूं। उससे शायद मेरी जीत हो जायगी। जो राजपूत कमलाको जनार्दन ओझाके यहाँ रातको छोड़ आया था, वह मिला है। वह स्वीकार करता है, कि अर्थ लोभके कारण वह ऐसा करनेको वाध्य हुआ था। जगतसिंहने इस कामपर उसको नियुक्त किया था।

रामपाल०—वह आदमी आजकल क्या करता है?



समर०—कुछ भी नहीं, वह बड़ा ही दरिद्र है। रुपयेको

लालचसे ही उसने यह निष्ठुर काम किया था। वह आजकल दाने दानेको तरस रहा है। पीछे उसको आत्मग्लानि हुई है। इससे अदालतमें वह मेरी ओरसे गवाही देनेको तैयार है।

राम०—उसकी गवाहीसे कुछ लाभ नहीं होगा। परन्तु हां, उसके सहारे मुकद्दमा खड़ा किया जा सकता है।

समर०—क्यों? यदि वह आदमी अपना दोष स्वीकार करे और जिसने उसको नियुक्त किया था, उस आदमीको यदि वह पहचान ले, तो उसकी बात क्यों नहीं मानी जायगी।

रामपाल०—नहीं, यों भी कोई लाभ न होना। क्योंकि कमला अब बड़ी हुई है। वह आदमी शपथ करके कह नहीं सकता कि यह कमला वही बालिका है, जिसको उसने इलाहाबादके पास छोड़ा था।

समरसिंहके सभी उत्साह और साहस जाते रहे! उन्होंने हताश होकर दुःखके साथ कहा—"तब क्या कमलाकी खोयी सम्पत्तिके पुनरुद्धारकी आशा नहीं है। अभागिनी क्या अपनी प्राप्य सम्पत्ति नहीं पा सकती है?"

रामपाल०—अभी एक बारगी निराश हो जानेका कोई कारण नहीं है। दूसरे उपायोंसे उसकी सम्पत्तिका उद्धार भी कोई असम्भव बात नहीं है।

समर०—क्या कोई दूसरा उपाय है। जिससे कमला अपनी सम्पत्ति लौटा सके। मेरी समझमें तो यही तीनों प्रमाण सबसे जबर्दस्त हैं।

रामपाल०—जबतक कोई दूसरा प्रमाण नहीं मिलता, तब तक इन्हींसे काम लेना चाहिये। अदालतमें यद्यपि इन प्रमाणोंसे कोई लाभ न होगा, परन्तु मैं इन्हींके सहारे बहुत कुछ कर सकता हूं। आप मेरी बातपर भरोसा रखिये। मैं अवश्य ही कमलाकी सम्पत्तिका उद्धार करूंगा।

समर०—किस प्रकार।

रामपाल०—सो मैं अभी आपको बताना नहीं चाहता। मेरे पास अनेकों उपाय हैं। जैसा आदमी देखता हूं, मैं उसके साथ वैसा ही व्यवहार करता हूं। काम बनानेके पहले मैं अपना सङ्कल्प किसीको भी नहीं बताता।

समर०—कबसे तुम इस काममें हाथ दोगे।

रामपाल०—भीमसिंहको कैद करके, मैं इस काममें हाथ लगाऊंगा।

समर०—कबतक तुम भीमसिंहसे छुट्टी पा जाओगे।

रामपाल०—सिर्फ चौबीस घण्टेके भीतर।

समर०—भीमसिंहके समान दुर्दान्त डाकूको चौबीस घण्टेके भीतर गिरफ्तार करना क्या सम्भव है? कौन जाने यदि तुम्हीं विपदमें पड़जाओ। मैं तुम्हें सलाह देता हूं कि धीरजसे काम लो। अभी एक बार ही उसके दलपर छापा मारनेसे तुम विपदमें पड़ जाओगे!

रामपाल०—भीम जैसे डाकूके हाथसे मरनेके लिये मेरा जन्म नहीं हुआ है। चाहे मैं कितना ही तुच्छ क्यों न होऊं

भीमको मैं अपना प्रतिद्वन्दी नहीं गिनता। मुझे मारनेके लिये उसकी अपेक्षा बुद्धिमान, उसकी अपेक्षा वीर और उसकी अपेक्षा साहसी मनुष्यकी जरूरत है।"

अब बातें खतम कर रामपालसिंहने बिदाई ली और घोड़ेपर चढ़कर पर्वतकी ओर अग्रसर हुए। वे भीमसिंहको पकड़नेके लिये आज दो महीनेसे रात दिन तैयारी कर रहे हैं। उनकी इच्छा है कि आज ही रातमें भीमको सदलबल गिरफ्तार कर लें। इस मतलबसे उन्होंने पहलेसे ही पुलीसको डाकुओंके वेशमें समस्त पर्वतमालापर तैनात कर दिया है। भीमसिंहके दलमें इस समय आधेसे अधिक पुलीसके लोग हैं--देखें परिणाम क्या होता है।
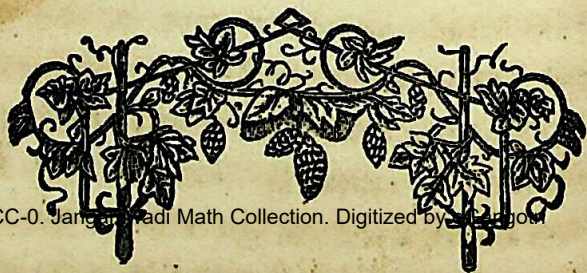
# चौदहवां परिच्छेद.

---*---
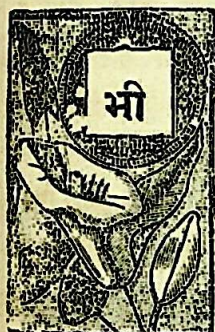
## कमलाको चिन्ता।

मसिंहने जासूस रामपालके भयसे भाग कर पहाड़की तराईमें आश्रय लिया। राजेश्वरी उपत्यका "भूतोंका कोट" समझा जाता था। आसपासकी अशिक्षित और नीच जातियां उस घाटीमें जानेसे सदा डरा करती थीं। यह प्रदेश जङ्गल झाड़ियोंसे भरा हुआ था। इससे कोई भी इसमें जानेका साहस नहीं करता था। इस घाटीमें जानेके लिये सिर्फ एक रास्ता था। घुसने और निकलनेके लिये उसके सिवा कोई दूसरा रास्ता न था। डाकू सिर्फ उसी रास्तेको जानते थे और सर्व-साधारणको भी वही रास्ता मालूम था। पहाड़ी जातियोंमें दो एक अस्सी सौ बरसके वृढ़ोंसे प्रायः सुना जाता था कि पहले राजेश्वरी पर्वत मालामें प्रवेश करनेका एक और भी रास्ता था, परन्तु आजकल जङ्गल झाड़ियोंसे वह एक बारगी बन्द हो गया है, उसका अब चिन्ह भी खोजनेसे नहीं मिलता। रामपाल किसी बूढ़ेसे यह बात सुनकर उस रास्तेको ढूंढ़ निकालनेकी चेष्टा करने लगे। बड़ी खोज-पूछके बाद वह पथ आविष्कृत हुआ और कुली मजदूरोंसे उस पथकी जङ्गली झाड़ियां साफ की गयीं।

उस प्रदेशके सब लोगोंको यह दृढ़ विश्वास था कि राजेश्वरी पर्वत मालामें भूत प्रेतोंका निवास है। परन्तु रामपालसिंह समझ गये थे कि ये भूत प्रेत और कोई नहीं, डाकू ही हैं। वही भूत बनकर पहाड़ीमें स्वच्छन्द विचरण कर रहे हैं। उन्हींके अत्याचारोंसे सारा देश जर्जरित हो रहा है; इसीलिये सभी कहते हैं कि "राजेश्वरी माला दैत्योंका दुर्ग है।"

ऐसा कोई पाप नहीं, जिससे भीमसिंह अभ्यस्त न हो। राजेश्वरी पर्वत मालाकी अपनी राजधानीमें बैठा बैठा वह जाल, जुआचोरी, व्यभिचार, अनाचार आदि शैतानोंकी सभी शैतानियाँ और पाप कर रहा है। एक विशेषता उसमें और है। सर्व-साधारणकी और समाजके गुप्त शैतानोंको भी वह अर्थ लोभके कारण सहायता किया करता है। घृणितसे घृणित कार्य्यमें भी यदि कोई उसको नियुक्त करता है, तो उसकी मरी हुई आत्मा तनिक भी नहीं हिचकती है। वह तुरंत उसे पूरा करनेके लिये तैयार हो जाता है।

उपरोक्त उपत्यकामें पहुंच कर पहले डाकुओंने तीन तम्बू खड़ेकर दिये। सब प्रबन्ध ठीक ठाक करके, करीब तीन बजे समय, भीमसिंह कमलाकी रावटीमें गया। पहला सा छोड़नेके बाद इन दोनोंकी अब भेंट हुई है।

कमला इस समय बिल्कुल असहाय, अनाथ और निरु लक्ष है। भीमको रावटीमें देखते ही भयसे उसका हृदय कांप उठा। इस समय रामपालकी आशा भरी बातोंपर उसका वि

भी विश्वास नहीं है। और विश्वास होता भी कैसे? जिसने रक्षाका वचन दिया था, आज उसे वह अपनी आँखों मृत्युके मुखमें देख आयी है। ऐसा कोई भी चिह्न दिखलायी नहीं पड़ता, जिससे वह आशा कर सके, कि मोतीसिंह अभी जीवित हैं। क्या सचमुच उसके हितैषी मोतीसिंह डाकुओंके हाथों मारे गये हैं? इस विचारके उठते ही, फिर उसका हृदय काँप उठा?

भीम इस समय बड़ा ही आनन्दित और उत्साहित हो रहा था। उसकी हँसी और उल्लासका कोई ठिकाना ही नहीं था। वह कड़ी आवाज, वे कठोर बातें और वह भयङ्कर चितवन, इस समय एकदम नहीं दिखलायी पड़ती थी। इसीलिये निर्विघ्न निश्चिन्त मनसे भीमसिंहने कहा—कमला, इतना रास्ता पैदल चलनेके कारण तुम्हें बहुत तकलीफ हुई है न?

कमला क्रोधसे आँखें लाल कर काँपती हुई बोली—"खूनी! पापी! तू मेरे सामनेसे दूर हो?"

भीम०—मैं खूनी कैसे हूँ, कमला!

कमला—तू खूनी नहीं तो क्या है?

भीम०—किसका खून करते हुए तुमने मुझे देखा है?

कमला—मोतीसिंहका।

भीम०—उसमें मेरा क्या दोष है? मेरे दलमें किसीसे उसकी पटती नहीं थी। सबसे वह वैर रखता था। शायद किसीसे उसका झगड़ा हुआ है, और क्रोधको न सम्हाल सकनेके कारण उसने मोतीको मार डाला है।

कमला—शैतान! तू इन झूठी बातोंसे मुझे भुलाने चला है? क्या मैंने तुम दोनों शैतानोंका षड़यन्त्र नहीं सुना है। तेरे ही नियुक्त किये हुए लोगोंने ही तो उसका वध किया है।

भीम अब अधिक न सह सका। सिरसे चोटीतक, उसके सारे शरीरका खून खौल उठा। क्रोधसे कड़क कर उसने कहा—"सुनो कमला, तुम्हारे अनेकों दुर्वचन मैंने सहन किये हैं, किन्तु अब मैं नहीं सहन कर सकता। आज रातको ही मैं तुम्हें अपना उपभोग्य बनाऊँगा। आज ही तुम्हारे और मेरे बीचका सब झगड़ा, तकरार और मनमुटाव दूर हो जायगा। आज मैं तुमसे आन्तरिक घृणाका बदला लूँगा!"

कमला शिहर उठी। उसकी प्रत्येक शिराओंमें मानों काँटे चुभने लगे। भीषण मृत्युकी छाया उसकी आँखोंके सामने साफ नाचने लगी। भीमसिंहके धीर, गम्भीर और दृढ़ वचनको सुनकर अब उसे कोई आशा न रह गयी। मरनेके सिवा अब सतीत्व रक्षाका कोई दूसरा उपाय न रह गया।

कमलाने कहा—"भीमसिंह, तुम्हें भी एक दिन मरना होगा। इस बातकी क्या तुम्हें कभी चिन्ता नहीं होती?"

भीम०—नहीं।

कमला—क्या तुम अमर होकर आये हो? तुम मृत्युकी पहुंचसे बाहर हो?

भीम०—हाँ, मैं मृत्युको नहीं डरता। मृत्युको वे ही डरते हैं, जो कापुरुष और कादर हैं। जब मृत्युसे छुटकारा ही

नहीं मिल सकता, तो इससे डरनेकी क्या जरूरत है ? इसलिये जबतक मैं जीता हूं, मैं महादेवकी तरह अमर होकर जीता रहूंगा।

कमला—अच्छा, सो तो हुआ। क्या मैं पूछ सकती हूं कि क्यों तुम रात दिन मेरे पीछे लगे हुए हो और मेरा सर्वनाश करनेकी चेष्टा कर रहे हो ?

भीम०—मैं तुमको प्यार करता हूं।

कमला—क्या प्यार इसीको कहते हैं ? कैद रखना और असहाय पाकर बदला लेनेकी चेष्टा करना, क्या यही प्रेमके लक्षण हैं ?

भीम०—मैं तुम्हें प्यार करता हूं या नहीं, इसको मैं साबित करनेके लिये तैयार नहीं हूं। जो मैं कहता हूं, उसे ध्यान देकर सुनो।

कमला०—मैं तुम्हारा एक शब्द भी नहीं सुनना चाहती। मुझे मेरे घर भेज दो, मेरे बूढ़े पिता मृत्यु-शय्यापर पड़े हैं, मुझे उनके पास जाने दो।

भीम०—मैं तुमसे शास्त्रानुसार व्याह करके अपने प्रेमका परिचय देना चाहता हूं। आज शामको ही तुमसे मेरा विवाह होगा।

कमलाने भीमसिंहकी ओर आश्चर्यसे देखते हुए एक आह भर कर कहा—"कभी नहीं, कभी नहीं।"



भीम०—और मैं कहता हूं जरूर—जरूर। आज रात हीको

तुम मुझे पति रूपमें स्वीकार करोगी। पृथ्वी यदि हिल जाय और सूर्य्य यदि टूट कर गिर पड़े तो भी मेरी बात सच्ची होगी।

कमला—तब तक तुम मुझे जीती पावोगे तब तो। तुम्हारे हाथसे बचनेका यदि और कोई उपाय न मिलेगा तो मैं आत्म-हत्या कर डालूँगी।

भीम०—मैं अभी तुम्हारे ऊपर पहरा तैनात करता हूँ, जिससे तुम आत्महत्या न कर सको और विवाह हो जानेके बाद मैं तुम्हारा सब भार अपने ऊपर ले लूँगा। तब देखूंगा कि तुम कैसे कहनेमें न रहती हो?

कमला—भीमसिंह, मैं अब भी कहती हूं, तुम्हारी यह पाप लिप्सा कभी पूरी न होगी। भगवान जरूर मेरी रक्षा करेंगे।

भीम०—मैं तुम्हारे भगवानपर अधिक विश्वास नहीं करता। मनुष्यकी तो कोई बात ही नहीं। यदि तुम्हारे भगवान स्वयं आकर तुम्हारी रक्षा करनेकी चेष्टा करें तो भी मैं अपना सङ्कल्प सिद्ध करूँगा। तुम जानती नहीं हो, कि मेरी शक्ति कितनी है। इस प्रान्तका मैं ही राजा हूं। तुम जानती नहीं कि कितने मनुष्य मेरी अंगुलीके इशारेपर उठने बैठनेके लिये तैयार रहते हैं।

कमला—परन्तु याद रखो, मेरे भगवानकी शक्तिके सामने तुम तुच्छ जीव हो। जानते नहीं, हिरण्यकशिपुने प्रह्लादसे ये ही शब्द कहे थे। उसका परिणाम क्या हुआ सो भी तुमसे छिपा नहीं है।

भीम०—कमला ! जिसके बलपर तुम इतनी बढ़ बढ़कर बातें कर रही हो वह मोतीसिंह अब तुम्हारी सहायता करने नहीं आ सकता। इतनी देरमें वह यमराजके दरवाजे पर पहुंच गया होगा और उसके साथ ही साथ तुम्हारी सब आशाएँ भी निर्मूल हो गयी हैं।

वास्तवमें, कमलाके चारों ओर इस समय अन्धेरा छा रहा है। निस्सहाय अबला बालाकी सहायता कर सके या ढाढ़स दे सके, ऐसा कोई भी मनुष्य उसे दिखलायी नहीं पड़ता था। कराल काल मानों चारों ओरसे उसे निगलनेके लिये दौड़ा आ रहा था! ऐसी अवस्थामें वह किसकी आशापर जीवन धारण कर सकती है? कौन उसको इस विपद्-सागरसे निकाल सकता है? कौन महापुरुष इस भयानक पापाचारी नारकी राक्षससे इस अनाथा, कातरा बालाका उद्धार कर सकेगा? भीमका चेहरा देखकर और उसकी बातें सुनकर यही बात कमलाके मनमें उठ रही है। ऐसी विपदके समय भी कमलाकी प्रतिज्ञा अचल अटल है। कमलाने मन ही मन फिर प्रतिज्ञा की कि जान जाय तो जाय पर मैं डाकूकी स्त्री न होऊंगी!

भीमसिंहने कहा—कमला, समझ बूझकर काम करो। सीधी तरह तुम मेरा कहना मान लो। नहीं तो मैं वाध्य होकर बल प्रयोग करूँगा।

कमलाके उत्तर देनेके पहले ही दूरसे डाकुओंकी वंशीकी आवाज सुन पड़ी। भीमसिंह चञ्चल होकर बोल उठा—"बाहर

कोई मुझे बुलाता है। मैं अच्छी तरह तुम्हें समझा न सका—अब जाता हूं। जहाँतक हो सकेगा, मैं शीघ्र ही लौटूँगा। इसी बीचमें तुम अपना विचार ठीक कर लो। देखो, लौटने पर बल-प्रयोग न करना पड़े।"

बहुत देरतक कमला मन ही मन सोचती रही। जिसकी आशापर उसने साहस बाँधा था, वह मोतीसिंह दुर्दान्त डाकूके षड़यन्त्रसे अकाल ही मृत्युके ग्रास हुए हैं। इस समय कौन उसको भीमके मजबूत हाथोंसे छुड़ा सकता है?

कमला आँचलसे मुख ढक कर रोने लगी। एक वार बूढे पिता, समरसिंहकी दुर्दशाग्रस्त रुग्न अवस्था याद पड़ी। उनकी रोग शय्या और आसन्न मृत्युका चित्र स्पष्ट उसकी आँखोंके समान नाचने लगा। जीवन भरके सुख और दुःखोंकी बातें एक एक करके उसे याद पड़ने लगीं। बचपनकी सारी बातें याद आ गयीं।

भीमसिंहके साथ खेलने कूदने और एक साथ दौड़ धूप करनेकी बात याद आयी। फिर न जाने क्या सोचकर कमला उठ खड़ी हुई। उसने अपनी छातीका कपड़ा हटा दिया और एक तेज छुरी निकाल कर वह आत्महत्या करनेके लिये तैयार हुई। अपने आप ही उसने कहा—"अब जीकर क्या करूँगी! किस आशापर जीवन धारण करूँगी? डाकूकी भार्य्या होनेकी अपेक्षा मरना ही अच्छा है।" इतना कह अपनी छातीके सामने तेज छुरा तानकर उसने जोरसे उसको अपनी मुट्ठीमें पकड़ा।"

इतनेहीमें पीछेसे एक आवाज आयी—"ठहरो, आत्म-हत्या न करो।"

चौंककर कमलाने पीछे देखा। ठीक पीछे, रावटीका पर्दा जरा हटा कर एक आदमी ध्यानसे उसकी ओर देख रहा है?

कमला—आप कौन हैं? आपने क्यों मुझे रोका है?

उस आदमीने बाहरसे गम्भीर आवाजमें कहा—"तुम बहुत ही अधीर प्रकृतिकी लड़की हो। तुम इतना डरती क्यों हो? तुम्हें डरनेकी कोई जरूरत नहीं! कोई तुम्हारा अनिष्ट नहीं कर सकता।"

इतना कह कर वह आदमी अन्तर्द्धान हो गया। स्तम्भित होकर कमला वहीं बैठ गयी।

—❀ पहिला खण्ड समाप्त ❀—

# दूसरा खण्ड ।

## पहिला परिच्छेद ।

### कमलाका सहायक ।

अभागिनी कमला उस विपद्-संकुल अवस्थामें, हिताहित ज्ञान शून्य होकर, बहुत देरतक सोच विचार करती रही, किन्तु कुछ भी निश्चय न कर सकी। जब जब वह निराश और निरुत्साह हुई है, जब जब वह मरनेके लिये तैयार हुई है, तब तब किसी न किसीके प्रबोध और सान्त्वनासे उसे जीवन धारण करना पड़ा है। कमलाने धीमे स्वरमें कहा—"कौन मुझे मरनेमें इस प्रकार बाधा दे रहा है? वे लोग प्रकट क्यों नहीं होते?"

पीछेसे किसीने फिर कहा—"तुम डरती क्यों हो? तुम्हारी रक्षा करनेके लिये चारों ओर आदमी तैनात हैं। तुम्हारा कोई कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता।"



कमलाने पीछे फिर कर देखा। उसी पहलेकी जगहपर

रावटीका पर्दा हटा हुआ है और एक आदमी उसमेंसे झांक रहा है।

कमला बोल उठी—आप चाहे जो हों, आपको मालूम नहीं है, कि मैं कैसी विपद्‌में पड़ी हूं। इस विपत्तिसे मेरा उद्धार करनेवाला कोई नहीं है। मुझे मरने दीजिये। आप अपना काम देखिये।”

उत्तर—मैं तुम्हारा उद्धार कर सकता हूं।

कमला—आप कौन हैं?

उत्तर—मैं तुम्हारा कोई शुभचिन्तक हूं।

कमला—क्या आप मेरी सहायता कर सकेंगे? मुझे इस विपद्‌से निकाल सकते हैं। जानते नहीं, मैं किसकी क्रोध दृष्टिमें पड़ी हूं।

उत्तर—जानता हूं, इसी लिये तुम्हारी रक्षाके लिये आया हूं। भीमसे डरनेकी कोई बात नहीं। तुम निश्चिन्त रहो। तुम अपनी विपद् जितना ही निकट समझती हो, भीमसिंहकी विपद उतनी ही निकटवर्त्तिनी होती जाती है।

कमला—डाकुओंके दलमें एक मात्र मोतीसिंह ही मेरे सहायक थे। जब वह भीमकी चक्कीमें पिस गये हैं तो मैं समझती हूं, कि उन्हींके साथ मेरा भाग्य भी पीसा गया है। अब मेरा उद्धार सम्भव नहीं।

उत्तर—मोतीसिंहके लिये तुम्हें इतनी चिन्ता क्यों है? उनकी जान इतनी सस्ती नहीं है, कि भीम जब चाहेगा कुत्ते

बिल्लीकी तरह उन्हें मार डालेगा। मैं विश्वास दिलाता हूं, मोतीसिंह अभी जीते हैं। वह ठीक समय पर उपस्थित होंगे।

कमला—उनके आनेके पहले ही यदि भीम किसी प्रकारका अत्याचार करे तो कौन रक्षा करेगा ?

उत्तर—उनके सिवा और भी कितने ही आदमी रक्षा करने-को तैयार हैं।

कमला—कहां हैं, मैं तो नहीं देखती हूं।

उत्तर—पीछे देख पाओगी। अब तुम सावधान हो जाओ। भीमसिंह अभी आवेगा। तुम उसके सामने भयका कोई चिह्न न प्रकट करना और भीमसे डरनेका कोई कारण भी नहीं है।

कमला—आपकी बातोंसे आश्चर्य्य होता है। भीमसे डरने-का यदि कोई कारण नहीं है तो किससे है ?

उत्तर—अभी रहने दो। जब भीमसिंहकी शक्तिका तुम्हें परिचय मिल जायगा, तब तुम जानोगी कि मेरी बात कहांतक सच्ची है।

कमला—यदि भीम मुझे अपने साथ ले जाना चाहे तो मैं क्या करूंगी ?

उत्तर—यदि ले जाना चाहे तो जाना, डरना मत। भीम तुम्हारा कुछ भी नुकसान नहीं कर सकता।

कमला—इस बातसे मुझे सन्देह होता है कि अवश्य ही आप मेरे हितैषी नहीं हैं। आप भीमसिंहके अनुकूल हैं। आपकी बातोंका विश्वास क्या ?

उत्तर—नहीं, तुम्हारा सन्देह फजूल है। मैं तुम्हारा हित-चिन्तक हूँ। तुम मेरी बातोंपर विश्वास करो। भीमसिंहसे बढ़कर शक्तिशाली अनेकों मनुष्य उसके दलमें हैं। वे सर्वदा तुम्हारे ऊपर पहरा देते हैं। भीम जो जो कहता है, वह तुम करो। उसका दाना-पानी अब उठ गया समझो। देखो वह आता है।

जैसे ही कमलाने क्षण भरके लिये मुँह फिराया वैसे ही वह आदमी पर्दा छोड़कर हट गया। कमलाने जब फिर उधर मुख फिराया तो उसका कहीं पता ही न था।

दूसरे क्षण खीमेमें आकर भीमसिंहने कहा-"दरवाजा खोलो और मेरे साथ आओ। कमला, हमारे विवाहकी सब तैयारी हो गयी है। सीधेसे चलोगी या जबर्दस्ती ले जाना होगा?"

कमला बोली—"नहीं, चलो चलती हूं। तुम मुझसे अलग रहो, विवाह होनेके पहले मत छूओ।"

# दूसरा परिच्छेद ।

## विवाहोत्सव ।

भीमको बड़ा आश्चर्य्य हुआ। उसने सोचा था कि कमला सहज ही वशमें न आवेगी। वह कितनी ही आरजू-मिन्नत करेगी और कितने ही प्रकारसे रो कलप कर छुटकारेकी प्रार्थना करेगी। प्रस्ताव करते ही कमला चलनेको तैयार हो जायगी, इसकी उसने कल्पना भी नहीं की थी।

भीमने कहा—"इतनी देरके बाद तुम अपनी वास्तविक अवस्था समझ सकी हो, यह खुशीकी बात है।"

कमला—इस समय तुम्हारे हाथमें पड़ी हूं। भाग्यमें जो लिखा होगा, वही होगा।

भीम—कमला, मेरी प्यारी! ऐसी बात न कहो। मैं तुम्हें सचमुच बहुत प्यार करता हूं।

घृणाव्यञ्जक स्वरमें कमलाने उत्तर दिया—"तुम मुझे प्यार करते हो, परन्तु मैं तुम्हें घृणा करती हूं।"

भीम—कमला, व्यर्थ ही तुम मुझे गाली गलौज कर रही हो। मैं सच कहता हूं, मुझसे व्याह करके तुम सुखी होगी। तुमको मालूम हो जायगा, कि मैं तुम्हारा उपयुक्त स्वामी हूं। मैं तुम्हारे योग्य होनेकी चेष्टा करूँगा।

कमला अब अधिक न सह सकी। क्रोध न रोक सकनेके कारण वह जोरसे बोल उठी—"छिः! छिः! तुमसे व्याह करके मैं सुखी होऊँगी, फिर यह बात मुखपर न लाना! तुम्हारे शरीरके रोएं रोएँ पापोंके बोझसे लदे हुए हैं। यदि तुम छुरी छुरा, तलवार बन्दूक और धनुषको फेंककर अत्याचार वृत्तिको त्याग, सात्विक जीवन धारण करो तो सहर्ष तुम्हारी पत्नी होनेको अभी तय्यार हूं। मुझे कोई आपत्ति न रहेगी। क्या तुम प्रेमके प्रतिदानमें इतना नहीं कर सकते? यदि नहीं कर सकते तो तुम्हारा यह प्रेम झूठा है।"

कुछ क्रोधित होकर भीमसिंहने कहा—"पर याद रखना कमला, तुम्हीं मेरे इस कलङ्क और पापकी उत्तरदायिनी हो, सोचो तो सही, क्या पहले भी मैं ऐसा ही निर्दय और निरंकुश था? नहीं, कदापि नहीं। तुम्हारे घृणा पूर्ण प्रत्याख्यानने ही मुझे इस अवस्थाको पहुंचाया है। अब मैं प्रतिशोधके पथपर बहुत दूर तक अग्रसर हो गया हूं। अब पीछे हटना किसी प्रकार सम्भव नहीं। अब मैं अवश्य ही तुमसे व्याह करूँगा और इसी अवस्थामें रहकर करूंगा। कोई भी मुझको वाधा नहीं दे सकता। चलो, अब विवाहमण्डपमें बैठो, अब लग्नमें देर नहीं है, शुभस्य शीघ्रम्।"

कमला चुपचाप उसके पीछे पीछे चली। असीम साहससे उसने अपनी छाती कड़ी कर ली। उसने अपना अन्तिम उपाय भी सोच रखा है। अब उसे कोई डर या चिन्ता नहीं है।

अनेकों वार कमलाने सुना है, डाकुओंके दलमें उसकी रक्षा करनेवाला एक बड़ा जबर्दस्त आदमी है। बार बार निराश होनेपर उसे यही अभय बचन मिला है। इस वार उसने अन्तिम मूहूर्त्ततक उस जबर्दस्त आदमीकी प्रतीक्षा करनेका संकल्प किया है। यदि जबर्दस्तकी सहायतासे उसकी मुक्ति न हो सकी तो, उसने निश्चय कर लिया है कि, मैं तनिक भी विचलित न होऊँगी। डाकूकी भार्य्या रहनेकी अपेक्षा छुरीकी सहायतासे मर जाना अच्छा है।

उस छोटी रावटीसे निकल कर कमला भीमसिंहके पीछे पीछे चलने लगी। कुछ दूरी पर एक बड़े वृक्षके नीचे बहुतसे आदमी इकट्ठे हुए थे। उनके ऊपर कमलाकी दृष्टि पड़ी। विवाहकी सभी आवश्यकीय सामग्रियाँ वहाँ सजाकर रखी हुई थीं। एक पुरोहित भी वहां बैठे हुए थे—सामने मङ्गल कलश रखा हुआ था।

यह दृश्य देखती हुई कमला धीरे धीरे डाकूके पीछे पीछे विवाह मण्डपके पास पहुंच गयी, जैसे ही उसने उपस्थित मंडलीकी ओर एक वार सिर उठा कर देखा, वैसे ही एक भद्र वेषी सज्जनने आँख और मुखसे इशारा किया—"कोई डर नहीं।"

भीमने कमलाका हाथ पकड़ा। असहाय, अबला बालिकाका सारा शरीर कांप उठा। जब वे दोनों पुरोहितजीके पास पहुंचे तब उन्होंने दोनोंको विभिन्न आसन पर बिठा दिया और स्वयं मन्त्र पढ़ने लगे—

सहसा एक आदमी पुरोहितकी ओर अग्रसर होकर बोला-
"खबरदार, यह विवाह कभी नहीं हो सकता।"

आगन्तुकके मुखकी ओर देखते हो भीमसिंहके वदनका खून ठण्डा पड़ गया। क्योंकि इस विवाहमें बाधा देनेके लिये जो साहसी युवक वीर भावसे निडर होकर खड़ा हुआ था, वह और कोई नहीं—वही मोतीसिंह था, जिस मोतीसिंहको भीमने षड़यन्त्र कर मरवा डाला था। वही मोतीसिंह कहाँसे कूदकर चला आया? मोतीकी प्रेतात्मा बदला लेनेके लिये तो नहीं आ पहुंची है? परन्तु मोतीसिंहके दोनों हाथोंमें दो पिस्तौलें देखकर भीमका यह सन्देह दूर हुआ।

पुरोहितजीने उद्दण्ड भावसे कहा—"तू कौन है? इस शुभ-कार्य्यमें तू क्यों विघ्न डाल रहा है?"

पुरोहितजीकी छातीके सामने पिस्तौलका लक्ष्य ठीक कर गर्वके साथ मोतीसिंहने कहा—"मैं चाहे जो होऊँ, इससे तुम्हें कोई जरूरत नहीं। तुम यदि तिलभर आगे बढ़े या चूंतक किया कि मैं तुम्हारी खोपड़ी उड़ा दूँगा।"

भीमसिंह इस समय आहिस्तेसे अपने अंगरखेके भीतरसे पिस्तौल निकालनेकी चेष्टा कर रहा था। इतने हीमें उसने देखा कि उसीके दो कपट वेशी सहकारी डाकू उस पर अपनी पिस्तौलोंका निशाना साधे हुए खड़े हैं। भीमसिंह स्तम्भित हो गया। विस्मित और चकित होकर उसने देखा, कि जिन लोगोंको स्वप्नमें भी शत्रु रूपमें वह कल्पना नहीं कर सका था,

वे ही सब डाकू, मोतीसिंहके खड़े होते ही विरोधी हो गये हैं। सबके हा हाथोंमें एक एक पिस्तौल है। भीमसिंह समझ गया कि अवश्य ही दालमें कुछ काला है। जिसको वह अपना घर समझता था, वह वास्तवमें शत्रुका घर था। इतने दिनोंके बाद भीमका समस्त साहस और उत्साह जाता रहा। उसकी वह तेजस्विता अब क्षण भरमें जाती रही। बिना घोड़ोंका रथ क्या चल सकता है? बिना सेनाके सेनापति क्या शत्रु विजय कर सकता है? बिना साथियोंका भीमसिंह शक्तिहीन और असहाय है तथापि भीमसिंहने एक अन्तिम चेष्टा कर देख लेना चाहा। परन्तु उस चेष्टाके करते ही एक छद्म वेशी सिपाही बोल उठा—"खबरदार! एक डेग भी आगे न बढ़ना।"

भीम उसकी ओर देखकर अवाक् हो गया। यह वही डाकू था, जिसपर उसने मोतीसिंहकी हत्याका भार सौंपा था। पिस्तौल हाथमें लिये उसे खड़े देखकर ही वह समझ गया कि मोतीसिंह मरा नहीं है, यही वह मोतीसिंह है।

मोतीसिंहने कहा—भीमसिंह! सर्दार! अब व्यर्थ चेष्टा क्यों करते हो? अब तुम्हारे दिन गये। अब मेरे दिन आये। अब चुपकेसे जेलमें बैठकर तुम अपने पापोंकी माला जपो। लो, यह गहने पहनो।

देखते न देखते चालीस पचास मनुष्योंकी एक सशस्त्र पल्टन वहाँ आ पहुंची। निराश होकर लड़खड़ाती हुई आवाजमें भीमने कहा—"इसका क्या माने। तुम सबोंने मिल

कर मेरे विरुद्ध षड़यन्त्र रचा है। क्या तुम सभी मेरे शत्रु हो?"

मोतीसिंहने भीमके कातर प्रश्नपर ध्यान न देकर कहा—"जो जरा भी हिलेगा, उसकी जान जायगी। आत्म समर्पण करनेमें ही अब सबकी कुशल है। खबरदार! सावधान! जिसके पास जो कुछ अस्त्र-शस्त्र हो वह धीरेसे रख दो। मेरे सामने सब कतारमें खड़े हो जाओ।"

मोतीसिंहके इशारेसे सिपाहियोंने एक एक कर सबके हाथमें हथकड़ी पहना दी।

भीम अन्तिम साहस कर बोल उठा—"बिना हाथ पैर हिलाये, बिना जोर आजमाये, हम सबके सब भेड़की तरह अपनेको बँधवा देंगे—कभी नहीं। हम लोग युद्ध करेंगे।"

मोती०—सबकी चिन्ता तुम्हें क्या लगी है? तुम अपनी ही बात सोचो। तुम्हारी इच्छा हो तो ज़ोर आज़मा लो।

बिना बाधा विघ्नके सभी पकड़े गये। सबके ही हाथोंमें हथकड़ी बेड़ी पड़ी। किसीको भी चूंतक करनेका साहस न हुआ। अन्तमें मोतीसिंह भीमके सामने अग्रसर होकर बोले—"भीमसिंह, तुम बहुत दिनोंसे मुझे खोजते खोजते हार गये। तब भी तुम मुझे नहीं पा सके हो। लो, आज मैं स्वयं तुम्हारे सामने खड़ा हूं। तुम्हारी जो इच्छा हो करो।"

भीमसिंहने विस्मित होकर पूछा—"तुम कौन हो?"

मोती०—जासूस रामपाल या राजा रामपालसिंह—जिस नामसे तुम खुश होओ।

रामपालका नाम सुनते ही सभी स्तम्भित और विस्मित हो गये।

रामपालसिंहने अनेकों वार, अनेकों ऐसे रहस्यपूर्ण काम किये हैं और आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त की है। इसी कारणसे वह एक ओर जिस तरह सर्व-साधारण और सरकारके दरबारमें श्रद्धा और सम्मानके पात्र समझे जाते हैं, वैसे ही दूसरी ओर दुराचारी दुरात्मा उनका नाम सुनते एक स्वाभाविक आतंकसे काँप उठते हैं। अपनी अद्भुत कार्य्य-दक्षताके कारण वह सरकारके भी बड़े कृपा-भाजन हो गये हैं। आज उन्होंने जो काम पूरा किया है, वह दूसरेकी कल्पनासे भी परे है। एक नहीं, दो नहीं, दलके दल डाकुओंको, बिना रक्तपातके एक तर्जनीके इशारेसे कैद कर लेना, कोई हँसी खेलकी बात नहीं है। तिस पर ऐसे तैसे डाकुओंको नहीं। उन डाकुओंको जिनका आतङ्क समस्त देशपर छाया हुआ था, जो नगरके नगर, गाँवके गाँवका रातों रात अस्तित्व मिटा देते थे। जो मरने मारनेको कोई चीज ही नहीं समझते थे। ऐसे डाकुओंको काठकी पुतलीकी तरह नचाना रामपालका ही काम है।

# तीसरा परिच्छेद।

——:*:——

## बाघकी मांद।
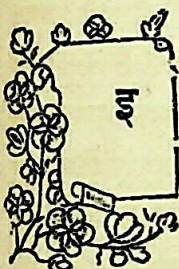
इतनी देरके बाद दो एक आवश्यक घटनाओंका उल्लेख कर देना आवश्यक हो गया है। जासूस रामपालसिंह आज दो वर्षोंसे डाकू भीम-सिंहके दलको पकड़नेकी चेष्टा कर रहे थे। उनके पहले अनेक राजकर्मचारी इस दलको पकड़नेके लिये नियुक्त होकर आये, पर कोई भी लौट कर समाचार देने नहीं गया। सबको पर्वतकी तराईमें ही चिर विश्राम लेना पड़ा था।

भीमसिंहके दलमें कोई तीन चार हजार डाकू थे। उन सबोंका सरदार या मुखिया भीमसिंह ही था। भीमसिंहका दल तरह तरहके पेशोंको अख्तियार किये हुए था। कभी वह एक समय, एक स्थानपर, एकत्र होकर नहीं रहते थे। सभी अपना अपना काम लेकर भारतके भिन्न भिन्न स्थानोंमें विचरण किया करते थे। एकदल दूसरेको जहांतक सहायता दे सकता था, वक्त पड़नेपर दिया करता था।

इसके सिवा विभिन्न दलोंमें कोई सम्हाल नहीं रहती। एक दलका आदमी दूसरे दलमें आ जा सकता था परन्तु ऐसा करते समय उसे अपने दलका संकेत बताना पड़ता था।

रामपालसिंहने इन दो वर्षों में डाकुओंको पकड़नेके लिये अनेकों प्रयत्न किये। नाना प्रकारसे, इन छोटे छोटे दलोंको, विभिन्न अपराधोंमें अभियुक्त कर उन्होंने अधिकांश डाकुओंको न्यायालयमें उपस्थित किया पर अभी किसीका फैसला नहीं हुआ। उनके सरदारकी गिरफ्तारीतक उन सबके मुकद्दमें मुलतवी रखे गये हैं। भीमसिंह जानता था, कि उसके दल समस्त भारतवर्षमें फैले हुए हैं। आवश्यकता पड़नेपर वे सहायता करनेको आ पहुंचेंगे। उसे क्या मालूम, कि प्रति दिन उसके अनुचरोंसे सरकारी जेल भरे जा रहे हैं। जिस किसी दलको वह किसी कामपर भेजता था, वही दल गायब हो जाता था। वह समझता था, काममें विलम्ब हो गया होगा, इसीसे वे लोग नहीं आते हैं अथवा किसी दूर देशका धावा मारनेके लिये वे चले गये हैं। इसमें भी रामपालकी चतुरायी थी। वह मोतीसिंहके वेशमें उसके दलमें मिले हुए थे! कोई सच्ची खबर भीमसिंहके पास पहुंचने नहीं देते थे। इस प्रकार वह भीतर ही भीतर डाकुओंके दलको जड़से खोद निकालनेकी चेष्टा कर रहे थे परन्तु भीमकी आँख किसी तरह भी नहीं खुली। जब खुली, तब अवसर बीत गया था।

पहले परिच्छेदमें यह कहा गया है, कि रामपालका नाम सुनते ही डाकू चकित और स्तम्भित हो गये थे और उनके सारे शरीरमें रोमाञ्च हो आया था। उस एक ही आदमीका नाम सुनकर भयङ्कर डाकुओंका गर्म खून ठण्डा पड़ गया था।

सरदार भीमसिंहकी भी घिग्घी बँध गयी थी। बहुत चेष्टा करके उसने अस्फुट स्वरमें कहा—"हा! सब जानता हुआ भी मैं अज्ञान बना हुआ था।"

कमला आश्चर्य्यके साथ यह नाटकीय रहस्य देख रही थी। चारों ओर इतने आदमी, हथियार बन्द पुलीस, पल्टन और हथकड़ी बन्द डाकू खड़े हुए हैं, परन्तु उन सब पर उसकी दृष्टि नहीं है। वह निर्निमेष नेत्रोंसे केवल विजयी वीर रामपालके विशाल शरीरकी ओर देख रही है। महासमरमें विजय प्राप्त किये हुए सेनापतिकी तरह वह आनन्दित और उल्लसित दीख पड़ते हैं। साथ ही उत्तेजना सूचक चञ्चलता भी आँखोंसे साफ झलकती है।

रामपालसिंहने कहा—"भीमसिंह, जानते हो तुम्हारे भाग्यमें क्या लिखा है? यावज्जीवन कारावास! इससे कम तुम्हारा कोई दण्ड हो ही नहीं सकता।"

भीमसिंह पींजड़ेमें बँधे हुए सिंहकी तरह गरज कर बोल उठा—"जासूस रामपाल! मैं अधिक क्या कहूं, मैंने बड़ी भूल की है। नहीं तो तुम्हारे जैसे छोकड़ेकी सामथ्यं नहीं थी, कि इस तरह आँखें तरेर कर खड़ा होता। तुम इस कपट व्यवहारका फल जरूर पाओगे। कभी न कभी मैं इसका बदला जरूर लूँगा।

रामपालने हँसकर कहा—"अच्छा, जब कालेपानीसे छूटकर आवोगे तब न? उस समय मैं तुम्हें सहायताके लिये नहीं बुलाने जाऊंगा। देखो, तुम्हारे प्रति तो किसी प्रकारकी भी

दया नहीं करनी चाहिये ; परन्तु मैं करनेको तैयार हूं, क्या तुम मेरे अनुग्रहसे लाभ उठाना चाहते हो ?"

भीम०—इतनी ही दया करो, कि अपनी दया अपने पास रखो। मैं निर्बल नहीं हूं। मैं तुम्हारी दया-भिक्षा नहीं चाहता। यदि मैं अपनी शक्तिसे नहीं छूट सकता हूं तो तुम्हारी दयासे लाभ उठा कर छूटना और न छूटना समान है। दया कर इतना और क्यों ? आज तुम्हारे दिन आये हैं, तुम्हारी जो इच्छा हो कर लो। जब मेरे दिन आयेंगे तो मैं देख लूँगा।

रामपालने इस बातपर ध्यान न देकर कुछ गम्भीरताके साथ कहा—"मैं तुमपर अनुग्रह कर सकता हूं। इस वार मैं तुम्हें छोड़ सकता हूं। क्या तुम्हें याद है, उस दिन वृक्षके नीचे, जमीनमें अपना छुरा गाड़कर, तुमने क्या प्रतिज्ञा की थी ? मैं आज यही देखना चाहता हूं कि वह तुम्हारी निरी आत्मश्लाघा थी या उसके अनुसार तुम कुछ करके भी दिखा सकते हो ! देखो आज, जासूस रामपाल जीता जागता तुम्हारे सामने खड़ा है। तुम अपना छुरा उसकी छातीमें भोंककर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करो। क्यों ? साहस नहीं होता ? वीर होकर प्रतिज्ञाको भूलते क्यों हो ?"

भीमसिंह—अच्छा, तो तुम मुझसे क्या चाहते हो ?

रामपाल०—मैं तुम्हारा उपकार करना चाहता हूं।

भीम०—कैसा उपकार ?



रामपाल०—मैं तुम्हें भागनेका रास्ता देता हूं।

भीम०—क्या तुम मुझे इतना मूर्ख समझते हो कि मैं तुम्हारी बातोंपर विश्वास कर लूँ ?

रामपाल०—सचमुच मैं तुम्हें छोड़ सकता हूं, परन्तु एक शर्त पर, मल्लयुद्धमें मुझे हराकर तुम खुशीसे जा सकते हो ?

भीम—और मैं तुम्हारा खून कर फाँसीपर चढ़ूं। इससे मुझे लाभ ?

रामपाल०—अच्छा ! मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ, तुम्हारा कुछ भीं न होगा। मेरे खूनके लिये तुम उत्तरदायी नहीं हो।

भीम०—तुम्हें हटा देनेपर भी, क्या विश्वास है कि, मैं भाग सकूँगा। इतनी बड़ी पल्टन क्या हाथपर हाथ रखे बैठी रहेगी ?

रामपाल०—इसकी भी तुम्हें कोई चिन्ता नहीं। मैं उन्हें आज्ञा दे देता हूँ। वे तुम्हें न छेड़ेंगे। तुम्हारी जहाँ इच्छा हो चले जाना।

भीमसिंह—मैं ये सब बातें नहीं सुनना चाहता। तुम्हारे जैसे विश्वासघातीका विश्वास नहीं होता।

क्रोधित होकर रामपालने कहा—खबरदार ! जबान सम्हाल कर बातें करो ! यदि तुम कैदी न होते तो देखता कि तुम मेरा विश्वास करते या नहीं। मुख फाड़कर मैं जबान निकाल लाता। तुम मुझे विश्वासघातक कहते हो ?

भीम०—इस समय मैं तुम्हारा कैदी हूँ। तुम्हारी जो इच्छा हो करो। चाहे मुझे मारो या छोड़ो।



रामपाल०—कबसे इतने सरल हुए ? "सौ सौ चूहे खायके

बिलारी बैठी तपके" हजारों लाखोंका सर्वनाश कर और असंख्य सतियोंका धर्मनाश कर, अब तुम मारने छोड़नेकी बात कहते हो ? सोचो तो सही कि जिस समय तुम असहाय निरपराध मनुष्योंको पहाड़ोंमें ले जाकर निष्ठुर भावसे हत्या करते और अफवाह उड़ाते थे, कि यह भूतोंका काम है। उस समय तुम क्या स्वप्नमें भी सोचते थे, कि एक दिन उसका दण्ड भोगनेके लिये, यहाँ नहीं तो, लोकान्तरमें न्यायकर्त्ताके सामने अवश्य ही खड़ा होना पड़ेगा ? उस समय क्या स्वप्नमें भी तुम अनुभव कर सकते थे, कि सभीकी आत्मा और देह समान है ? सभीको पीड़ा और दुःख समान होता है।

नरकके कीड़े ! पापोंका दण्ड भोगनेके समय मालूम होगा उस समय तो तुम अहंकारसे फूले न समाते थे—अपने सामने किसीको कुछ गिनते ही न थे।

भुजबल और पशुबलके कारण अब अधिक दिन तक तुम अपने सृजनकर्त्ताको भूले न रह सको, इसलिये आज मैं तुम्हारा अहंकार तोड़ देना चाहता हूँ। आओ, मैं तुम्हें सभी प्रकारके अस्त्र शस्त्र देता हूँ, तुम मुझसे द्वन्द्व युद्ध करो। यदि तुम मेरा खून कर सके तो फिर स्वाधीन हो जाओगे।

भीम—तुम्हारे ये साथी कहाँ रहेंगे ? वे क्या मुझे छोड़ देंगे ?

रामपाल०—कोई भी तुमसे छेड़-छाड़ नहीं करेगा। तुम्हें वचन देता हूँ।



भीम०—मैं तुमसे युद्ध नहीं करूंगा।

रामपाल०—कापुरुष! कादर! शैतान! इतने दिनोंके बाद तेरा सच्चा रूप प्रकट हुआ है। मुझे अच्छी तरह मालूम था, कि बाहरी दिखावा ही तुझमें अधिक है। इतने दिनोंपर आज ढोलकी पोल खुल गयी। इसी शक्तिको लेकर तू एक बड़ेसे डाकुओंके दलकी सरदारी कर रहा था?

भीम०—इस समय तुम चाहे जो गाली दो। मैं सहनेको तैयार हूं। समय आनेपर फिर मैं देख लूंगा।

रामपाल०—उसके लिये मैं भयसे काँपता नहीं हूँ। मैं हर वक्त सम्मुख समरके लिये तैयार हूं। अपना एक हाथ बाँधकर सिर्फ एक हाथसे, सिर्फ एक तलवार लेकर युद्ध करनेको भी तैयार हूँ। तुम दो हाथोंसे तीर कमान बन्दूक चाहे जो इच्छा हो लेकर मेरे सामने आओ, मैं लड़ूंगा। मैं तुम्हें यह भी विश्वास दिलाता हूँ, कि कोई भी लड़ते समय मुझे सहायता न देगा और मुझे हरानेपर तुम निर्भय होकर जहाँ खुशी चले जा सकोगे।

भीम०-मैं किसी प्रकार भी तुमसे लड़नेको तैयार नहीं हूँ।

क्रोधसे अधीर होकर अन्यान्य डाकुओंकी ओर देखते हुए रामपालने कहा—"देखो, शैतानो! एक दिन जिसके पैरोंकी तुम सेवा करते थे, जिसके संकेतपर उठने बैठनेको तैयार रहते थे, उसकी शक्ति यही है। वह तुमसे भी नीच, निर्बल और कादर है! यही तुम्हारा सरदार है जिसको पाकर तुमलोग गर्व करते थे।"

बन्दी डाकू एक स्वरसे भीमसिंहकी कादरताकी निन्दा करने लगे। उनका भी मन अपने अयोग्य सरदारके प्रति घृणासे भर आया।

रामपालसिंहने भीमको उत्तेजित करनेकी अनेक चेष्टायें कीं परन्तु भीम इसमें प्रस्तुत न हुआ। रामपालसिंहको बड़ी आशा थी, कि भीमके साथ युद्ध करनेमें अपना बलवीर्य्य दिखानेका अवसर मिलेगा, परन्तु उनकी लालसा पूरी न हुई। उन्होंने पहले कल्पना भी नहीं की थी कि भीम इतना कादर और डरपोंक है। जब उन्होंने देखा कि भीम किसी प्रकार भी लड़नेको तैयार नहीं होता तब उन्होंने कहा—अच्छा, भीमसिंह! मैं तुम्हारे सारे दलको छोड़ देना स्वीकार करता हूं, तुम मुझे हराकर अपने दल सहित चले जाओ। तुम एक वार साहस कर मुझसे युद्ध करो। देखो, तुम क्षत्रिय हो, क्षत्रियोंके लिये युद्धसे विमुख होना पाप है। एक दिन जब मरना ही होगा तो तुम मरनेसे इतना डरते क्यों हो।

और यह भी तो निश्चय नहीं है, कि मैं ही जीतूँगा और तुम हारोगे। तुम्हारे ही जीतनेकी अधिक सम्भावना है, क्योंकि तुम्हें लड़नेका अधिक अभ्यास है। शारीरिक शक्ति भी तुममें अधिक है। सोचो तो सही, मुझे जीत लेनेसे तुम्हारा कितना नाम हो जायगा। सभी डाकू आदर सम्मानसे तुम्हारी सेवा करेंगे और तुम निःशंक होकर सर्वत्र घूम फिर सकोगे। मुझे जीतनेसे ही तुम अरावली पर्वत मालाके तिलक धारी

राजा हो जाओगे। वहाँसे सरकारका राज उठ जायगा। उठो एक वार युद्ध करो।"

भीम सिर झुकाये मौन होकर बैठा हुआ है—वह मन ही मन क्या सङ्कल्प कर रहा है वही जाने, परन्तु उसके सङ्गी साथी सभी डाकू उस पर गाली और निन्दाकी बौछार छोड़ने लगे। सिर्फ एक आदमीकी हार-जीत पर सैकड़ों आदमीका छुटकारा निर्भर करता हैं। क्या एक दुर्दान्त दस्यु सरदारके लिये एक साधारण युवकको हरा देना कोई असम्भव बात है? प्रत्येक डाकू अपने सरदारसे इसकी प्रत्याशा कर सकता है। यदि सरदारसे इतना भी नहीं हो सकता तो वह सरदार काहे का है?—

भीमसिंह आँख कान मूँदकर सभी गाली गलौज हजम कर गया। उसने मुखसे एक शब्द भी न निकाला!

अन्तमें निराश होकर रामपालसिंहने एक सिपाहीकी ओर देखकर घृणाके साथ कहा—"लात मारते मारते इसको थानेपर ले जाओ। आदमीकी खालमें ढका हुआ यह भेड़ है। मनुष्यत्वका इसमें नाम भी नहीं है। इसके समान भीरू, कापुरुष और नीच डाकू आजतक मैंने कभी नहीं देखा था।"

भीमने कहा—"भगवती वसुन्धरे! तुम फट जाओ, मैं तुम्हारे भीतर प्रवेश करूं—अब अधिक नहीं सहा जाता।" फिर उसने रामपालकी ओर वक्र कटाक्ष करके कहा—"सावधान!"

# चौथा परिच्छेद ।

## चालान ।

रामपालसिंहने अन्यान्य काम काज पूरा कर सिपाहियोंसे कहा—"हरेक डाकूके पास तुम लोग दो दो जने तैनात रहो! देखो, कोई भागने न पावे। ये शैतान भरशक नीचे घाटीमें नदीमें कूद पड़नेकी भी चेष्टा कर सकते हैं। इस लिये तुम लोग खूब सावधान होकर इन्हें थाने पर ले जाओ।"

करीब एक घण्टेके बाद हथियार बन्द सिपाहियोंसे घिरा हुआ डाकुओंका दल पहाड़की घाटियोंमेंसे होकर चलने लगा। वह दृश्य देखने ही लायक था। घाटियोंसे निकलते निकलते देखा गया, कि डाकुओंकी संख्या अढ़ाई सौके करीब पहुंची है, ये सभी डाकू भिन्न भिन्न थानोंपर भिन्न पल्टनों द्वारा पकड़े गये हैं।

रामपालसिंहने कौशलसे विवाहोत्सवमें निमन्त्रण भिजवा कर चुपके चुपके सभी डाकुओंको ही अरावली पर्वतपर बुला लिया था। परन्तु भीमको इसका कुछ भी पता नहीं लगा था। यथा समय सभी डाकू थानेपर पहुंचे। अब रामपालकी

प्रधान चिन्ता हुई डाकुओंके विरुद्ध मुकदमा खड़ा करना। दो एक दिनके भीतर ही डाकू अभियुक्त हुए।

कमला यथा समय अपने पिताके पास पहुँच गयी थी, इसलिये रामपालसिंह उधरसे निश्चिन्त हो गये थे। इस घटना के तीसरे दिन समरसिंहसे भेंट करनेके लिये रामपालसिंह बूँदी गाँवकी ओर रवाना हुए।

बूँदी गाँव ( समरसिंहका गाँव ) उनके यहाँसे दो दिनकी मंजिलपर था। इसलिये रास्तेमें रात हो जानेके कारण उन्हें एक सरायमें आश्रय लेना पड़ा।

इस समय उनके हाथमें दूसरा कोई भी काम न था। इस लिये उन्होंने निश्चय किया था, कि समरसिंहसे फिर एक बार परामर्श कर, मैं कमलाकी सम्पत्ति लौटानेकी चेष्टा करूंगा।

सरायमें प्रवेश करते ही उन्होंने देखा कि कई आदमी एक कमरेमें बैठकर बातें कर रहे हैं। उन लोगोंके मुखसे अपनी ही चर्चा सुनकर कौतूहलवश वह भी उन्हींके पास जाकर बैठ गये। एक आदमी अपने साथियोंसे कह रहा था—"हाँ, मैं तो समझता हूँ, कि रामपालके समान पाजी और गुण्डा बहुत कम मिलेंगे। बड़ा ही घूसखोर है। भीम डाकूसे किसी दर्जे भी वह घटकर नहीं। भीमने भी मूर्खता की। यदि इस शैतानको मार डालता तो बहुत अच्छा होता।"

रामपालको बैठते देखकर भी उस आदमीने अपनी वक्तृता बन्द करना आवश्यक न समझा। विशेष करके उनकी पोशाक

को देखकर कोई भी नहीं कह सकता था कि यही अद्वितीय वीर जासूस रामपालसिंह हैं। उनके स्वभाव और पोशाकमें ऐसा कोई भी लक्षण नहीं था जिससे किसीको मनोभय या सन्देह पैदा हो सके। हां, तीक्ष्णदर्शी अनुभवी लोगोंसे उनके नेत्रोंकी तीव्र ज्योति और अनुसंधित्सा कभी न छिप सकती थी। उनमें एक ऐसा स्वाभाविक आकर्षण था जो अनायास उनका परिचय खोल देता था। पापी उन नेत्रोंको देखते ही काँप जाते थे।

जासूस रामपालको बड़ी खुशी हुई। इन पहाड़ी देशोंकी सरायोंमें अपरिचित लोग एक दूसरेके साथ निस्सङ्कोच होकर बातें करते हैं। कोई किसीसे द्वेष नहीं करता। वहाँ सभ्य समाजका यह नियम नहीं काममें लाया जाता कि जिससे परिचय नहीं है उससे बातें ही न करेंगे। चाहे बातें करनेके लिये भले ही जी व्याकुल हो रहा हो। वे लोग दो घण्टेके आलाप परिचयसे ही एक दूसरेसे इतना हिल मिल जाते हैं कि देखनेसे मालूम होता है, कि मानों इनमें वर्षोंकी घनिष्ठता है।

रामपालने उस आदमीकी ओर देखकर कहा—शायद रामपालसिंहको आप जानते नहीं, इसीलिये आप उनपर अनुचित आक्षेप कर रहे हैं। आपके साथ रामपालसिंहका परिचय है।

उत्तर--जी हाँ।

रामपाल—कभी नहीं। यदि उनके साथ आपका परिचय होता तो आप कभी उनपर ऐसे अनुचित दोष न लगाते।

उत्तर—हो सकता है। आपके साथ उनका परिचय है क्या ?

रामपाल—जी हाँ, उनके साथ मेरी थोड़ी बातें हुई हैं।

उस आदमीने पूछा—"आप शायद उन्हें अच्छा समझते हैं !"

रामपाल—जी हाँ।

और जो लोग वहाँ बैठे थे, उनमेंसे किसीने इस तर्क-वितर्कमें भाग न लिया। सभी चुपचाप आग्रहके साथ दोनोंकी बातें सुनने लगे।

उस आदमीने उद्धत भावसे कहा—"मैं कहता हूं कि आदमी अच्छा नहीं है। देखूं कौन मेरी बातका प्रतिवाद करता है ?"

रामपाल०—क्या ऐसा कोई विशेष कारण है, जिससे आप उनको अच्छा नहीं कहते हैं ? उन्होंने आपके साथ क्या अन्याय किया है ?

उत्तर—मेरे साथ वह पाजीपन कर ही क्या सकता है ? उसका पाजीपन इसीसे प्रकट हो जाता है, कि वह सदा चोरोंकी सङ्गतिमें रहता है।

रामपाल०—आपका यह सिद्धान्त तो बहुत विचित्र है। जो चोर पकड़ने जाते हैं, वे भी चोर डाकू हैं ?

वह आदमी झुँझलाकर बोला—"तुम कौन होते हो जो हम लोगोंकी बातचीतमें बाधा देने लगे ? जाओ, हमलोगोंके पाससे हटो। तुम्हारी बढ़ी-चढ़ी बातें सुनकर मुझे गुस्सा लग रहा है यदि—"

रामपाल०—तुम्हें गुस्सा होता है तो मैं क्या करूं ? तुम्हारी बातें यदि मुझे अनुचित मालूम होंगी तो मैं क्यों नहीं प्रतिवाद करूंगा ? रामपालने शायद तुम्हारा कोई भी अनिष्ट नहीं किया है। तुम यों ही उनकी निन्दा कर रहे हो।

उत्तर—तुम्हें कैसे मालूम हुआ, कि उसने मेरा अनिष्ट नहीं किया है ?

रामपाल०—ओ ! समझा, शायद तुम भीमके दलके हो। भीमके सारे दलको पकड़वा देनेके कारण ही शायद तुम्हें कष्ट हो रहा है ? क्यों बात यही है न ?

रामपाल जिस आदमीसे बातें कर रहे थे, उसके आकार प्रकारसे भीषण भाव टपकता था। उसका शरीर खूब मजबूत और भरा हुआ था। उसकी बलिष्ट भुजाओंसे शक्तिका विशेष परिचय मिलता था। उसके साथ रामपालसिंहको इस प्रकार बातें करते देखकर जो लोग वहाँ बैठे थे, सबोंने समझा कि शीघ्र ही इनमें मारपीट होगी। सबको आश्चर्य्य हो रहा था, कि इतने बड़े पहलवानके साथ यह दुबला पतला छोकड़ा क्यों तकरार बढ़ा रहा है ! यह तो एक तमाचा भी नहीं सम्हाल सकता।

उस आदमीने अपने क्रोधको रोककर शान्त और गम्भीर भावसे कहा—"शायद तुम्हें मालूम नहीं, कि तुम किससे बातें कर रहे हो। मैं अब भी तुम्हें सावधान कर देता हूं ! जबान सम्हाल कर बातें करो !"

रामपाल०—सावधान करनेकी कोई जरूरत नहीं है; क्योंकि मेरी जबान बेलगाम नहीं हुई है। और यह भी मैं स्वीकार करता हूं, कि जिस महापुरुषसे मेरी बातें हो रही हैं, सौभाग्यवश उनसे मेरा परिचय नहीं है और परिचय करनेकी मैं आवश्यकता भी नहीं समझता।

उस आदमीने पूछा—"तुम क्या यहीं रहते हो?"

रामपाल०—मैं कई जगह रहता हूं। अभी इस सराय मैं हूं।

उस आदमीने फिर पूछा—"देखता हूं तुम रामपालसिंहके अन्धभक्त मालूम होते हो। तुम उसकी निन्दा नहीं सहन कर सकते।"

रामपाल०—हाँ सो तो ठीक है। उनकी अनुपस्थितमें यदि कोई उनपर अनुचित दोष लगाता है, तो मैं नहीं सहन कर सकता हूं।

"मैंने क्या अनुचित दोष लगाया है?"

राम०—"तुम जरूर लगा रहे हो। पाजी, शैतान, चोर डाकू, तुमने तो उन्हें सब कुछ बना डाला। फिर दोष लगाना किसे कहते हैं?"

"मेरी जैसी धारणा है वैसा ही कहता हूं।"

राम०—तुम्हारी धारणा भूल है। तुम झूठे हो।"

"ऐं! जबान सम्हालकर बातें नहीं करता! यदि फिर



ऐसा कहा तो जीभ काट लूँगा।"

राम०—"मेरी जीभ खूब मजबूत है। उसके लिये मुझे डर नहीं। तुम चाहो तो अपना बल दिखला सकते हो। मैं तैयार हूं।"

वह आदमी इस वार नरमीसे बोल उठा—"मित्र, तुम्हारे जैसे स्पष्टवादी आदमीको मैं बहुत पसन्द करता हूं।"

रामपाल०—सचमुच! एकाएक यह परिवर्तन देखकर मुझे भय हो रहा है। महाशय! सहसा आपका तेवर ठण्डा क्यों हो गया?

"देखो, बहुत दिनसे तुम्हारे जैसे एक खुश मिजाज आदमी की खोजमें मैं हूं। तुमने जो सब बातें मुझे कहीं हैं, उन्हें माफ करनेको मैं तैयार हूं।"

राम०—हुजूर, एकदम इतना दयालु हो जाना अच्छा नहीं है। दास आपका अनुग्रह नहीं चाहता।"

"तो क्या सचमुच तुम मुझे चिढ़ानेके लिये ये सब बातें कर रहे हो?"

उस पहलवानने जरा गम्भीर होकर कुछ क्रोधके साथ अन्तिम प्रश्न किया। मालूम हुआ, कि जासूस रामपालके एक और शब्द उच्चारण करते ही वह आक्रमण करेगा।

परन्तु रामपालसिंह इसका कुछ भी उत्तर न देकर मन्द मन्द मुस्कुराने लगे।

उस आदमीने इनका इतना साहस और उद्दण्डता देख कर सरायके संरक्षकको बुलाकर कहा—"इस आदमीको तुम पहचानते हो?"

संरक्षकने उत्तर दिया—"मैंने इन्हें कभी नहीं देखा है। परन्तु इतना मैं कह सकता हूं, कि जो सज्जन मेरे सरायमें आकर रहते हैं, वे सभी मेरे मित्र हैं। इससे अधिक अपरिचित और परिचितका मेरे यहाँ कोई मूल्य नहीं हैं।"

"देखो, मैं कहता हूं, इस आदमीको इस जगहसे हटा दो, नहीं तो अच्छा नहीं होगा।"

संरक्षक—मैं क्यों कर उन्हें हटा सकता हूं? मेरे यहाँ जैसा आपका अधिकार है, वैसा ही अधिकार उनका भी है। आपके कहनेसे मैं उन्हें हटा नहीं सकता।"

"तुम यदि इसे यहाँसे बिदा नहीं कर सकते तो मुझे ही यह काम करना पड़ेगा।"

आस पास जो लोग बैठकर तमाशा देख रहे थे, उन्होंने समझा—"अब भिड़न्त हुई।"

परन्तु कोई भी वाधा देनेके लिये तैयार न हुआ।
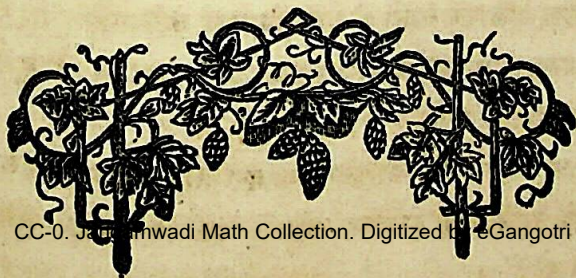
# पांचवां परिच्छेद.

## जगतसिंह ।

रामपालसिंहके चेहरेसे भय और संकोचका कोई भी चिह्न प्रकट न हुआ। बल्कि उस आदमीका क्रोध बढ़ानेके लिये वह और भी जोरसे हँसने लगे।

सरायके संरक्षकने कहा—"यदि आप लोगोंकी यही इच्छा है कि इस आदमीको सरायसे निकाल दिया जाय तो मैं ही इन्हें नम्रता पूर्वक चले जानेको कह देता हूं। परन्तु आपलोग मेरे सरायमें किसी मुसाफिरका अपमान नहीं कर सकते। क्या आप सबकी यही इच्छा है, कि ये सज्जन चले जायँ?"

उस झगड़ालू पहलवानके सिवा किसीने भी इस प्रस्तावका समर्थन न किया।

झगड़ालू पहलवानने फिर भी जोर देकर कहा—"यह आदमी झूठ मूठ मुझे चिढ़ा रहा है। मैं इसे यहाँ नहीं रहने दूँगा।"

रामपालसिंहने व्यंग भावसे कहा—"महाशयका शुभ नाम क्या है? कहाँ रहना होता है?"

उस आदमीने गम्भीर स्वरमें कहा—जगतसिंह! इस पहाड़ी देशमें कोई भी ऐसा नहीं है, जो मेरे नामसे परिचित न हो। यहाँके सब लोग मेरे भयसे काँपते रहते हैं।"

जगतसिंहने समझा था, कि उनका नाम सुनते ही सरायके सभी लोग चौंक उठेंगे और जो आदमी कहा सुनी कर रहा है, वह भय खाकर या तो क्षमा प्रार्थना करेगा या मूर्च्छित होकर जमीनपर लोट जायगा। परन्तु यह बड़े आश्चर्य्यकी बात हुई कि रामपालसिंह उस नामको सुनकर न तो मूर्च्छित ही हुए और न भयभीत होकर दया भिक्षा ही माँगी। वरन् इससे उनको और भी खुशी ही हुई। जगतसिंहका पूरा परिचय जाननेके लिये उन्हें कौतूहल भी हुआ।

वास्तवमें जगतसिंहका दोर्दण्ड प्रताप उस प्रदेशमें घर घर छाया हुआ है। "मेरा नाम सुनकर सभी काँप उठते हैं" यह उक्ति सम्पूर्ण नहीं तो अनेक अंशोंमें सच्ची है। सुना जाता है, कि डाकुओंके दलोंसे वह भीतर ही मिले रहते हैं। यद्यपि प्रकट भावसे उन्हें आजतक किसीने डाकुओंकी संगतिमें नहीं देखा है, परन्तु अनेकोंका विश्वास है, कि भीमसिंह डाकूसे उनकी बड़ी मित्रता है। उसकी सहायतासे वह बड़े बड़े ऊधम मचाया करते हैं। उन्होंने जब अपना परिचय दिया तो सचमुच जो लोग वहाँ बैठे थे, वे सभी भयभीत और चञ्चल हो उठे। परन्तु रामपालसिंह ठीक पहलेहीके समान निरुद्विग्न और निडर होकर बैठे रहे। उनके सहास्यवदनपर भय और चिन्ताका कोई भी चिह्न न दीख पड़ा। जगतसिंहने जैसा अनुमान किया था, वैसा कुछ भी नहीं हुआ। इससे उनको कुछ निराशा भी हुई। मन ही मन उन्होंने सोचा—मेरे भयसे सिंह और

बकरी एक घाटपर पानी पीते हैं, और यह आदमी जरा भी विचलित नहीं हुआ। यह है कौन ? बड़ा साहसी मालूम पड़ता है।

रामपालने कहा—"भीमसिंह सदल-बल पकड़ा गया है, इससे शायद आपको नुकसान पहुंचा है ? उसके न रहनेसे शायद आपके स्वार्थपर धक्का पहुंच रहा है। इसीलिये इतनी जलन हो रही है।"

जगतसिंह यह बात सुनकर क्रोधसे आग बबूला हो गये। लाल लाल आँखें तरेरते हुए उन्होंने पूछा—"क्या कहा तुमने! तुम्हारे ऐसा कहनेका क्या मतलब है ? क्या मैं डाकू हूँ।"

रामपाल—मैंने तो खूब साफ शब्दोंमें कहा है। इसका अर्थ समझानेकी कोई जरूरत नहीं। आप खुद ही इसका माने समझ गये होंगे।

जगत्०—यदि फिर तुमने यह बात कही, कि मैं तुम्हारा सिर तोड़ दूँगा।

रामपाल—यदि साहस हो तो एक बार आजमा कर देख लो। परन्तु मैं सावधान कर देता हूँ—मेरा सिर जरा मज-बूत है, वह जल्दी नहीं टूट सकता।

जगत्०—तू क्या अब भी कहेगा कि मैं रामपालपर व्यर्थ दोष लगा रहा हूँ ?

राम०—जरूर ! मैं अब भी कहता हूं और हजार बार कहने के लिये तैयार हूं, कि तुम आला दर्जेके झूठे और बदमाश हो।

जगतसिंहके जेबसे पिस्तौल निकालते ही वह भी भूखे बाघकी तरह उसपर टूट पड़े।



दुर्गा प्रेस, कलकत्ता ]

[ देखिये—पृष्ठ संख्या १२१

जगतसिंह अब अधिक न सह सके। उन्होंने अपने कोटकी जेबसे पिस्तौल निकालनेके लिये पाकेटमें हाथ डाला। और फिर गम्भीर भावसे कहा—"खबरदार! जबान सम्हालकर बातें कर, नहीं तो अभी मैं तुझे ठीक कर दूंगा।"

रामपालसिंह समझ गये, कि उन्हें गोली मारनेके लिये जगतसिंह पाकेटसे पिस्तौल निकालनेकी चेष्टा कर रहा है। परन्तु वह विचलित नहीं हुए। उन्होंने और भी कठोर और जोरदार शब्दोंमें कहा—"मैं क्यों तुम्हें झूठा कह रहा हूँ इसके अनेकों कारण हैं। जासूस रामपालने तुम्हारा कोई नुकसान नहीं किया है। तिसपर भी तुम उनपर कलङ्क लगा रहे हो। इसके सिवा तुम्हारा—"

उनकी सब बातें पूरी भी न होने पायी थीं, कि जगतसिंहने जरा पीछे हटकर, जेबसे पिस्तौल निकाली। रामपालसिंह भी इसके लिये तैयार थे। वह भी भूखे बाघकी तरह जगतसिंहके ऊपर टूट पड़े। जो लोग पहले सोचते थे, कि पहलवानके एक तमाचेकी चोट भी यह दुबला पतला और कमजोर आदमी सह नहीं सकता, वे ही लोग इस समय रामपालकी फुर्ती और तत्परता देखकर दङ्ग रह गये। रामपालसिंहने पहलवानको ऐसे घातसे जाकर पकड़ा, कि वह कुछ भी जोर न लगा सका। थोड़ी ही देरकी झटापटीके बाद उन्होंने पहलवानको जमीन पर गिरा दिया और उसकी छातीपर बैठकर कड़ककर बोले—"बचना चाहो, तो अभी पिस्तौल फेंक दो।"

जगतसिंहके हाथसे पिस्तौल छूट गयी। किसीने उन दोनोंको लड़ाईमें बाधा नहीं दी। परन्तु लड़ाईका फल देखकर सभी आश्चर्य्यमें पड़ गये। देखनेसे ऐसा मालूम हुआ, कि जगत जैसे पहलवानको धाराशायी करनेमें रामपालको तनिक भी कष्ट नहीं हुआ है। किसीकी खून खराबी नहीं हुई। पर सीधे सादे एक आदमीने जगत्सिंह जैसे पहलवानको एक बालककी तरह धीरेसे सुला दिया।

रामपालसिंह जमीनपर पड़ी हुई पिस्तौलको उठाकर जगत्सिंहकी छातीसे उतर पड़े। जगतसिंहने अब अपनी कमरसे एक तेज छुरा निकालकर रामपालसिंहपर आक्रमण करना चाहा; परन्तु फिर भी उसे निश्चेष्ट होना पड़ा। रामपालसिंहने उन्हीं (जगत्सिंह) की पिस्तौलका उनकी खोपड़ीपर लक्ष्य करके कहा—सावधान! अपनी ही पिस्तौलसे तुम मरोगे। जगतसिंहने चिल्लाकर कहा—तू कौन है?

रामपाल—मैं कौन हूं—सचमुच तुम जानना चाहते हो?

जगत—हाँ।

रामपाल—लोग मुझे "जासूस रामपाल" कहकर पुकारते हैं। और सरकार मुझे "राजा रामपालसिंह" कहती है।

जगतसिंह तुरत अपने हाथसे छुरा फेंककर बड़े सीधे सादे आदमी बन गये। उन्होंने बड़े ही नम्र और विनीत स्वरमें कहा—"इसीसे तो सोचता था। दूसरेको इतना साहस कैसे हो सकता है। मैं आपको पहचान नहीं सका हूं, क्षमा करेंगे।"

जगतसिंहने जब अभिमानके साथ अपना नाम बतलाया था, उस समय उपस्थित जन मण्डली उतनी विस्मित और चकित नहीं हुई थी जितनी जासूस रामपालका नाम सुनकर हुई। स्तम्भित हो सभी रामपालसिंहकी ओर टकटकी बाँध कर देखने लगे। इतने दिनों तक जिस आदमीका नाम सुनकर ही वे आश्चर्य्यसे दाँतों तले अंगुली काटते थे, आज वही सामने हाज़िर है।

रामपालसिंहने इन सब बातों पर ध्यान न देकर बगलके छोटेसे कमरेमें प्रवेश कर भीतरसे दरवाजा बन्द कर लिया। सिर्फ सराय रक्षकको कह गये—"सवेरा होते ही मुझे उठा दीजियेगा।"

कोठरीमें वह चले तो गये, परन्तु वहाँ जाकर सोये नहीं। उनके मनमें एक नयी चिन्ता उठी। वह बार बार जगत-सिंहके नामकी माला जपने लगे। जगतसिंह? यह नाम तो पहाड़ी देशमें बहुत सुना जाता है। परन्तु इसके सिवा उन्होंने इस नामको किसी खास जगह सुना है। कहाँ सुना, सो याद नहीं पड़ता। बहुत देरतक सोचने विचारनेके बाद याद आया, कि समरसिंहके मुखसे उन्होंने इस नामको सुना है। अब वह सोचने लगे—यह क्या वही जगतसिंह है? क्या इसी आदमीने कमलाकी विमाताके साथ षड्यन्त्र कर कमलाकी सम्पत्तिपर दखल जमा लिया है। क्या यह जगतसिंह है?



कमलाके पिताका मैनेजर और विमाताका गुप्त प्रणयी

है। यदि यही हो तो विना चेष्टा और परिश्रमके शिकार हाथमें आ गया है। अब किसी तरहसे इसको आँखसे ओझल नहीं होने देना चाहिये।

इसी प्रकारकी चिन्ता करते करते, जब बहुत रात बीत गयी तो सहसा उनकी विचार-धारामें वाधा पड़ी। सरायके बाहर उन्होंने किसीकी आवाज सुनी। कोई कह रहा था—"आज रातको आप क्या करने जायँगे—-सवेरे खूब भोर ही उठ पड़ियेगा।"

एक दूसरा आदमी कह रहा था—"नहीं, नहीं, मुझे आज ही रातको जाना होगा। तुम मेरा घोड़ा ला दो।"

पहला०—कहिये तो सही, इस अन्धेरेको चीरकर कैसे जाऊँ? अच्छा, जब आप मानेहींगे नहीं तो मुझे वाध्य होकर जाना ही पड़ेगा।"

"मैं आज जरूर ही जाऊँगा। मेरे बिना गये चल ही नहीं सकता।"

रामपालसिंह यह वार्त्तालाप और गलेकी आवाज सुनकर समझ गये, कि जगतसिंह सरायसे रातों रात भागनेकी चेष्टा कर रहा है और सरायका सांरक्षक उसे रोक रहा है। इस अन्धेरी रातमें यह दुर्दान्त रईस भागनेकी क्यों चेष्टा कर रहा है। रामपालसिंह अब इसीका कारण ढूंढ़ने लगे।

थोड़ी देरके बाद फिर सराय रक्षककी आवाज सुन पड़ी। उसने कहा—देखिये, रातके समय पहाड़ी रास्तेसे घोड़ेपर जाना

बड़ा कठिन है। मैं फिर भी आपको रोकता हूं। आप आज न जाइये। यदि जायँगे तो अवश्य ही आप आफतमें पड़ जायँगे।

रामपालसिंह कान लगा कर खूब सावधानीके साथ उन दोनोंकी बातें सुनने लगे। वह अब भी इसी विचारमें पड़े हुए थे कि जगतसिंह अभी क्यों सरायसे चला जाना चाहता है।

रामपालसिंहने खुले हुए जङ्गलसे देखा, कि जगतसिंह घोड़े पर चढ़कर पूछ रहा है—"यहांसे बूँदी गढ़ जानेका कोई सीधा रास्ता नहीं है?"

सराय रक्षक—नहीं।

जगत०—यहाँसे बूँदी गढ़ कितनी दूर होगा?

सराय रक्षक—करीब दश कोश।

रामपालसिंहने यह बात सुनकर सोचा—यह बूँदी गढ़ आज रात ही को क्यों जाना चाहता है? अवश्य ही इसके मनमें कोई कुविचार है। नहीं, आज मुझे नींद न आयेगी—

शीघ्र ही उन्होंने कपट वेश धारण कर लिया और खिड़कीसे कूद कर बाहर निकल आये। अन्धेरेमें टटोलते हुए वह अस्तबलमें गये और अपने घोड़ेको निकालकर जीन कसी और लोहेकी नालपर रबरकी नाल उसके पैरोंमें पहना दी। अब वह उस पर सवार होकर तेजीसे चल पड़े। करीब आध घण्टेकी सरपटके बाद ही जगतसिंहके घोड़ेकी टापें जब सुनायी पड़ने लगीं, तब उन्होंने अपने घोड़ेकी चाल कुछ धीमी

कर दी और अगले घोड़ेकी बराबर दूरीपर रहकर वह उसका पीछा करने लगे। कुछ दूर जानेके बाद ही अगले घोड़ेकी टापोंका सुनाई पड़ना बन्द हो गया। वह समझ गये कि जगत-सिंहका बूँदी गढ़ जाना झूठ है। वह निकटकी ही सरायमें आज रात बितायगा। पासमें जो सराय थी, उससे रामपालसिंह अच्छी तरह परिचित थे। यह सराय क्या थी, डाकुओंका अड्डा था। यहाँ चोर, डाकू, खूनी, बदमाश रातके समय आकर एक दूसरेसे भेंट मुलाकात करते थे और रातों रात अपने अपने गुप्त स्थानपर चले जाते थे। जगतसिंहने किस मतलबसे इस सरायमें आश्रय लिया है, यह जाननेके लिये जासूस राम-पालके मनमें बड़ा कौतूहल हुआ। वह घोड़ेसे उतर पड़े और उसको एक पेड़की जड़में बाँध, पैदल ही जगतसिंहके पीछे चल पड़े। थोड़ी देरके बाद उन्होंने देखा कि जगतसिंह भी अपने घोड़ेको एक पेड़की जड़में बाँध, पैदल ही सरायकी ओर बढ़ रहा है। रामपाल भी खूब सावधानीसे उसके पीछे पीछे जाने लगे।

अचानक एक तुरहीकी आवाज सुन पड़ी। उन्होंने समझा—यह भी जगतसिंहका संकेत है। सरायमें अवश्य उनसे भेंट करनेके लिये कोई अपेक्षा कर रहा है। दूसरे उसको खबर देने ही के लिये यह तुरही बजी है। वास्तवमें घटना भी ऐसी ही थी। तुरहीकी आवाज होनेके थोड़े ही देर बाद सरायका फाटक खुल गया। एक आदमीने बाहर निकलकर ठीक वैसी

आवाज कर सूचित किया कि वह हाजिर है। इसके बाद उसके पीछे तीन आदमी और आते हुए दिखलायी पड़े। एक पेड़के नीचे सभी आकर इकट्ठे हुए और आपसमें बातें करने लगे।

रामपालसिंह छिपे छिपे उन लोगोंके पास जाकर ऐसी जगह खड़े हो गये, जहाँसे वह सब कुछ देख और सुन सकते थे, परन्तु उनपर किसीकी भी नजर न पड़ सकती थी।

जगतसिंहने उन तीनों आदमियोंकी ओर देखकर पूछा—खबर अच्छी है?

एकने उत्तर दिया—अच्छी है।

जगत०—ठीक जगहपर पहुंच सके थे?

उत्तर—हाँ।

जगत—काम पूरा हुआ है?

उत्तर—हुआ है।

जगत०—उसको देखा था?

उत्तर—हाँ देखा था।

जगत०—उसे ला सकते हो?

उत्तर—जरूर।

जगत०—कब?

उत्तर—अपना पुरस्कार पाते ही।

जगत०—मैंने तो पहले ही कह दिया है—एक एक हजार तीनोंको दूँगा।

उत्तर—इतने पर नहीं होगा—आपको और भी कुछ बढ़ना पड़ेगा।

जगत०—कितना चाहते हो।

उत्तर—हरेकको दो हजार।

जगत०—एक छोटेसे कामके लिये इतने रुपये माँगते हो!

उत्तर—काम बहुत छोटा कैसे है?

जगत०—क्यों इसमें मिहनत ही क्या है?

उत्तर—इस समय जासूस रामपालने उसकी देख-रेखका भार अपने ऊपर लिया है। इसके सिवा एक और भी बात सुननेमें आयी थी। शायद वह लड़की अगाध सम्पत्तिकी मालकिन है; परन्तु किसीने धोखा देकर उसकी सारी सम्पत्ति हड़प ली है। सुनता हूं, कि रामपालसिंहने प्रतिज्ञा की है कि वह सम्पत्तिका उद्धार करके ही दम लेंगे।

जगत०—यह झूठी खबर तुमने कहाँ सुनी। शायद तुमने किसी चण्डूखानेमें यह गप्प सुनी है!

उत्तर—कहीं भी सुनी है, परन्तु बात सच्ची हैं। खैर, कुछ भी हो। हमें उसके बारेमें सरपच्ची करनेकी कोई जरूरत नहीं।

जगत०—रामपालसिंहने उसी लड़कीकी देख-रेखका भार लिया है, यह तुम्हें कैसे मालूम हुआ? यह झूठी अफवाह भी तो हो सकती है।



उत्तर—नहीं, यह अफवाह नहीं है। सच्ची बात है।

जगत०—खैर, कुछ भी हो। तुम लोग उसे ला सकते हो?

उत्तर—हाँ।

जगत०—कब?

उत्तर—आज ही रातको। यदि सब बातचीत तय हो जाय। हम लोग जो चाहते हैं, यदि आप दे दें तब।

जगत०—आज ही रातको कैसे ला सकते हो?

उत्तर—इसका भार हमारे ऊपर है—आपके राजी होनेमें देर हैं, हमारे करनेमें देर नहीं है।

जगत०—यहाँसे बूँदी कितनी दूर है।

उत्तर—पाँच कोस होगा।

जगत०—तब आज रात ही को जाकर लौट आना असम्भव है।

उत्तर—इसकी आपको क्या फिक्र है? आपको कामसे काम हैं। आप दो दो हजार देना स्वीकार कर लीजिये। फिर देखिये, हम काम बजा लाते हैं या नहीं।

जगत०—अच्छा, उस लड़कीको मेरे पास ला दो। मैं तुम्हें दो दो हजार रुपये दे दूँगा।

एकने कहा—"दो" "दो" हजार देने होंगे।

जगत०—अच्छा उतना ही दूँगा।

दूसरेने कहा—परन्तु पीछे हम लोग आपकी आना कानी नहीं सुनेंगे।



जगत०—जब मैं कहता हूं कि दूँगा तो और क्या फिक्र है।

तुरत ही तीसरा आदमी बोल उठा—"उसको हमलोग लाये हैं।"

अत्यन्त आश्चर्य और व्यग्रतासे जगतसिंह बोल उठे—लाये हो!

उत्तर—हाँ।

जगत०—किसको? बताओ तो सही।

उत्तर—जिसको आपने लानेको कहा था।

जगत०—वह कहाँ थी?

उत्तर—देखिये, अवसर मिल गया फिर हम उसे क्यों छोड़ने जाते। वह पोखरेके घाटपर कपड़ा धोने जा रही थी। हमने उसे चट पकड़ लिया। जो काम कल करना था, उसको हमने आज ही कर डाला।

जगत०—वह कहाँ है?

उत्तर—सो अभी हम क्यों बताने लगे।

ये बातें सुनकर रामपालसिंह अच्छी तरह समझ गये कि ये कमलाको ही चुरा लाये हैं। उन्होंने सोचा, शायद जगतसिंह कमलाको एक बारगी मार कर निष्कण्टक होना चाहता है। यही सम्भव है। नहीं तो कमलासे उसका दूसरा क्या वैर है।

जगतसिंह और वे तीनों आदमी सरायकी ओर बढ़ने लगे। रामपालको यह समझनेमें देर न लगी, कि सरायवालेका भी अवश्य ही इस षड्यन्त्रमें हाथ है। सरायमें पहुंचने पर

पीछेसे रामपालसिंहके घोड़ेकी टाप सुनकर बेचारे बदमाश चौंक उठे। उन्होंने सरायवालेसे इसका कारण पूछा। उसको भी आश्चर्य्य हुआ ; क्योंकि उस दिन किसी दूसरे आदमीकी उस सरायमें आनेकी बात न थी।

सरायरक्षक इससे अधिक कुछ भी न कह सका। थोड़ी ही देरमें एक बूढ़ा मतवाला लड़खड़ाता और लटपटाता हुआ वहाँ आ पहुंचा।

# छठवां परिच्छेद ।

## कमला फिर विपद्में ।

जगतसिंह और उसके तीनों साथियोंने बूढ़े मतवालेको देखा परन्तु उसपर कुछ ध्यान न दिया। वे आपसमें बातचीत करने लगे ।

बूढ़ा मतवाला बोला—ओ सरायवाला ! आज मेरे लिये एक घर खाली कर दो। देखो ! अब मैं खड़ा नहीं रह सकता। पैर अब यहीं रहना चाहते हैं।

सरायरक्षक—हटो ! हटो ! आज घर नहीं खाली होगा! पागलके लिये यहाँ घर नहीं है। मेरे सब घर भरे हुए हैं।

बूढ़ा मतवाला हाथ मुख चमकाकर नाचता हुआ कहने लगा—"कहे जाओ। कहे जाओ ! तोताकी सी तुम्हारी बोली बड़ी मीठी है। जरा तकलीफ करो भाई, अब मुझे उठनेको... ताकत नहीं है, यही लो मैं बैठता हूं ।"

सरायरक्षक—दूर हो, यहाँसे। यहाँ गोल माल मतकर। आज जगह नहीं मिलेगी। हटो, अपना रास्ता देखो।

बूढ़ा और उपाय न देखकर वहीं बैठ गया। नाना प्रकारका हाव भाव और मुख विकृत कर वह कहने लगा—"अच्छा! साला ! बाप ! देख यहाँ बैठता हूं। देखूं, कौन साला मुझे यहाँसे उठाता है ! यदि तुम काट कर खा जाओ तब भी मैं

एक डेग आगे नहीं बढ़ूंगा।" इतना कहकर बूढ़ा बड़ी बड़ी घासों पर पेटके बल लम्बा होकर लेट गया और थोड़ी ही देरमें उसकी नाकें बजने लगीं।

उसकी बात चीत और भावभङ्गीको देखकर किसीका भी उसपर सन्देह न हुआ। सरायवाला उसकी बुरी हालत देख-कर कुछ भी न कह सका। सबोंने सोचा, "जाने दो। बूढ़ा यहीं मुर्देकी तरह पड़ा रहे। इससे हमारा कोई नुकसान नहीं होगा।"

शराबीकी बुरी हालत देखकर निश्चिन्त चित्तसे चारों गुण्डे आपसमें बातें करने लगे। जब उनकी सारी बातें हो चुकीं तो उनमेंसे एक आदमी चुराई हुई लड़कीको लानेके लिये एक कमरेमें चला गया। सराय-रक्षक इन गुण्डोंका घोड़ा लानेके लिये अस्तबलकी ओर चला।

जगतसिंहके गुण्डोंने बातचीत करके यह तय किया, कि कुछ आदमी जगतसिंहके साथ घोड़ोंपर चढ़कर पहाड़के निकट-वर्त्ती गाँवतक जायँगे। वहाँ कमलाको एक गाड़ीमें चढ़ाकर रुपये पैसे लेकर वे लौट आवेंगे।

जो बूढ़ा पागल बनकर घासपर पड़ा पड़ा कुम्भ-करणी नींदमें खर्राटे ले रहा था, वह वास्तवमें पागल और बूढ़ा न था। वह सोता भी न था। यहाँ यह कह देना उचित होगा कि यह बूढ़ा और कोई नहीं, स्वयं रामपालसिंह जासूस थे। पाठकोंने सम्भवतः पहलेहीसे इसका अनुमान कर लिया होगा।

चारों गुण्डोंकी हरेक कार्रवाईपर रामपालसिंहकी सतर्क दृष्टि थी। परन्तु देखनेमें मालूम होता था, कि वह गाढ़ी नीन्दमें सो रहे हैं। वह इस समय सोच रहे थे, कि किस उपायसे काम लेना चाहिये। उन्हें अपनी चिन्ता न थी। अपना प्राण बचानेके लिये वह दस बीस पहलवानोंका सामना करनेसे भी न हिचकते। परन्तु इस समय उनके मनमें एक नई चिन्ता यह उठी थी, कि जिस बालिकाको ये लोग ला रहे हैं, वह यदि कमला ही हुई तो उसको किसी न किसी प्रकार छुड़ाना ही पड़ेगा। खुले तौर लड़ाई करनेकी अपेक्षा दूसरे ही उपायोंका अवलम्बन करना अच्छा होगा। क्योंकि सामना सामनी लड़ाई करनेमें यदि कहीं जखमी हो गया, तो मैं कमलाको किसी प्रकार न बचा सकूंगा—सर्वदाके लिये उससे हाथ धो बैठना पड़ेगा! नहीं, कदापि ऐसा न होने दूँगा—कमलाका भार जब मुझपर पड़ा है, तो अवश्य ही मैं उसकी रक्षा करूँगा। चाहे प्राण जाय चाहे रहे।

कमलाके ऊपर दिनपर दिन विपत्तिके पहाड़ टूटते जा रहे हैं। जब वह अबूझ बच्ची थी उसी समय विमाताने धन-सम्पत्तिके लोभसे उसको दूर देशमें छोड़वा दिया। इसके बाद वहाँ जीती रही या मर गयी, इसकी भी खबर लेने कोई न गया। सौभाग्य वश यदि मँगरू उधर न जा पहुंचता तो सर्वदाके लिये उसका अस्तित्व ही मिट गया था। वहाँसे लौट कर आते ही भीमकी नजर उसपर पड़ी। वह उसके

सौन्दर्य्य पर मोहित होकर उसके पीछे पड़ गया। कितनी ही आरजू-मिन्नत, कितने हीं लोभ-लालच और कितने ही भय-डर दिखलाये, पर कमलाने एक वार ही घृणासे मुँह फेर लिया। भीमसिंहने उसके पालक पिता समरसिंहके सामने भी अपना प्रस्ताव पेश किया, परन्तु वहाँसे भी उसे निराश ही होना पड़ा। अन्तमें अनन्योपाय होकर उसने हिंसावृत्तिका अवलम्बन किया। उसने संकल्प किया, कि जिस प्रकार होगा, मैं कमलाको अपनी अर्द्धाङ्गिनी बनाऊंगा। प्रेमने अब हिंसाके वशवर्त्ती होकर अपना जाल फैलाना आरम्भ किया। उसने कमलाको कैद किया। उसका जो फल हुआ, वह पाठकोंको मालूम ही है। रामपालकी सहायतासे उस वार किसी प्रकार उसकी रक्षा हुई। इसके दस दिन जाते न जाते यह नयी बला कहाँसे आ धमकी। ईश्वर जाने इसका क्या अर्थ है? यह भीमकी करामात तो नहीं है! परन्तु वह तो इस समय कैदमें है। एक डर है जगतसिंहका! कमलाको जीवित जानकर, अपनी सम्पत्तिको निष्कण्टक करनेके लिये, वह उसको पकड़वाकर हत्या कर सकता है। हाय! धन ही सब दुःखोंकी जड़ है! यदि कमलाकके पास धन न होता तो इस प्रकार उसे दुःख न भोगना पड़ता।

घटना स्रोतमें पड़कर मनुष्य कहाँसे कहाँ चला जाता है। क्या से क्या हो जाता है—इसकी उसे आशा भी नहीं होती। यदि ऐसा न होता तो क्या जासूस रामपाल जैसे एक आसा-

धारण सम्भ्रान्त आदमीके साथ एक अभागिनी राजपूत कन्या-का परिचय हो सकता था। उनके समान गण्यमान्य मनुष्यको क्या पड़ी थी, कि वह एक दुःखिनी अबलाकी रक्षा करनेके लिये अपना जीवन-प्रण कर भीषण डाकुओंका सामना करने जाते। यह भी एक बड़े आश्चर्य्यकी बात है, कि दोनों ही वार घटना क्रमसे रामपालसिंह विपत्तिसे उसका उद्धार करनेके लिये ठीक समय पर हाजिर मिले हैं। मानों पहले ही से विपत्तिकी सूचना उन्हें मिल चुकी थी।

कुछ देर बीत जानेपर एक रोमाञ्चकारी दृश्य सामने आया। उस हृदय विदारक और वीभत्स दृश्यको देखकर पत्थरका हृदय भी पिघल जा सकता था।

उस लोमहर्षण दृश्यको देखकर रामपालसिंह जैसे धीर, स्थिर और बुद्धिजीवी मनुष्यका भी सिर चक्कर खाने लगा।

नग्न प्रायः कमलाको, दो डाकू घसीटते हुए जगतसिंहके सामने ले आये। रामपालसिंह एक वार देखकर ही उसे पह-चान गये। कमला रोती हुई कह रही थी—"हाय! तुम लोग मुझे एक वार ही मार क्यों नहीं डालते? इस प्रकार जला जलाकर मारनेसे तुम्हें क्या मिलता है? मैंने. तुम लोगोंका क्या बिगाड़ा है, कि तुमलोग मुझे इतनी पीड़ा दे रहे हो! हा भगवान! तुम्हारा ऐसा एक भी सुपुत्र नहीं जो मेरी लाज बचावे!"

जगतसिंहने बाधा देकर कहा—"मैं तुम्हारी रक्षा करने लिये तैयार हूं; परन्तु वे तीन हैं और मैं अकेला हूं।"

रामपालकी इस समय प्रबल इच्छा हो रही थी, कि ज़मीनसे उठकर तुरन्त अपना कपट वेश खोल डालें और कमलाके पास जाकर कहें कि—डर नहीं कमला! मैं यहाँ हाजिर हूं। तुम्हारा कोई नुकसान नहीं कर सकता। परन्तु रामपालसिंहने इस समय ऐसा करना युक्ति-सङ्गत न समझा। वह चुपचाप पड़े हुए अवसरकी प्रतीक्षा करने लगे।

कमलाका क्रन्दन और अनुनय-विनय सुनकर उसकी व्याकुलता और घबड़ाहट देखकर रामपालसिंहकी छाती फट रही थी। अब वह धीरज न रख सके। वह चाहते थे, कि बाघकी तरह एक छलाङ्गमें शैतानोंके सिर पर चढ़ बैठूं और सबको टुकड़े टुकड़े कर काट डालूँ, परन्तु अपनी यह इच्छा भी उन्हें हृदयमें ही रोक रखनी पड़ी। परन्तु अब उन्होंने निश्चेष्ट होकर पड़े रहना उचित न समझा। एकाएक जमुहाई लेकर वह जाग उठे! जागनेमें उनका एक और भी खास मतलब था। वह कमलाको जताना चाहते थे, कि मैं भी यहाँ हाजिर हूं। तुम्हें कोई चिन्ता नहीं। इतना मालूम हो जानेसे अभागिनीको कुछ ढाढ़स बँध सकता था। इसलिये सहसा उनकी कपट निद्रा भङ्ग हो गयी।

अर्थ लोलुप डाकुओंके सामने अभागिनी कमला हृदयभेदी क्रन्दन और करुण प्रार्थना कर रही है। उसकी एक मात्र यही

प्रार्थना है, कि "मुझे एक बारगी मार डालो या छोड़ दो। क्योंकि मैंने किसीका कुछ भी नहीं बिगाड़ा है।" कमला मन-ही-मन सोच रही है—शायद फिर मैं भीमके अनुचरोंके हाथमें पड़ गयी हूं। इस वार मेरी रक्षा नहीं है।"

जासूस रामपालसिंह लटपटाते हुए सबके बीचमें जाकर खड़े हो गये और लड़खड़ाती हुई आवाजमें मुख टेढ़ा कर बोले—ओः! इस मैनाको छोड़ दो, उड़ जाय! क्यों तुम लोग उसको पकड़ कर दिक कर रहे हो? तुम लोग आदमी भी खाते हो क्या।"

कमला चिल्ला कर रोती हुई बोली—"मुझे बचाइये, बचाइये। मेरा कोई दोष नहीं है। इन लोगोंका मैंने कुछ भी नुकसान नहीं किया हैं। ये लोग मुझे जबर्दस्ती पकड़ लाये हैं! मार डालेंगे—"

कमला अधिक न बोल सकी। उसका गला भर आया।

रामपालसिंहने मतवालेकी तरह सिर हिलाकर कहा—"तुम इन लोगोंके साथ जाना नहीं चाहतीं? क्यों नहीं जातीं—क्या ये लोग तुम्हें खा जायँगे? अच्छा तो मैं ही पहले चख लूँ। सचमुच तुम्हारा माँस बड़ा मजेदार होगा। मैं तुम्हारा कान ही काट लूंगा। क्यों ठीक?"

इतना कहकर मतवाले रामपालसिंह लड़खड़ाते हुए कमलाकी ओर बढे और मुंह फैलाकर सचमुच कान काट लेनेके लिये उद्यत हुए। डाकू मतवालेका पागलपन देख हँस रहे

थे। उन लोगोंने बाधा न दी। उन्हें तो बालिकाके प्रति स्नेह या ममता न थी, जिससे वे शराबीको रोकते। इसलिये राम-पालसिंह कान काटनेके बहाने कमलाके कानोंमें मक्खीकी तरह भनभनाने लगे—"कोई डर नहीं, मैं आया हूं।"

इसके बाद रामपालसिंहने फिर लड़खड़ाती हुई आवाजमें कमलासे पूछा—"तुम इनके साथ जाना नहीं चाहतीं? क्यों, तुम्हें जाना होगा?"

कमलाने उत्तर दिया—"नहीं नहीं, मैं इनके साथ नहीं जाऊंगी। कभी नहीं जाऊंगी। ये डाकू हैं! खूनी हैं। मुझे चुराकर कर लाये हैं और मारनेकी तैयारी कर रहे है। मैंने अपने कानों सुना है।"

कमलाने इस प्रकार उत्तर दे दिया। परन्तु उस बूढ़े मत-वालेके कुछ साधारण इशारोंसे ही वह समझ गयी, कि जासूस रामपालसिंह यहीं हैं। इतनी देरके बाद कमलाकी जानमें जान आयी। इतनी देरके बाद उसे पूरा विश्वास हो गया, कि अब उसका कोई भी अनिष्ट नहीं कर सकता। क्योंकि रामपाल-सिंहकी शक्तिका उसे एक बार अच्छी तरह परिचय मिल गया था। उस समयसे उसे पूरा विश्वास हो गया था, कि रामपालके लिये कुछ असम्भव नहीं है—वह सब कुछ कर सकते हैं।

रामपालसिंहने कहा—"नहीं जाना चाहती हो तो मत जाना। इसमें झगड़ेकी क्या बात है! (डाकुओंकी ओर देखकर)

क्यों भाई साहबो, इस लड़कीको लेकर तुम क्यों खैंचातानी कर रहे हो। इसे छोड़ क्यों नहीं देते हो ?"

इतना सुनकर एक डाकूने रामपालके सामने पिस्तौलका निशाना साध कर कहा—"तू कौन है। यहाँसे दूर हट। मत-वाला कहींका। तुझे इससे क्या मतलब ? यदि फिर पञ्चायत करने आया तो सिर तोड़ दूँगा।"

पिस्तौल देखते ही रामपालसिंह मानों भयसे थर थर काँपते हुए एक ओर सिमट गये और काँपते हुए स्वरमें बोले—"हटाओ बाबा! पिस्तौल हटाओ। नाकके सामने पिस्तौल खड़ा कर तुम दिल्लगी कर रहे हो क्या ? या खून करोगे ?"

# सातवां परिच्छेद ।

---

## मतवालेकी चाल ।

डाकू जोरसे हँसकर बोल उठा—"जरूर खून करूंगा, तू हरेक कामोंमें दखल क्यों देने आता है?"

रामपाल—धत् तुम तो बड़ा डरपोक है। मैं तो बूढ़ा हूं, परन्तु मैं एक थप्पड़में तेरी खोपड़ी उड़ा दे सकता हूं।

जगतसिंह और तीनों डाकू ठहाका मार कर हस पड़े।

एक डाकूने कहा—अच्छा जाओ, भाई तुम्हारी बहादुरीसे हमें कोई काम नहीं है। तुम अपना रास्ता नापो।

रामपालने मुख टेढ़ा कर कहा—"मैं यों ही नहीं जानेका। मैं इस लड़कीको ले जाऊंगा।"

जगतसिंहके पोशाक-परिच्छेद रईस आदमी कैसे थे। तिसपर भी वह अपनी बात-चीत और हाव-भावसे दिखला रहा था, कि मैं डाकुओंके षड़यन्त्रमें शामिल नहीं हूं। रामपालसिंह अच्छी तरह इस बातको जानते थे; परन्तु उसके पेटकी बात जाननेके लिये ढलमलाते हुए उसके पास गये और बोले—"आप तो देखनेसे भलेमानस मालूम पड़ते हैं। इस प्रकारका अत्याचार निश्चय ही आप सहन न कर सकेंगे। मैं प्रस्ताव करता हूं कि

हम दोनों जने चेष्टाकर इन डाकुओंके हाथसे इस बेचारी लड़कीको छुड़ा लें।"

जगतसिंहने रामपालके कानमें कहा—"उन लोगोंसे झगड़ा करनेका मेरा साहस नहीं है। हाँ, कह सुनकर यदि आप उनसे छुड़ानेकी चेष्टा करिये तो ऐसा करनेको मैं राजी हूं। दूसरेके कारण हमें सिरपर आपदा लेनेकी क्या आवश्यकता है?"

रामपालसिंह—भलमनसाहतसे लड़कीका छुटकारा होना कठिन काम है। पत्थरका हृदय पिघल सकता हैं परन्तु इन पिशाचोंका कभी भी नहीं पिघल सकता।

जगतसिंह—चलिये, इनके नाम मुकद्दमा दायर किया जाय।

रामपाल०—और तबतक ये लोग लड़कीको लेकर नौ दो ग्यारह हों।

जगतसिंहने उसकी बातका कोई उत्तर न देकर एक डाकूको संकेत किया। उसने रामपालके पास जाकर क्रोध पूर्वक कहा—"देख बूढ़ा, अब जरा भी गोलमाल किया तो मैं तुझे गोली मार दूँगा।"

रामपालने मतवालेकी तरह कहा—"मैं एक डेग भी न हटूँगा, देखूं तू क्या करता है! मैं इस लड़कीको साथ लेकर ही इस जगहसे हटूंगा।"

रामपालसिंहकी यह बात सुनते ही एक डाकू उनको धक्का देनेके लिये आया। जैसे ही उसने हाथ फैलाया, वैसे ही बूढ़ेके धक्केसे उसीको चित पटाङ्ग होकर गिर जाना पड़ा।

बाक़ी दोनों डाकू अपने साथीकी यह दशा देखकर गुस्सेसे लाल पीले होकर बूढ़ेको आक्रमण करनेके लिये दौड़े। रामपालसिंहने तुरत पीछे हटकर अपने अङ्गरखेसे दो-नली दो पिस्तौलें निकाल कर, उन दोनोंके सामने रखीं। डाकू पिस्तौलको देखकर विस्मित और स्तम्भित हो गये। रामपालसिंहने कहा—"आओ, जिसको साहस हो, आगे आओ, एक एक गोलीमें मैं सबकी खोपड़ी उड़ाता हूं।"

यह घटना देखकर जगतसिंहने तुरत उस घरकी बत्ती बुझा दी। कमरेके अन्धकारको भेदकर कमलाकी कातर क्रन्दन ध्वनि सुन पड़ी। मालूम हुआ, कोई उसके साथ खैंचातानी कर रहा है। फिर तुरत ही एक आवाज हुई। शायद कोई दरवाजा खोलकर कूद पड़ा है। ऐं! घोड़ेकी टाप! कोई भाग रहा है!! पकड़ो पकड़ो, चोर भागा!

रामपाल समझ गये कि कमलाको लेकर कोई भाग गया है। उन्होंने खिड़की खोलकर पिस्तौलकी तीन आवाजें कीं। एक डाकू भागनेकी चेष्टा कर रहा था गोलीकी चोट खाकर वह गिर पड़ा।

रामपालसिंह झट कमरेसे निकलकर अपने घोड़ेके पास गये और क्षण भर भी देर न कर उन्होंने घोड़ेको दौड़ा दिया। चलते समय उन्होंने देखा था, कि जगतसिंहका घोड़ा अभी यथा स्थान बंधा है। तो फिर यह भागा कौन है? घोड़े पर चढ़ते ही उन्होंने दो तीन आवाजें और कीं और घोड़ेकी लगाम

ढोली कर उसको जोरसे दौड़ा दिया। रास्तेमें रह रह कर वह बराबर गोली चला रहे थे।

इधर जगतसिंह, सरायरक्षक और दोनों डाकू बूढ़ेकी यह कार्रवाई देखकर किंकर्त्तव्य विमूढ़ होकर वहीं बैठे रह गये।

सरायवालेने कहा—यह क्या महाशय, यह बूढ़ा तो कोई साधारण आदमी नहीं मालूम पड़ता है।

जगतसिंह--यह दूसरा कोई नहीं। यह जासूस रामपाल ही हैं। वह मेरे पीछे पीछे यहाँ आया है।

एक डाकू—यदि यह बात ठीक हो तो आप कमलाको पानेकी आशा छोड़ दें। क्योंकि रामपाल जरूर ही हिम्मत-सिंहसे कमलाको छुड़ा लेंगे। साथ ही यदि हिम्मतसिंहको भी जानसे हाथ धो देना पड़े तो इसमें भी कोई आश्चर्य्यकी बात नहीं है।

डाकूने ठीक ही बात कही थी। जो आदमी अकेला ही सैकड़ों कालान्तिक यमदूत सदृश डाकुओंका सामना करनेकी स्पर्धा करता है, हिम्मतसिंहको हराना उसके लिये कोई बड़ी बात नहीं। हिम्मतसिंह तो उसके सामने गिनतीमें कुछ भी नहीं है। उसके हाथसे कमलाका उद्धार करना उसके लिये कोई कठिन काम नहीं है।

जगतसिंह और वे दोनों डाकू भी तुरत अपने अपने घोड़े पर सवार होकर रामपालसिंहके पीछे दौड़ पड़े। परन्तु आगेके दोनों घोड़े तबतक बहुत दूर निकल गये थे। ये लोग उनका

पता न पा सके। जगतसिंहने निराश होकर कहा—"यह जरूर ही जासूस रामपाल हैं—हम लोगोंका षड़यन्त्र इतने दिनोंके बाद निष्फल हुआ !"

वे लोग फिर सरायमें लौट आये।

इधर रामपालसिंह रात्रिके भीषण अन्धकारमें पथरीले रास्तेपर जी जानसे घोड़ा दौड़ाये जा रहे हैं। इस समय उनके सामने एक जीवन मरणकी समस्या उपस्थित है। जिस आशङ्कासे उन्होंने गुप्त वेश धारणकर उनसे छेड़ छाड़ करना उचित नहीं समझा था, आखिरकार एक जरासी भूलके कारण वही हो गया है। उन्हें पहले हीसे खटका लगा था, कि इन डाकुओंको जरा भी सन्देह होगा तो वे कमलाको लेकर भाग जायँगे। घटनावश रामपालसिंहको बाध्य होकर छेड़-छाड़ करनी ही पड़ी। इतना ही नहीं, उन्हें एक प्रकारसे अपना उग्र रूप भी प्रकट कर देना पड़ा। यह देखकर हिम्मतसिंह नामक डाकू समझ गया था, कि यह अवश्य ही रामपालसिंह हैं। वह फुर्तीसे कमलाको घोड़े पर चढ़ाकर चलता बना था। रामपालसिंह भी समझ गये थे कि अब कमला जरा भी आँखसे ओझल हुई कि ये लोग उसे मार डालेंगे। क्योंकि कमलाके जीते रहनेसे अब जगतसिंहका षड़यन्त्र सफल होनेकी कुछ भी सम्भावना नहीं है। इसलिये जगतसिंह उसको संसारसे उठा देनेमें किसी प्रकारकी भी कोर कसर न रखेगा। जो डाकू कमलाको लेकर भागा है ( हिम्मतसिंह ) उसको भी यह बात

मालूम है। अवसर पाते ही वह कमलाका प्राण नाश कर सकता है, क्योंकि ऐसा करनेसे जगतसिंहसे अपना प्राप्य पुरस्कार पानेकी उसे पूरी सम्भावना है। यही सोचकर रामपालसिंह घोर अन्धकारमयी रजनीमें अपनी जान हथेली पर रखकर डाकूके पीछे दौड़े जा रहे हैं।

सवेरा हो गया—तथापि रामपालसिंह हिम्मतसिंहको पकड़ न सके।

घोड़ोंकी टापोंका चिह्न देखकर, उन्होंने निश्चय कर लिया, कि डाकू राजेश्वरी पर्वत मालाकी ओर गया है। इसलिये उस वक्त उन्होंने पीछा न किया। राजेश्वरी पर्वतमालामें जानेके लिये उन्हें सीधा रास्ता मालूम था, जिससे वह थोड़ी ही देरमें वहाँ पहुँच सकते थे। थोड़ी देर आराम कर लेने और शराबीका वेश बदलकर कोई दूसरा वेश ग्रहण कर लेनेके लिये उन्होंने पास की एक सरायमें प्रवेश किया।

# आठवां परिच्छेद ।

## कपटवेश ।

दिनके दोपहरका समय है। राजेश्वरी पर्वतमालाके एक गुप्त निकुञ्जमें, दश बारह डाकू एक साथ बैठे हुए आपसमें बात चीत कर रहे हैं! इसी समय मोतीसिंह नामका एक डाकू वहाँ आ पहुँचा। पाठक समझ रखें, कि यह मोती भी पहले होके समान नकली है।

यहाँपर दो बातें कह देनेकी आवश्यकता है। पहले कहा ही जा चुका है, कि भीमसिंह सभी दलोंका सरदार था। परन्तु उसके अधीनस्थ सभी दल एक स्थानपर नहीं रहते थे। वह भिन्न भिन्न स्थानोंपर भिन्न कामोंको लेकर बिखरे हुए रहते थे। इन छोटे छोटे दलोंका भी एक एक मुखिया रहता था। उसीके हुक्ममें दलके और सब डाकू रहते थे। परन्तु इन सभी दलोंका एक ही नियम, एक ही संकेत और एक ही पोशाक होती थी। एक छोटेसे दलमें भरती किया हुआ डाकू, यदि दूसरे किसी दलमें जाकर उन संकेतों और नियमोंका सफलता पूर्वक वर्णन कर सकता था, तो वह अवश्य ही विश्वास्य समझा जाता था। अपने दलके लोगोंके सिवा किसी दूसरेके सामने प्राण

जाने पर भी कोई डाकू अपना संकेत और नियम न बताया करता था। किसी नये आदमीको अपने दलमें भर्त्ती करते समय डाकुओंका सरदार बड़ी कड़ी परीक्षा लेता था। यह परीक्षा महीनों क्या बरसोंतक जारी रहती थी। जब तक नया डाकू अपने विश्वासका पूरा परिचय न दे देता था, तबतक उस परसे सरदार तथा अन्यान्य डाकुओंकी कड़ी निगाहें जरा भी न हटती थीं। इससे पाठक सहज ही समझ सकते हैं, कि डाकुओंका यह दल कितना सुव्यवस्थित और सुशृङ्खलित भावसे परिचालित हो रहा था।

रामपालसिंहकी प्रतिभाका यह फल था, कि वह स्वयं भीमसिंहकी कड़ीसे कड़ी परीक्षाओंमें सफलता पूर्ण उत्तीर्ण हुए और उसके हृदयपर विश्वासका सिक्का जम गया। रामपालसिंह भीमसिंहके दलमें गुप्त वेशमें बहुत दिनोंसे मिले हुए थे। अपरिचित डाकुओंसे परिचित होनेके सभी नियम, कायदे और संकेत उन्हें मालूम थे। मोतीसिंह और रामपालसिंह दोनों व्यक्ति एक ही हैं—यह बात भीमसिंह और उसके साथ कैद होनेवाले डाकुओंके सिवा और किसीको भी अभी मालूम नहीं हो पाया था। मालूम होता कैसे? जितने लोग इस रहस्यके जानकार थे, वे तो उसी समय कैदकी कोठरीमें बन्द हो गये, फिर मोतीसिंहका रहस्य कौन बताता? और भी एक बात है—हिम्मतसिंहका दल दक्षिण प्रदेश और मध्य प्रदेशसे बहुतसा धन लूट



कर अभी लौटा आ रहा है। उसे भीमसिंहकी गिरफ्तारीके

बारेमें कुछ भी रहस्य मालूम नहीं हो पाया है। हिम्मतसिंह मोतीसिंहको पहले ही से जानता था, परन्तु उसकी पिछली कारवाईयोंसे अपरिचित था इसलिये रामपालसिंह मोतीके वेशमें हिम्मतके सामने गये। आवश्यकीय संकेत, पोशाक और नियम कानून ठीक ठीक बता देनेके कारण हिम्मतसिंहके ऊपर उसने सन्देह न कर उसे अपने दलमें मिला लिया।

बहुत थोड़े ही समयमें मोतीसिंहने अपने नये सरदारसे परिचय बढ़ा लिया और उसके साथ अपने दुःख सुखकी बातें करने लगे।

उन्होंने ही पहले पहल भीमसिंहकी गिरफ्तारीकी खबर उसे सुनायी। हिम्मतसिंहको अपने नायककी गिरफ्तारीसे दुःख तो जरूर हुआ, परन्तु खुशी भी कम न हुई। क्योंकि समस्त दस्युदलकी सरदारीका पद अब उसीको मिलने वाला था। उसके समान योग्य और बहादुर दूसरा कोई भी डाकू न था। हिम्मतसिंह भीमकी तरह डरपोक और कायर नहीं है, यह बात रामपालसिंहको अपने निजी अनुभवसे अच्छी तरह मालूम थी। एक बार उन्होंने किसी पर्वत शिखरपर उसे पकड़नेकी चेष्टा की थी, परन्तु जब वह एक हाथमें बन्दूक और एक हाथमें तलवार लेकर खड़ा हुआ तो रामपालसिंहको तनिक भी साहस न हुआ, कि उसपर आक्रमण करें। हिम्मत-सिंह भी यद्यपि उसपर आक्रमण न कर सका था, परन्तु निर्भीक चित्तसे वह वहांसे भाग जरूर सका था। उसी समयसे

हिम्मतसिंहने उत्तर प्रदेशसे भागकर दक्षिण प्रदेशमें शरण ली थी। रामपालसिंह उसी समयसे हिम्मतसिंहके साथ सम्मुख समर करनेका अवसर ढूँढ़ रहे थे। वह उसकी वीरताका मन-ही-मन आदर किया करते थे। आज घटनावश दोनोंका साक्षात हो गया है। देखें क्या परिणाम निकलता है ?

अन्यान्य वार्त्तालापके बाद हिम्मतसिंहने पूछा—"अच्छा मोतीसिंह, जासूस रामपालने तो हमलोगोंका सर्वनाश कर डाला। क्या हम लोग किसी प्रकार उसको काबूमें नहीं कर सकते हैं ?"

मोतीसिंह—क्यों नहीं कर सकते हैं ? परन्तु दुःखकी बात है भी कि कभी अच्छा मौका ही नहीं, मिलता। वह अगमजानी है या क्या है ? हम लोगोंकी सभी बातें वह जान जाता हैं। कल मैंने उसको पकड़ा भी था पर कुछ कर न सका।

हिम्मतसिंहने विस्मित होकर कहा—"कल तुमने उसको देखा था ? कहाँ, बताओ तो सही।"

मोती०—बूँदीगढ़ जानेके रास्तेपर।

हिम्मत०—कैसी पोशाकमें देखा था ?

मोती०—बूढ़ा बनकर कपटवेशमें जा रहा था ?

हिम्मत बोल उठा—"तुम ठीक कहते हो, वही था।"

मोती०—क्यों ? क्या तुमसे भी उसकी भेंट हुई थी ?



हिम्मत०—सिर्फ भेंट ही हुई थी ! उसने मुझे ऐसे घातपर

पकड़ा था कि यदि मैं थोड़ी देर और वहाँ ठहरता तो अवश्य ही उसके हाथसे मेरी जान जाती।

मोती०—तो क्या तुम्हीं जगतसिंहकी बातोंपर विश्वास कर यूँ दीगढ़से एक लड़कीको चुरा लाये हो?

हिम्मतसिंह—तुम्हें कैसे मालूम हुआ?

मोती०—मैं ही नहीं जानता? जगतसिंहने तो पहले मुझ पर ही इस कामका भार सौंपना चाहा था परन्तु मैंने स्वीकार नहीं किया। जगतसिंहको क्या मैं नहीं जानता? एक बार और भी मैंने उसका एक काम कर दिया था, परन्तु उसने एक पैसा भी नहीं दिया—पक्का जुआचोर है। एक बात और है—जिस लड़कीको तुम लाये हो, जासूस रामपाल उसकी देख-रेख कर रहा है। धड़में प्राण रहते वह उस लड़कीका उद्धार करनेकी चेष्टा करेगा। यदि रुपया न मिले तो कौन ऐसी जोंकीके काममें हाथ देने जायगा?

हिम्मतसिंह—जगतसिंहपर तुम विश्वास नहीं करते हो?

मोती०—कहो, कैसे करूँ? जो आदमी काम कराकर मजूरी नहीं देता उस पर विश्वास कैसे किया जाय? इसके सिवा जिस लड़कीके पीछे वह पड़ा है, उसपर किसी प्रकारका अत्याचार करनेहीसे रामपालकी कोप-दृष्टिमें पड़ना होगा। वह सहज ही छोड़ न देगा। भीम तो उसी लड़कीके कारण दल समेत सत्यानाशको पहुंचा। हमलोग भी जानबूझ कर कूपमें क्यों कूदें।

हिम्मतसिंहने जरा भयभीत होकर पूछा—क्या कहते हो?

भीमसिंह इसी लड़कीके कारण पकड़ा गया है ? तब तो मैंने बड़ी झोंकीके काममें हाथ डाला है। अच्छा, यदि लड़कीको बचानेपर जासूस रामपाल इतना तुला हुआ है, तो वह जगतसिंहको क्यों नहीं सीधा कर देता ?

मोती०—तुम क्या नहीं जानते ? कल रातको जगतसिंह बाल बाल बच गया है

हिम्मतसिंहने आश्चर्य्यके साथ पूछा—"सो कैसे ?"

मोती०—क्यां बताऊं, एक भयानक काण्ड हो गया था। अन्तमें बेचारेको मान अपमान सिरपर रखकर रातों रात भागना पड़ा । तब कहीं जाकर उसकी जान बची थी। भागने पर भी रामपालने उसका पीछा न छोड़ा ! उसके पीछे पीछे वह भी घोड़ेपर चढ़कर लूँदीगढ़को दौड़ा। मैं तो यह देखकर चुपकेसे सरक गया। इसके सिवा जगतसिंह पर मेरा क्रोध था, इसलिये मैंने रामपालसे कोई छेड़छाड़ नहीं की। वह जुआचोर बदमाश मारा जाता तो मेरा क्या बनता बिगड़ता। मैं तो यही चाहता ही था।

हिम्मतसिंहका मोतीसिंह पर पहले जो कुछ भी सन्देह था, वह उसकी सभी बातें सुनकर दूर हो गया। मोतीसिंहने इस प्रकार बात चीत करके अपना एक मतलब गाँठ लिया। उन्हें एक बात यह भी मालूम हो गयी कि कमला अभी हिम्मत-सिंहके यहाँ ही कैद है। दूसरा काम यह हुआ, कि जगतसिंह  परसे हिम्मतसिंहका विश्वास जाता रहा।

# नवां परिच्छेद ।

## खोज।
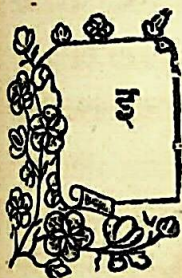
इस प्रकार हिम्मतसिंह और मोतीसिंह उर्फ जासूस रामपालमें बहुत देरतक बातचीत होती रही। हिम्मतने कहाँ, किस प्रकार, किस जगह डकैती की और कैसे छापा मारा, इन सब बातोंका विस्तृत वर्णन उसने रामपालसिंहको कह सुनाया। जासूस रामपालने भी खोद खोद कर सभी बातें उसके पेटसे बाहर निकाल लीं। हिम्मतसिंह मोतीसिंहके साथ बड़े विश्वासी मित्रकी तरह पेश आया। ऐसे भीषण डाकुओंके दलमें जासूस रामपाल असहाय अवस्थामें आनेका कभी साहस कर सकता है, इसकी वह कल्पना भी नहीं कर सकता था।

धीरे धीरे शाम हो गयी। पार्वतीय रात्रिका भीषण अन्धकार क्रमशः फैलने लगा। डाकू खा पीकर सो गये। जासूस रामपालने भी वैसा ही किया। हिम्मतसिंहकी बगलमें ही वे भी सो कर खर्राटें लेने लगे।

परन्तु रामपालसिंहकी निद्राको स्वान निद्रा न कह कर एक बारगी उन्नीद्र ही कह देना अच्छा है। उन्होंने जागते समय देखा था, कि हिम्मतसिंहने एक आदमीको बुलाकर चुपकेसे कुछ हुक्म दिया था। इसके बाद वह आदमी भोजन-सामग्री

लेकर एक ओर चला गया। वह समझ गये थे, कि वह भोजन सामग्री कमलाके ही लिये भेजी गयी थी। यद्यपि उन्हें कमला-का कैदखाना अब भी मालूम नहीं हो सका था, परन्तु रास्ता मालूम हो जानेके कारण, अब वह एक प्रकारसे निश्चिन्त हो गये थे। उन्होंने सोच रखा था, उधर जाकर खोज करनेसे ही उसका पता मिल सकता है? यही सोचकर निद्राका बहाना किये हुए, वह सबके सो जानेकी प्रतीक्षा करने लगे।

आधी रातके समय जो डाकू शिविरके बाहर पहरा दे रहे थे, उनमेंसे एकने आकर हिम्मतसिंह और अन्यान्य डाकुओंको उठाया।

हिम्मतसिंहने पूछा—क्या हुआ है?

पहरेदार डाकू बोला—जगतसिंह नामक एक आदमी आपसे भेंट करना चाहता है। हमने तो अपनी बन्दूककी गोलीसे उसे उड़ा ही दिया था परन्तु ठीक समय पर हमारी संकेत सूचक वंशी बजानेके कारण वह बच गया है।

हिम्मत—उसको यहाँ लिवा लाओ! वह हमारा आदमी है। उससे हमारा एक काम है।

कुछ देरके बाद जगतसिंहको लेकर डाकू पहरेदार लौट आया।

जगतसिंहने आते ही पूछा—"वह लड़की अभी हाथसे निकलने तो नहीं पायी है न?"



हिम्मतसिंह—नहीं।

जगत—एक आदमीने तुम्हारा पीछा किया था। क्या तुम्हें मालूम है ?

हिम्मत—हाँ मालूम है।

जगत—वह कौन है, सो भी जानते हो ?

हिम्मत—कौन है ?

जगत०—जासूस रामपाल।

हिम्मतसिंह आश्चर्य्यसे बोल उठा—"आप क्या कहते हैं ? खैर, अच्छा ही हुआ है। इस वार मैंने उसको धता बता दिया है।"

जगत—अभी कुछ भी नहीं कहा जा सकता। मैं एक वार उस लड़कीको देखना चाहता हूं। बिना देखे मेरा सन्देह दूर नहीं हो सकता।

हिम्मत०—क्या मुझपर आपका विश्वास नहीं होता ?

जगत०—विश्वास-अविश्वासकी बात नहीं हैं। चलो, देख आवें।

इसी समय हिम्मतसिंहने मोतीसिंहके लिये चारों ओर देखा। किन्तु वह न मिला। जगतसिंहको ओर देख कर उसने कहा—"आप मोती को जानते हैं ?"

जगत०—मोती कौन ?

हिम्मत०—वही जिस पर आपने पहले इस कामका भार सौंपना चाहा था।

जगत०—नहीं, मैंने तो पहले किसीको भी इस कामके करनेके लिए नहीं कहा था।

हिम्मत०—किसीको नहीं कहा था ? यह कैसी बात है ? वह गया कहाँ ?

हिम्मतसिंह शीघ्रतासे उठकर चारों ओर मोतीसिंहकी खोज करने लगा। जगतसिंहने पूछा—क्यों ? बात क्या है ?

हिम्मत०—एक आदमीने आकर सभी बातें ठीक ठीक कहीं। आपसे उसका परिचय है, आपने उसको धोखा दिया है, मजदूरी के रुपये नहीं दिये, ऐसी ही बहुत सी बातें उसने कही थीं। उसने भीमकी भी खबर दी थी। हमलोगोंका संकेत, कायदा, कानून सब कुछ उसने ठीक ठीक बतलाया था। कपड़े लत्ते भी हम लोगोंके समान ही थे। वह आदमी कहां गया ?

हिम्मतसिंह फिर अत्यन्त अधीर होकर इधर उधर दौड़ धूप मचाने लगा। परन्तु मोतीसिंहका कुछ भी पता न चला। अन्तमें निराश होकर उसने कहा—"भाग गया ! जरूर यह वही धोखेबाज है। तुम्हारे बारेमें उसने बहुतसी बातें कही थीं। इसलिये तुम्हें आते देखकर ही वह नौ दो ग्यारह हो गया है।" जगतसिंह अपने सिरपर हाथ रखकर बैठ गया। भग्नोत्साह होकर दुःखके साथ उसने कहा—"यदि यह सब बातें सच हों तो वह लड़की भी नहीं है। मैं दश हजारकी बाजी रखनेको तैयार हूं। यदि वह आदमी भाग गया होगा तो वह लड़कीको भी लेता गया होगा।"

हिम्मत०—हाय ! इतनी देरके बाद समझमें आया है।

यह भी जासूसकी एक चालाकी है। क्या ही पक्का धूर्त्त है। एक साथ ही खाया पकाया—एक ही साथ सोया—फिर गलेमें छुरी देकर चलता बना। ऐसा चालाक और कौन होगा ? मुझे खूब छकाया है।

इसके बाद हिम्मतसिंहने जगतसिंहसे गत रात्रि की समस्त बातें कह सुनायीं। सुनकर जगतसिंहने एक बार उस गुप्त स्थानको अपनी आँखोंसे देखना चाहा, जहां कमला कैद की गयी थी।

हिम्मतसिंह निरुत्साह भावसे उसको एक पुराने खण्डहरमें ले गया और एक छोटीसी कोठरी दिखलाकर चिल्ला उठा—"नहीं है। नहीं है! भाग गयी! हाय! ईश्वर !!"

क्रोध और क्षोभसे दाँत पीसते हुए हिम्मतसिंहने कहा—"मैं तो भूत नहीं मानता हूं परन्तु जासूस रामपालकी कार्यवाही देखकर उसे भूत कहे बिना मैं नहीं रह सकता। जान पड़ता है, कि भूतसे भी अधिक वह शक्तिशाली है। धन्य है रामपाल !! तुमको धन्य है !!"

अच्छी तरह अपना सन्देह दूर कर लेनेके लिये हाथमें प्रकाश लेकर जगतसिंह कोठरीमें घुस गये और कोने अन्तरेको अच्छी तरह देखने लगे। देखते देखते जमीनपर पड़ा हुआ एक कागज टुकड़ा मिला—हिम्मतसिंहने जोरसे पढ़कर हिम्मतसिंहको सुना दिया। वह लिखा था :—


मैंने दुःखिनी कमलाकी देख-रेखका भार अपने ऊपर लिया

है। इस समय मैं ही उसका संरक्षक हूं। यदि कोई उसपर अत्याचार करेगा तो मैं उसे अपना सबसे बड़ा शत्रु समझूंगा। कालकी तरह मैं उसके पीछे पीछे रहूंगा, वह कहीं भी भागकर मेरे हाथसे नहीं बच सकता—सावधान! कोई मरनेके लिये आगमें न कूदे!

सरकारी जासूस—राजा रामपालसिंह।

इस पत्रको सुनकर जगतसिंहका मुँह सूख गया। छाती धड़कने लगी—श्वास प्रश्वास धीरे धीरे चलने लगे। वह सोच रहे थे-क्या कमलाके बारेमें रामपालसिंहको सभी बातें मालूम हो गयी हैं? कमला किसकी लड़की है, उसकी सम्पत्ति कौन भोग रहा है? ये सब बातें क्या उसको मालूम हो गयी हैं? क्या सचमुच उस सम्पत्तिका उद्धार करनेके लिये वह कटिबद्ध हो गया है? यदि ऐसा हो तो मेरे सुखके दिन जाते रहे।

यद्यपि अदालतमें बार बार जगतसिंहकी जीत हुई है। यद्यपि वर्तमान कमला असली कमला प्रमाणित नहीं हो सकी है तथापि जब जासूस रामपालने उसकी भलाई बुराईका भार अपने ऊपर लिया है, तब अवश्य ही अब पासा पलटनेवाला है। जगतसिंह मुकद्दमा खतम होनेके बाद ही से नाना उपाय कर कमलाको अपने अधिकारमें लानेकी कोशिशें कर रहा था। जबतक समरसिंह बीमार नहीं हुए थे, तबतक उसकी सारी चेष्टाएँ उन्होंने व्यर्थ की थीं। उनके बीमार होनेके बाद ही कमला पर नयी नयी विपत्तियाँ आयी थीं।

इतने दिनोंके बाद जगतसिंहकी समझमें आया कि अब समस्त पापोंका प्रायश्चित्त अवश्यम्भावी है। इस बार बच निकलना बहुत कठिन है। क्योंकि जासूस रामपाल आजतक कभी विफल मनोरथ नहीं हुए हैं। कमलाकी सम्पत्तिका उद्धार करना उनके लिये कोई बड़ी बात नहीं है। जगतसिंहकी समस्त आशाओंपर पानी फिर गया। वह अधीर होकर जोरसे बोल उठा—"चलो, हम अभी रामपालका पीछा करेंगे। वह अभी दूर नहीं गया होगा। जो रामपालका खून कर कमलाको मेरे हाथ सौंप सकेगा, उसको मैं दश हज़ार रुपये पुरस्कार दूँगा। हम लोग इतने आदमी मिलकर क्या एक आदमीको नहीं मार सकेंगे? जरूर मार सकेंगे।"

सभी डाकू दौड़ पड़े। क्षण भरमें घोड़ोंकी टापोंसे समस्त राजेश्वरी पर्वत माला गूँज उठी।

# दशवां परिच्छेद.

## कमलाका उद्धार।

पाठकोंको स्मरण होगा, कि डाकू जिस समय सो रहे थे, उस समय रामपालसिंह खर्राटे लेते हुए कमलाके छुटकारेके लिये उपाय सोच रहे थे। जब उन्होंने देखा, कि एक आदमी भी जागता नहीं है, तब वह धीरे धीरे धीरे अपने बिछौनेसे उठकर कमलाकी खोजमें चले। कुछ दूर अग्रसर होते ही उन्होंने देखा, कि पहाड़की आड़में एक बहुत बड़ा पुराना खण्डहर है। एकाएक देखनेसे वह खण्डहर पुराने किलेकी तरह मालूम पड़ता था। सम्भवतः पुराने जमानेमें कोई शक्तिशाली राजा इस पर्वत-प्रासादमें गरमीके दिनोंमें रहा करता था। परन्तु बहुत दिनोंसे अब उसमें कोई नहीं रहता, इसलिये वृहत्प्रासाद जङ्गलमय हो गया है।

खण्डहरके दरवाजेपर पहुँचते ही किसीकी अस्फुट क्रन्दन-ध्वनि उनके कानोंमें पड़ी। उन्होंने अनुमान किया—"जरूर यहीं डाकुओंने कमलाको कैद किया है। बेचारी न जाने कितने कष्ट सह रही होगी!" बिजलीकी तरह दौड़कर वह मकानमें घुस गये और देखा कि सामनेका बड़ा आँगन जङ्गल झाड़ियोंसे भरा हुआ है। सिर्फ सदर फाटककी दोनों बगल दो छोटे छोटे कमरे रहने लायक हैं। दाहिने बगलकी कोठरीसे

एक अस्फुट क्रन्दन ध्वनि आती हुई मालूम हुई। वह तुरत दौड़कर उस कमरेमें पहुंचे। कोमल स्वरमें पुकारा—"कमला! कमला! तुम यहीं हो?"

कमलाने पूछा—आप कौन हैं?

रामपाल०—कमला! पहचानती नहीं। मैं रामपाल हूं। आओ, तुम मेरे साथ तुरत चली आओ। बिलम्ब करनेका समय नहीं है।

कमलाने अत्यन्त उत्सुकतासे पूछा—"आप आये हैं? तब मुझे कोई डर नहीं हैं। आप जरूर मेरा उद्धार करेंगे! आइये, मेरी रक्षा कीजिये। इन लोगोंने मुझे बाँध रखा है।"

रामपालसिंहने तुरत दियासलाईसे बत्ती जलायी और कमलाको अवस्था देखी। उसके हाथ पैर बाँधकर पिशाचोंने उसे अशक्त कर छोड़ दिया था। रामपालसिंहने जेबसे छुरी निकाल कर रस्सियोंको काट डाला। कमला उठकर खड़ी हो गयी।

रामपालने कहा—"कमला, चली आओ! यहाँ बातें करनेका समय नहीं है।"

कमला एक शब्द भी न बोली। रामपालका हुक्म मानकर वह चुप चाप उनके पीछे चली। प्राणभयसे झाड़ियोंकी आड़में लुकते छिपते वे दोनों बहुत दूर निकल गये। जब वे दोनों एक निरापद स्थानमें पहुंच गये तो रामपालने पहले मुँह खोला। उन्होंने कहा "अब कोई डर नहीं है। हम लोग सुरक्षित स्थानपर पहुंच गये हैं। राजेश्वरी पर्वत मालासे बाहर निकलनेके दो रास्ते

मुझे मालूम हैं। परन्तु डाकुओंको एक ही मालूम है। आओ, हम दोनों थोड़ी देर तक यहीं छिप रहें। डाकू हम लोगोंको खोजते हुए इसी रास्तेसे आयेंगे। उन लोगोंके आगे बढ़ जाने पर हम लोग दूसरी ओरसे चले चलेंगे और यदि वे लोग इस रास्तेसे नहीं आये तो दूसरा उपाय ढूंढ़ना होगा। हमलोग जिस रास्तेसे आये हैं, डाकुओंको वह रास्ता मालूम हैं। यहाँसे थोड़ी ही दूरपर मेरा घोड़ा बँधा है। मैं समझता हूं कि तुमको न पाकर डाकू अवश्य ही समझ जायँगे कि मैं आया था और मैं ही तुमको छुड़ा ले गया हूं। अतः वह मुझे पकड़नेके लिये अवश्य ही इसी रास्तेसे दौड़ पड़ेंगे। यदि वे लोग इधरसे आये तो हमें कोई डर नहीं है। हमको वे देख न सकेंगे।"

कमलाने कातर स्वरसे कहा—इससे अच्छा तो यह हैं कि हम लोग दूसरे रास्तेसे भाग चलें।

रामपाल०—यदि दूसरे रास्तेसे हम भागने जायँ तो हमें पैदल ही जाना होगा। उस रास्तेसे घोड़ा नहीं जा सकता है। इसी रास्तेसे यदि हम लोग एक वार घोड़ेपर चले गये तो हम लोगोंको कौन पकड़ सकता है ?

अतएव कमला भी इससे सहमत हो गयी। रामपालसिंहने जैसा सोचा था वैसा ही हुआ। डाकू दल बाँध कर "पकड़ो! मारो" करते हुए उसी रास्तेसे आगे बढ़ गये। अब रामपालसिंह निश्चिन्त होकर अपने घोड़ेके पास गये और अपने पीछे कमलाको घोड़ेपर बैठाकर घोड़ेको जोरसे दौड़ा दिया।

कमला उद्धार।

[ देखिये—पृष्ठ संख्या १६२

# ग्यारहवां परिच्छेद ।

## अन्य चेष्टा ।

इस वार कमलाका उद्धार करके रामपालसिंह बूँदी-गढ़ न गये ।

पर्वतकी दूसरी बगलमें समतल भूमिपर एक छोटा सा नगर बसा हुआ था। इस नगरमें कमलाकी पैत्रिक भू-सम्पति और एक बड़ा मकान था। बड़े बड़े राजप्रासाद भी उसकी शान और चमक दमकके सामने तुच्छ मालूम होते । नौकर-चाकर, गाड़ी-घोड़े, असवाब पत्र, आदि सभी विलास और आरामकी चीजें वर्तमान थीं । हाय ! किसका धन और कौन भोगे । यह समस्त ऐश्वर्य्य आज जगतसिंह भोग रहे हैं । कमला निराश्रय होकर इधर उधर भटक रही है ।

रामपालसिंहने उसी नगरमें पहुंच कर कमलाको वहां की पुलीसकी देख-रेखमें छोड़ दिया और आप उसकी सम्पत्तिके लौटानेके लिये आवश्यक प्रमाणोंको संग्रह करने लगे ।

जगतसिंह घर लौटकर सम्पत्ति-रक्षाकी चिन्ता करने लगे । उनके रास्तेमें रामपाल ही सबसे बड़ा कण्टक रह गया है । उसकी जड़ मूलसे उखाड़े बिना उसका निस्तार नहीं। अतः वह सोचने लगे—सबसे पहले रामपाल ही को संसारसे उठाना चाहिये, चाहे जिस प्रकार हो ।

जगतसिंहकी सबसे पहले दृष्टि पड़ी भीमसिंहपर। एक मात्र वही डाकू इस कामके उपयुक्त है। यद्यपि अपनी थोड़ीसी असावधानीके कारण वह रामपालके जालमें फँस गया है तथापि वह वीर तथा निःशङ्क योद्धा है। इस वार यदि वह किसी प्रकार कैदसे छूट जाय तो वह भीषण प्रतिशोध लेगा। भीषण भुजङ्गकी तरह इस वार वह रामपालको अपने विष दन्तोंसे काट खायेगा। हम सभी लोगोंकी सम्मिलित शक्तिके सामने रामपालसिंह कितने दिन अक्षत शरीर रह सकता है। अतएव भीमसिंहको किसी तरह छुड़ा देना ही चाहिये।

परन्तु भीमको कैदसे छुड़ानेका उपाय कहां है?—नहीं। इसमें अपने पकड़े जानेका भय है। रामपालकी पुलीस बड़ी खैरखाह है। दूसरा उपाय है, खुले तौर पर रातके समय कैदखानेपर आक्रमण कर देना। परन्तु इसके लिये भी हम लोग तैयार नहीं है। क्योंकि प्रकाश्य भावसे मैं तो इस कामसे हस्तक्षेप कर ही नहीं सकता। फिर दूसरा कौन ऐसा डाकू है, जो सेना नायकका काम कर सके। एक है हिम्मतसिंह, पर उसका भी दल बहुत छोटा है। तिसपर भी वह बात बातमें मुझसे हुज्जत किया करता है। उसके मुखमें "राम और बगलमें छुरी रहती है।" इसलिये यह उपाय भी कार्य्यकरी नहीं है। अब एक उपाय है—गुप्त रूपसे भीमसिंहको जेल खानेसे भगा लेना। हाँ, इसी उपायका अवलम्बन करना चाहिये। जिसमें साँप भी मरे और लाठी भी न टूटे।"

# बारहवां परिच्छेद ।

## जासूसपर जासूसी ।

धर चार पाँच दिनोंसे रामपालसिंह पर कैसी गुजर रही है, उनका जीवन कितना सङ्कटमय हो रहा है, यह पाठकोंको अभी मालूम नहीं हो पाया है। साधारणतः हमारे युवक जासूसके कार्य्यकलाप दूसरोंके लिये दुर्बोध्य और दुर्ज्ञेय होते हैं। कब वह क्या करते हैं, किस अभिप्रायसे कौन चाल चलते हैं, यह किसीको मालूम नहीं होने देते। उनके रहस्यमय और कल्पनातीत होनेका एक और भी कारण है। आजतक कोई शत्रु उनपर जासूसी करनेका साहस नहीं कर सका है। आज-तक उनके जितने प्रतिद्वन्द्वी थे, वे उनका नाम सुनते ही "यः पलायति स जीवति" की नीति वर्त्तने लगते थे। परन्तु यह आश्चर्य्यकी बात है, कि चार पाँच दिनोंसे तीन आदमी हरवक्त छायाकी तरह उनका पीछा करते हैं। यह रामपालसिंहकी विशेष सतर्कताका फल है, कि इतने दिनोंके भीतर वे लोग उनका कुछ भी नहीं कर सके हैं। परन्तु उनके हावभाव और चेष्टासे यह साफ मालूम होता है कि जासूसकी जान ही पर उनका विशेष लक्ष्य है। ये तीनों ही नरराक्षस रामपालका

गर्म खूंनके बहुत प्यासे मालूम होते हैं। जब कभी रामपाल किसी निर्जन स्थानसे होकर जाते हैं, तब तीनों प्रेत आत्मायें बाजकी तरह तीन दिशाओंसे झपटती हैं, एकाधिक बार इस प्रकारकी संकट पूर्ण अवस्थासे बाल बाल बचनेके कारण अब रामपालसिंह विशेष सावधान हो गये हैं। सच पूछिये तो अब उनके निर्भीक हृदयमें भी भयका संचार हो गया है।

अब उन्होंने समय असमय बाहर भीतर निकलना बन्द कर दिया है। यदि किसी विशेष कारणसे वह कभी निकलते भी हैं, तो अस्त्र शस्त्रोंसे खूब सुसज्जित होकर और अपने विश्वस्त अनुचरोंको सावधान कर।

इतनी आपद विपद होते हुए भी रामपालसिंह अपने कर्त्तव्य कर्मसे विरत नहीं हुए हैं। भीतर ही भीतर कमलाकी सम्पत्तिके उद्धार की चेष्टा जारी हैं। आज कल वह प्रमाण संग्रह करनेकी फिक्रमें लगे हुए हैं। बूँदी गढ़ पत्र लिखकर उन्होंने समरसिंहको बुला लिया है। उनके साथ मंगरू भी आया है। बहुत परिश्रमके बाद उस पापी राजपूतका भी पता लगा है जिसने लोभ लालचवश कमलाको इलाहाबादके पास त्याग दिया था। वह भी आजकल रामपालके यहां ही जाकर रहता है। इस बार वह ईमान धर्मसे गवाही देनेके लिये तैयार है।

इन सब प्रमाणोंको संग्रह कर एक दिन रातके वक्त रामपालसिंह अपने मकानसे बाहर निकले। उनका घरसे निकलना



और शत्रुओंके जालमें कूदना दोनों एक ही बात थी। वह अच्छी

तरहसे जानते थे कि शत्रु हरवक्त मेरे मकानके पास घूम रहे हैं। वे मेरा प्राणनाश करनेके लिये व्याकुल हो रहे हैं। इतना जानते हुए भी आज वह निर्भीक होकर धीर गम्भीर भावसे विस्तीर्ण राजपथके बीचसे होकर जा रहे हैं। कुछ दूर जाते न जाते सहसा एक धीमी वंशीकी आवाज हुई। किसीने तत्क्षण वैसी ही आवाजमें उत्तर दिया। रामपालसिंह निर्भीक और प्रस्तुत होकर धीरे धीरे अग्रसर हुए। तीक्ष्ण दृष्टिसे वह शत्रुओंके कार्य्य-कपालको देखते जा रहे थे। सहसा उनकी वगलसे होकर दो काली सूरतें बिजलीकी तरह निकल गयीं।

रामपालसिंहका हृदय सहसा काँप उठा। यद्यपि पहले ही से उन्हें विपदकी आशङ्का थी परन्तु विपद्को सामने देख-कर उनका विचलित होना बिल्कुल स्वाभाविक था। वह जिस रास्तेसे जा रहे थे, वह बहुत ही निर्जन था। आगे वह रास्ता और भी संकीर्ण हो गया था। उन्होंने देखा कि इस रास्तेसे चलना बिल्कुल निरापद नहीं है परन्तु पीछे फिरनेसे भी कुशल नहीं है। पींछे लौटते ही डाकू हमला करेंगे। अच्छा यही है, कि जहांतक हो सके आगे वढ़नेकी चेष्टा की जाय। ऐसा सोचकर वह जरा पाँव बढ़ाकर आगे ही वढ़ने लगे। थोड़ी दूर जानेपर वगलमें एक शरावकी दूकान मिली। वे निधड़क उसीमें घुस पड़े। सौभाग्यवश उनका एक चर वहाँ उपस्थित था। उस चरको गुप्तवेशमें देखकर रामपालसिंह तो उसे

पहचान न सके परन्तु इनको उसने पहचान लिया और अन्य-मनस्क भावसे टहलता हुआ इनके पास आया।

संकेतसे परिचय हो जानेके बाद रामपालसिंहने धीरेसे पूछा—"यहाँ क्या प्रयोजन हैं हनुमानसिंह !"

हनुमान०—आपने जिसका पीछा करनेको कहा था मैं उसीके पीछे पड़ा हूं।

रामपाल०—यहां हमारा और कोई आदमी है।

हनुमान०—चार पाँच आदमी हैं।

रामपाल०—तुम्हारे पास पिस्तौल ?

हनुमान०—है।

रामपाल०—मुझे दो। मेरे पास एक है। वह भी "सिंगल" है। तुम लोग सभी जने तैयार रहो। अभी एक कठिन काम करना होगा। जिस पर मैंने नजर रखनेको कहा है, देखना वह हाथसे जाने न पावे। तैयार रहो, मैं अभी आता हूं।

रामपालसिंह पिस्तौल लेकर फिर रास्तेपर उतर आये।

शराबखानेमें दश बारह आदमी मतवाले बने हुए थे। परन्तु उनमें जो शराब न पीकर मतवालापन दिखला रहे थे, वे सभी रामपालके अनुचर थे। वे किसी गूढ़ उद्द्देश्यसे मतवालोंमें मिले हुए थे।

रास्तेमें घोर सन्नाटा छाया हुआ था। कहीं मनुष्यका नामो-निशान भी न था। आस पासकी बस्तियाँ चोर डाकुओंसे भरी हुई थीं। वहां भले आदमीका एक घर भी नहीं था! इस

स्थानपर हरेक आदमीका हृदय भयसे काँप उठता था। साधारण मनुष्य तो इधर आनेसे डरा ही करते थे पर रामपालसिंहने निर्भीक हृदयसे उस डरावनी बस्तीमेंसे प्रवेश कर अपने अलौकिक साहस और बीरताका परिचय दिया। खासकर उस हालतमें जब यमराजके जैसे दो खूँखार डाकू उनके खूनके प्यासे होकर उनके पीछे पीछे आ रहे थे।

यह भी जान रखनेकी बात है, कि जगतसिंहने अपूर्व कौशल और बुद्धिमानीसे भीमसिंहको कैदखानेसे भगा लिया है। हिम्मत-सिंह और जगतसिंहकी सहायतासे भीमसिंह निर्भीक होकर अपने जीवनकी माया त्यागकर प्रतिशोध लेनेके लिये रामपालसिंहके पीछे पड़ा हुआ है। रात दिन उसकी शानदार छुरी और टोटा भरी बन्दूक रामपालका प्राणनाश करनेके लिये तैयार रहती है। परन्तु अपने दुर्भाग्यवश इतने दिनोंमें प्रतिद्वन्दी अनेकों वार पंजेमें आकर भी अपूर्व कौशलसे वच निकला है। परन्तु अन्ततः वह जायगा कहाँ? जिघांसा वन्हिमें उसे जलकर भस्म होना ही पड़ेगा।

# तेरहवां परिच्छेद ।

——:*:——

## भीमसिंह ।

भीमसिंह एक रईस घरानेकी सन्तान है। शिक्षा दीक्षा भी उसकी अच्छी हुई है, बूँदीगढ़में ही उसकी भी पैत्रिक सम्पत्ति है। बचपनसे ही वह कमलाके साथ खेला कूदा है। इसके बाद माता-पिताके मरने पर उसका चरित्र बिगड़ गया। चोर डाकुओंके संसर्गमें रहनेके कारण उसका स्वभाव बहुत कठोर और निर्दय हो गया। धर्म भाव जाता रहा। इसी समय जगतसिंहसे उसका परिचय हुआ। जगतसिंह कमलाको इलाहाबाद भेजकर एक प्रकारसे निश्चिन्त हो गया था। परन्तु जब समरसिंहने कमलाका अधिकार साबित करनेके लिये मामला दायर किया तब जगतसिंहको बेचैनी हुई। उसने कमलाका पता लगानेके लिये भीमसिंहको इलाहाबाद भेजा। भीम इसके पहले ही से कमलाको जानता था। वह उसकी बाल सखी थी परन्तु उस समय तक भीमसिंहको यही मालूम था कि कमला समरसिंहकी ही लड़की है।

परन्तु जगतसिंहने भीमसिंह पर विश्वास करके सारी गुप्त बातें कह डाली थीं। उसी समयसे लालचवश भीमसिंह

कमलाके हस्तगत करनेकी गुप्त चेष्टामें लगा। ऊपरसे वह दिखलाता था कि वह जगतसिंहके लिये कमलाको वशमें करनेकी चेष्टा कर रहा है, परन्तु वास्तवमें स्वयं ही अतुल भूसम्पत्तिका अधिकारी होनेके फेरमें था। इसीलिये कमलासे व्याह करनेके लिये भी वह व्यग्र हो उठा था, नहीं तो पापीके हृदयमें सात्विक प्रेम कहांसे आया ?

भीमने लालचवश जगतसिंहसे कमलाके सभी दलील दस्तावेज चालाकीसे अपने हाथमें कर लिये। जगतसिंहने भीमका भीतरी मतलब न समझ कर अपने कागज पत्रोंको निरापद करनेकी इच्छासे भीमसिंहके यहां रख दिया। उसने सोचा था कि यदि कभी सरकार मेरे अधिकारके सम्बन्धमें सन्देह करके मेरे घर खानातलाशी करेगी, तो ये कागज पत्र उसके हाथ लगेगें और इनके द्वारा कमलाका स्वत्व अनायास प्रमाणित हो जायगा। इसलिये पहले ही से सावधान होना अच्छा है। भीमसे बढ़ कर दूसरा विश्वासी कौन है? उसीके पास ये कागज पत्र रख दिये जायँ ऐसा सोचकर उसने भीमके यहाँ कागज पत्र रख दिये।

पहले ही कहा गया है, कि भीम लिखना-पढ़ना अच्छी तरह जानता था। उसने कागज-पत्रोंको पढ़कर समझा कि इन्हें अदालतमें पेश करने ही से कमला सब धन सम्पत्ति पा जायगी। इसलिये काँटेसे ही काँटेको निकालनेका विचार कर उसने कागज-पत्रोंको खूब सावधानीसे छिपाकर रख लिया

और मुखमें राम बगलमें छुरी लेकर वह जगतसिंहको सहायता करने लगा। एक ओर जगतसिंह कमलाको कब्जेमें लानेके लिये नाना उपायोंका अवलम्ब कर रहा था, दूसरी ओर भीमसिंह कमलासे विवाह करनेके लिये जाल फैला रहा था।

रामपालसिंहने राजेश्वरी पर्वत मालासे डाकुओंके हाथसे कमलाको छुड़ाकर पहले अपने थानेपर उसको रखा था फिर, समरसिंहके बूँदी गढ़से आनेपर एक मकान किराये पर लेकर उनके गुप्त रूपसे रहनेका प्रवन्ध कर दिया था। उस मकानमें चारों तरफ बागीचा था, बस्तीसे यह कुछ दूरीपर अवस्थित था अतः रामपालसिंहने पहले अनुमान किया था कि डाकू यहाँ तक न पहुंच सकेंगे।

उपरोक्त मकानमें उन्होंने कमला, समरसिंह और मँगरूको बहुतसे सिपाहियोंकी देखरेखमें रख दिया था। हर रोज वह स्वयं वहाँ जाकर उन्हें देख आते थे। उन्होंने बड़ी आशा की थी कि शीघ्र वह कमलाकी धन सम्पत्ति लौटाकर बूढ़ेकी आशा और अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करेंगे, परन्तु एक दिन उन्होंने जाकर देखा कि उनकी पल्लवित आशापर ओले पड़े हुए हैं। मकानके दरवाजे पर पहुंचते ही उन्होंने देखा कि हाथ पैर बँधे हुए उनके गुप्त वेशी दो चर सीढीके नीचे अचैतन्य अवस्थामें पड़े हुए हैं। तुरत उन्होंने उन दोनोंका बन्धन खोल कर उनके मुखमें पानी दिया। उनके होशमें आनेपर बिना कोई बात

पूछे ही वह मकानके भीतर दौड़ गये। जाकर देखा कि एक कमरेमें फर्श पर समरसिंह अचेत होकर पड़े हुए हैं।

बहुत चेष्टाके बाद समरसिंहका ज्ञान लौटता हुआ मालूम हुआ। अब इनके जीवनकी कुछ आशा देखकर रामपालसिंह जरा शान्त हुए और अपने दोनों अनुचरोंको जो सीढ़ीके नीचेसे उठकर अब उनके पास आ पहुँचे थे पूछा—क्या बात है?

एकने उत्तर दिया—हम लोग जैसे रोज फाटक पर पहरा देते थे वैसे ही दे रहे थे। सरदार खाने गये थे। हम लोग दोनों जने आमने सामने खड़े होकर आपसमें दो चार सुख दुःखकी बातें कर रहे थे कि सहसा दो आदमियोंने पीछेसे हमारा हाथ पकड़ कर हमारा मुख बन्द कर दिया। उस कपड़ेमें एक प्रकारकी एक बहुत ही कड़ी दुर्गन्ध थी। उसी दुर्गन्धके कारण हम लोगोंका दम घुटने लगा था और हम लोग बेहोश होकर गिर पड़े थे। इसके बाद क्या हुआ सो हमें कुछ भी मालूम नहीं।

दूसरे अनुचरने भी ठीक ऐसी ही बात कही! अतएव उन्होंने इतना ही जाना कि कमसे कम दो आदमियोंने इन दोनोंको पकड़ा था और क्लोरो फार्मकी सहायतासे इन्हें बेहोश कर दिया था।

———

# चौदहवां परिच्छेद.

---*---

## फिर विपद।

मरसिंह अकबका कर देख रहे हैं परन्तु कोई बात उनकी समझमें नहीं आती। अब भी उनकी बेहोशीका धुँधलापन दूर नहीं हुआ है। अभी उनको अपनी अवस्था और पूर्वापर घटनाका अच्छी तरह स्मरण नहीं होता। सहसा विस्मृतिका पर्दा उनको आँखोंके सामनेसे हट गया। रामपालसिंह और उनके अनुचरोंको वह तुरत पहचान गये। पहचानते ही जोरसे वह रो उठे और रोते रोते बोले—"रामपाल तुम आये हो? देख जाओ। अब की वार मेरा सर्वनाश हो गया! अब कमला नहीं मिल सकती।

रामपालसिंह बहुत पहले ही समझ गये थे। उन्होंने पूछा—कौन ले गया है?

समर—सो मुझे क्या मालूम? वह कौन थे, यह भी नहीं कह सकता। कहीं कुछ भी न था, एकाएक न जाने कहाँसे दश बारह आदमी घरमें घुस पड़े। वे देखनेमें सभी गुण्डों जैसे मालूम होते थे। सभी डरावनी सूरत वाले थे। तुमने मुझे मना किया था, इसलिये यहाँ आनेके बादसे मैं कभी घरसे बाहर नहीं निक-

लता था, उन लोगोंने घरमें घुसते ही पहले कमलाको झपट कर पकड़ लिया। कमला डरकर चिल्ला उठी। मैं उन्हें बाधा देनेके लिये उठ ही रहा था कि एक आदमीने आगे बढ़कर मेरे नाकके सामने दुर्गन्धसे भरा हुआ एक रुमाल रख दिया। उसकी कड़ी गन्धके नाकमें घुसते ही मेरा साँस रुक गया। मैं तुरत बेहोश होकर गिर पड़ा। बहुत चोट लगने पर शरीर जिस तरह अवसन्न हो जाता है, ठीक वैसे ही अर्द्ध-चेतनावस्थामें लेटा हुआ मैं पड़ा रहा।

उस समय मुझे मालूम हुआ कि अभागिनी कमलाको वे लोग घसीटते हुए लेकर चले गये। हाय! हाय! कैसा सर्वनाश हुआ! कमला क्या फिर डाकुओंके हाथमें पड़ गयी? इस बार जरूर ही वे उसको जीती न छोड़ेंगे।

रामपालसिंह उठकर खड़े हो गये। कमरेसे बारह निकलते हुए उन्होंने पूछा—मँगरू कहा है?

समर—क्या मालूम कहाँ गया है? वह शामको हम लोगोंके लिये खाना लाने गया था, तबसे लौटकर नहीं आया है। उसका क्या हुआ कौन जाने?

समरसिंहकी बात पूरी होते न होते न जाने कहाँसे मँगरू साँस रोककर दौड़ता और चिल्लाता हुआ आ पहुँचा। आते ही उसने कहा—"ऐं! रामपालसिंह यही हैं? हम लोगोंका सर्वनाश हो गया! कमलाको फिर डाकू चुरा ले गये हैं। अहा! बेचारीको इस बार काट डालेंगे।

जरूर काट डालेंगे! भैया रामपाल! कहो तो भाई! क्या उपाय है?"

बूढ़ा मँगरू हाँफता और रोता हुआ, इतने शब्द कहकर काँपता हुआ फर्श पर बैठ गया।

रामपाल बोले—बात करनेका समय नहीं है। मुझे अभी जाना होगा। डाकू कमलाको कहाँ ले गये हैं, यह मैं अच्छी तरह समझता हूं। मेरी जान जाय तो जाय, परन्तु मैं कमलाका उद्धार करके ही लौटूंगा। आप लोग यहीं रहिये।

इतना कहकर रामपाल पागलकी तरह दौड़े। जीवनमें उन्हें अनेकों आपदायें और सङ्कट झेलने पड़े हैं परन्तु इतना अधीर और विचलित वह कभी भी नहीं देखे गये हैं। अपने पीछे पीछे अपने एक अनुचरको दौड़ते देखकर उन्होंने उससे कहा—कोई डरकी बात नहीं है। मेरे लिये तुम कोई फिक्र न करो। मेरे साथ आनेकी तुम्हें कोई जरूरत नहीं। लौट जाओ, और थानेसे दश बारह सिपाहियोंको लेकर तुम समरसिंहके मकानपर पहरा दो।" इतना कहकर रामपालसिंह शीघ्रता पूर्वक चले गये। सभी लोग उनकी भीषण उन्मत्त मूर्त्ति देख कर स्तम्भित हो गये। बहुत देरतक किसीको कुछ बोलनेका साहस न हुआ। अन्तमें समरसिंहने मँगरूकी ओर देखकर पूछा—"मगरू, तू इतनी देरतक कहाँ था!"

मँगरू अब बहुत कुछ आपेमें आ गया था। उसने धीरे



धीरे उत्तर दिया—मैं आपका खाना लेनेके लिये दूकान पर

खड़ा था, इतनेमें एक आदमीने निकट आकर मुझसे पूछा—"तुम्हारा ही नाम मँगरू है न ? तुम क्या समरसिंहके यहाँ रहते हो ?" मैंने कहा—"हाँ" उसने कहा—"तब जल्दी जल्दी मेरे साथ आओ।" मैं कुछ भी न समझ सका और बोला—"बात क्या है ? जल्दी जल्दी मैं कहाँ आऊँ ?" उसने कहा—"बात करनेका समय नहीं है। रामपालसिंह निकट ही एक मकानमें मर रहे हैं, देरी होनेसे उन्हें जीता न देख सकोगे। वह तुम्हारे हाथ कमलाके कागज़ पत्र देकर कुछ बातें कह जाना चाहते हैं। तुम अब देरी न करो, दौड़ कर इस गाड़ीपर चढ़ जाओ।"

रामपालसिंह मर रहे हैं—यह बात सुनकर मैं कुछ भी सोच न सका। झटपट गाड़ीपर चढ़ कर मैं बैठ गया, वह आदमी भी साथ ही साथ मेरी बगलमें आकर बैठ गया। तुरत गाड़ी हवाकी तरह चलने लगी। कुछ दूर जाने पर दो आदमी और आकर गाड़ीके पायदानपर चढ़ गये और गाड़ीकी खिड़कीको बन्द कर दिया। उन्हें देखते ही भीतर वाले आदमीने तुरत अपनी बगलसे एक चमकता हुआ छुरा निकालकर कहा—"मेरा नाम भीम डाकू है। जरा हिला या डोला या चिल्लाया कि मैं यह छुरा तेरी कोखमें भोंक दूँगा।" मैं हका बका होकर उसकी ओर ताकता रह गया।

समरसिंह विस्मय और भय मिश्रित उत्सुकता पूर्वक बोल उठे—"फिर ! फिर ! क्या हुआ ?"

मँगरू—फिर शहरको पारकर वे लोग मुझे एक निर्जन बागीचेमें ले गये। बागीचेमें एक मकान था, उसीमें ले जाकर मुझे उतारा।

समर०—इसके बाद ?

मँगरू—वहीं एक कोठरीमें मुझे बन्दकर वे सभी ताला लगा चले गये। करीब एक घण्टे तक मिहनत करके जङ्गलेका एक छड़ काटकर मैं निकल आया हूं। रास्तेमें आते समय मैंने देखा है, कि उसी गाड़ीमें फिर किसीको लेकर वे खूब जोरसे गाड़ी दौड़ाये जा रहे हैं। मुझे तुरत सन्देह हुआ कि हो न हो यह कमलाको ही ले जा रहे हैं। मैं गाड़ीके पीछे पीछे थोड़ी दूर तक दौड़ता गया। परन्तु मैं बूढ़ा आदमी, कहाँतक गाड़ीके पीछे पीछे दौड़ता। मैं पीछे पड़ गया। परन्तु मैं लौटा नहीं। बहुत दूर जानेके बाद गाड़ी एक बहुत बड़े मकानके सामने जाकर खड़ी हो गयी और उन लोगोंने एक स्त्रीको गाड़ीसे नीचे उतारा। मैं देखते ही पहचान गया, वह कमला थी। मैं अकेला बूढ़ा आदमी उन पहलवान गुण्डोंसे छेड़छाड़ करना उचित न समझ, निरुपाय होकर लौट आया हूँ। मैं थाने पर भी गया, सोचा था, रामपाल मिलेंगे तो सब हाल उनसे कहूँगा। उनके सिवा हमारा दूसरा कौन सहायक है ? परन्तु थानेपर मालूम हुआ है, कि वहाँ नहीं है। वहाँसे दौड़ा हुआ, मैं यहीं आ रहा हूं। सौभाग्यवश रामपालसिंह भी यहीं मिल गये हैं।"

इतना कह बूढ़ा "कमला कमला" कह कर चिल्ला चिल्लाकर रोने लगा। समरसिंह भी फिर अधीर होकर रो उठे।

# पन्द्रहवां परिच्छेद ।

———*———

## जैसेको तैसा ।

जासूस रामपालसिंहने शराबखानेसे निकल कर क्या किया था, यह अभीतक नहीं कहा गया है।

वह धीरे ही धीरे बहुत दूरतक अग्रसर हो गये। आगे या पीछे उन्होंने किसीको भी न देखा। अचानक पिस्तौलकी आवाज हुई। "सों सों" करती हुई एक गोली उनके कानके पाससे होकर चली गयी। उन्होंने समझा, कि डाकू सम्मुख आक्रमण न कर दूरसे मारनेकी चेष्टा कर रहे हैं। इस प्रकारकी मृत्युके लिये वह तैय्यार न थे। इसलिये उन्हें जरा सावधान होना पड़ा।

रास्तेके किनारे एक बहुत बड़ा मकान तैयार हो रहा था। उसीकी नींव देनेके लिये एक बहुत लम्बा गढ़ा खोदा गया था! उन्होंने झट एक उपाय सोच लिया। एक छलांगमें कूदकर वह उसीमें जा गिरे। जिन दोनों डाकुओंने आरम्भ से ही उनका अनुसरण किया था, वे छिपे छिपे यहाँतक पीछा करते चले आये थे। परन्तु एकाएक उनको न देखकर उन दोनोंने समझा कि अवश्य ही रामपाल चोट खाकर जमीन पर गिर पड़े हैं। बड़े उल्लासके साथ वे दोनों उधर ही दौड़ पड़े।



एकने कहा—कहाँ है?

दूसरा—यही तो, कहाँ गया ?

दोनों जने मिलकर इधर उधर देखने लगे। परन्तु रामपाल-सिंहका कहीं भी पता न लगा।

एकने कहा—रामपाल जरूर भूत है या कोई जादूगर। देखते न देखते इतना बड़ा आदमी कहाँ उड़ गया। यह गोरख धंधा तो नहीं है।

दूसरा—नहीं, नहीं, इधर देखो। वह जरूर ही इस गढ़ेमें गिर गया है। जल्दीसे वह इधर ही भाग रहा था! गढ़ा न देख कर, वह इसीमें गिर पड़ा।

पहला—तब तो अच्छा ही हुआ। खूब घात पर मिला है। अब कहाँ जायगा

दोनों बड़े उत्साहसे गढ़ेके पास आये। गढ़ेके भीतर अन्धेरा है। उसमें कोई है या नहीं, यह जानना कठिन है।

एकने कहा—गोली मारो।

दूसरेने कहा—इससे कोई लाभ न होगा। उसे गोली लगती है या नहीं, अन्धेरेमें यह कुछ भी मालूम नहीं होगा। इससे अच्छा यह है, कि गढ़ेमें उतर पड़ो!

रामपालसिंह क्या करेंगे, यह उन्होंने पहिले ही से ठीक कर रखा हैं। पाठक समझ रखें, कि दोनों डाकुओंमें एक हिम्मतसिंह और दूसरा भीमसिंह है। भीमसिंहने कहा—दोनों आदमीके एक तरफसे उतरनेसे न बनेगा। तुम उधरसे उतरो, मैं इधरसे उतरता हूं।

हिम्मतसिंहने वैसा ही किया। रामपालसिंह भी तैयार ही थे। उन्होंने भीमसिंहके दोनों पैर पकड़ कर ऐसा झटका दिया कि वह ज़ोरसे गिर कर चिल्ला उठा। रामपालसिंह उसके हाथसे पिस्तौल छीनकर उसकी छाती पर चढ़ बैठे और जोरसे उसका गला दबाने लगे। हिम्मतसिंह जल्दी जल्दी उतर रहा था परन्तु भीमके गलेकी गड़गड़ाहट सुनकर वह क्षणभर हत-बुद्धि होकर खड़ा रहा। इतने ही अवकाशके भीतर रामपालसिंहने अपनी जेबसे एक रस्सी निकालकर उसके हाथ पैर अच्छी तरहसे बाँध दिये। उन्होंने जितने जोरसे भीमका गला दबाया था, उससे यद्यपि उसका दम नहीं घुटा था परन्तु चिल्लानेकी ताकत उसमें बिलकुल ही न थी। बीच बीचमें साँस भी रुक जाता था। भीमसिंहके गलेकी आवाज सुनकर हिम्मतसिंह क्षण भरके लिये किंकर्त्तव्य-विमूढ़ हो गया था। परन्तु वह वास्तवमें भीमकी तरह कायर और डरपोक न था। उसमें साहस था, शक्ति थी और मनमें तेज था, दो एक क्षणके बाद ही वह झटपट गढ़ेमें उतर पड़ा। रामपालसिंह अब जरा बगल बचाकर खड़े हुए। जैसे हिम्मतसिंह उनकी ओर बढ़ा वैसे ही उन्होंने जोरसे उसको धक्का दिया। वह तलमला कर गिर पड़ा। हिम्मतके हाथमें जो पिस्तौल थी, उसके गिरते ही, उससे आवाज हुई। हिम्मतकी गोली हिम्मतके ही लगी। उसीके आघातसे वह मूर्च्छित हो गया।

रामपाल समझ गये, कि हिम्मत अपनी ही गोलीसे जखमी हो गया है, नहीं तो गिरते ही वह उठनेकी चेष्टा करता। अब उन्होंने देर न कर उसको भी पहलेकी तरह बाँध दिया।

इतनी देरके बाद भीमके मुखसे बात निकली। उसने पुकारा—"हिम्मत!" कोई उत्तर न मिला। रामपालने क्रोध पूर्वक भीमके मुखपर एक लात मारकर कहा—"खबरदार! चूँ मत करो। धीरे धीरे उठकर मेरे साथ चले आओ।"

भीम—कैसे आऊँ ? मेरे हाथ पैर तो बँधे हैं।

रामपालने उसको उठाकर खड़ा किया। और कहा—"देखो भीम! इस बार तुम्हारी रक्षा नहीं है। परन्तु अब भी तुम यदि मेरी बात मानो तो तुम्हारा दण्ड बहुत कुछ हलका हो सकता है।"

भीम०—तुम यदि मुझे मार डालो तो भी मैं तुम्हारी बात सुननेको तैयार नहीं हो ऊँगा। तुम जो चाहो सो मेरे साथ कर सकते हो। आज मैं तुम्हारा कुछ भी न कर सका परन्तु एक दिन मेरे हाथसे तुम्हारी मृत्यु होगी। आज यदि मैं जेल जाऊँ तो भी स्वीकार है पर मैं तुम्हारी बातोंमें न आऊँगा। दो बरसमें हो, दश बरसमें हो, जब कभी मैं जेलसे छूट कर आऊंगा तो सबसे पहले मैं तुम्हारी खबर लूँगा। तब देखूँगा कि तुम कितने बड़े जासूस हो।"



रामपालने देखा कि डाकू आसानीसे मेरी बातें सुननेको राजी नहीं होता। तब उन्होंने फिर जोरसे धक्का दिया। भीम इस

आकस्मिक धक्केको सम्हाल न सका और गिर पड़ा। रामपालसिंहने उसके शरीरका कपड़ा खोलकर फिर अच्छी तरह उसे बाँध कर छोड़ दिया।

अब वह गढ़ेसे निकलकर शराबखानेकी ओर दौड़े। वहाँसे शीघ्र ही दो तीन चरोंको लेकर वह लौट आये और साथमें एक गाड़ी भी लेते आये। आध घण्टेके भीतर भीमसिंह और हिम्मतसिंह थानेपर पहुँचाये गये।
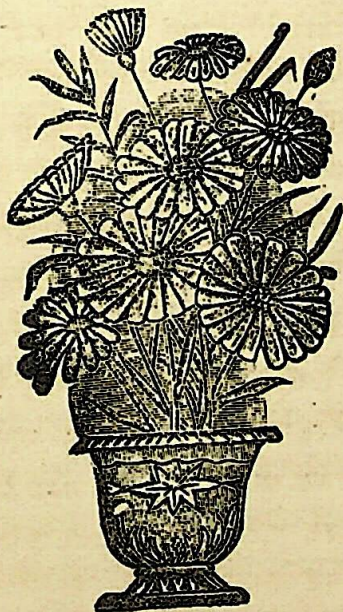
# सोलहवां परिच्छेद ।

## उद्धार ।

रामपालसिंह दोनों डाकुओंको अपने अनुचरोंके जिम्मे रख और उन्हें अन्यान्य कामोंका भार सौंप, समरसिंहके मकानपर गये। वहाँ जाकर उन्होंने जो कुछ देखा, वह पहले ही कहा जा चुका है।

कमलाकी खोज करनेके लिये समरसिंहके घरसे निकलकर वह सीधे कमलाके पिताके मकानपर पहुँचे, जहाँ आजकल जगतसिंह राज भोग कर रहा था। जिस समय मकानके पास पहुंचे उस समय उस मकानकी चहारदीवारीके पास कोई भी न था। इसलिये सहज ही चहार दीवारीको पार कर वह बागीचेके भीतर घुस गये। बागीचा बिल्कुल सुनसान पड़ा हुआ था। सभी अचेत पड़े हुए थे। रामपालसिंह एक बड़ेसे वृक्षपर चढ़ गये। वृक्ष मकानपर इस तरहसे झुका हुआ था कि उसकी एक डाल पकड़कर सहज ही दो तल्लेके बरामदेमें जाया जा सकता था। उन्होंने चारों ओर घूम फिर कर अच्छी तरहसे देख भाल लिया। परन्तु कहीं भी किसीकी आहट न मिली। तब वह निधड़क वृक्षपर चढ़ गये। वृक्षसे होकर वह दोतल्लेके बरामदेमें पहुँचे। वहाँ भी उन्होंने इधर उधर देखा

परन्तु किसीका भी पता न मिला। एक कमरेमें बहुत ही धीमी रोशनी आ रही थी। उत्सुक भावसे उन्होंने उस कमरेकी खिड़कीके पास जाकर देखा कि भीतर मट्टीका चिराग जल रहा है और एक शय्यापर कोई औरत सो रही है। रामपाल-सिंहने कमरेके दरवाजेपर जाकर साँकल उतार दी और धीरेसे धक्का दिया। दरवाजा भीतरसे बन्द न था, इसलिये धक्का देते ही खुल गया। उन्होंने कमरेमें प्रवेश किया। शय्याकी बगलमें खड़े होकर उन्होंने देखा, कि अभागिनी कमला बेहोश होकर पड़ी हुई है। उसके अङ्गके कपड़े ढीले ढाले और केश बिखरे हुए हैं। रामपालने कमलाको होशमें लानेकी बहुत चेष्टा की परन्तु वह न उठी। उन्होंने समझा, डाकुओंने इसे बेहोश कर रखा है।

उसी समय कमरेसे बाहर किसीके पैरकी आवाज हुई। रामपालसिंह और कोई उपाय न देखकर चारपाईके नीचे छिप गये। क्षण भरके बाद उस कमरेमें जगतसिंह और कमलाकी विमाता आ पहुँची।

कमलाकी विमाताने कहा—देखो, मैं अब भी मना करती हूं, तुम इस अभागिनीका खून मत करो।

जगत—प्रिये! तुम समझती नहीं। कमलाको मारनेके सिवा दूसरा कोई उपाय नहीं है। ऐसा कोई भी स्थान नहीं, जहाँ छिपानेसे रामपालसिंह उसको खोज न निकाले सके। हम लोग यहाँ बात चीत कर रहे हैं। कौन कह सकता है, वह पापी

भी कहीं खड़ा होकर हमारी बातें सुन नहीं रहा है। रामपाल शैतान हैं। शैतान की तरह हम लोगोंका पीछा करता है। कोई उसको देख नहीं सकता है, परन्तु वह सबको देखता है। कहाँ क्या होता है, सबकी वह खबर रखता हैं। अवश्य वह कोई शैतान है। आदमीमें यह शक्ति नहीं हो सकती।

कमलाकी विमाता—अभी रामपाल कहाँ है ?

जगत०—भीमसिंह और हिम्मतसिंहने उसका पीछा पकड़ा है। आज वे दोनों उसका खून करेंगे। परन्तु अब भी वे लौटे नहीं, इससे सन्देह होता है। शायद वे रामपालके हाथ पकड़े गये हैं।

कमलाकी विमाताने पूछा—तो तुम अभी क्या करना चाहते हो ?

जगत—थोड़ी देर और उनकी राह देखूंगा। यदि वे नहीं आये तो मैं स्वयं इसकी हत्या करूंगा। मेरे दो आदमी खिड़कीके पासकी पोखरीके भीटेपर गढ़ा खोद रहे हैं। मैं इसे मारकर इसीमें गाड़ दूंगा।

कमलाकी विमाता—यदि गाड़ना ही है तो इस बेहोश अवस्थामें ही क्यों नहीं गाड़ देते ? खून करनेकी क्या जरूरत है ?

जगत०—नहीं, कच्चा काम कर एक बार ठगा चुका हूँ। अबकी बार मैं इसका नामोनिशान भी नहीं रखूंगा

इतना कहकर वे दोनों चले गये। रामपालसिंह तुरत चारपाईके नीचेसे निकल छिपे हुए उनके पीछे पीछे चले।

उन दोनोंने एक दूसरे कमरेमें प्रवेश किया। रामपालसिंह और आगे न बढ़ कर जल्दीसे लौट आये और कमलाको उठाकर अपने कन्धेपर रख लिया। तितल्लेसे दोतल्ले पर और दो तल्लेसे नीचे चले आये—कहीं किसी ने रोक टोक न की। परन्तु नीचे आकर बाहर निकलनेका कोई रास्ता न दिखलायी पड़ा। वह बड़े फेरमें पड़े। बहुत दूर दौड़ धूप करने पर भी कोई खुला हुआ दरवाजा न मिला। अन्तमें झुँझला कर उन्होंने एक बन्द दरवाजे पर जोरसे पदाघात किया। दर-वाजेकी छिटकनी टूट गयी और वह बाहर निकल आये।

वह शब्द सुनकर मकानके नौकर चाकर जाग उठे और "चोर चोर" कहकर इधर उधर दौड़ धूप मचाने लगे। चारों ओर एक महा कोलाहल मच गया। उसी गोलमालमें जगत-सिंह आँखें मुँह मींजता हुआ बाहर आया। मानों वह गाढ़ी नीन्दसे उठा हुआ आ रहा है।

रामपालसिंह इतनी देरमें लापता हो गये हैं। तीव्र वेगसे वह शीघ्र ही रास्ते पर आ पहुँचे। यहाँ उन्हें अब कौन पक-ड़ता है? पहले ही उन्होंने थाँटीके एक पहरेवालेको अपना चपरास दिखलाकर उससे सहायता माँगी। पहरेदारने सीटी बजाकर और भी कई एक पहरेदारोंको बुला लिया! एक पहरेदार घोड़े गाड़ीके अड्डोंसे एक गाड़ी लिवा लाया और उसमें कमलाको बिठाकर रामपाल भी उसमें जा बैठे। दो पहरेदार गाड़ीके आगे पीछे चढ़ बैठे।

गाड़ी समरसिंहके मकान पर पहुँची। कमलाको उतार कर रामपालसिंहने वहाँ कमलाकी सेवा सुश्रूषाका प्रबन्ध किया और थानेमें एक पत्र लिखा। थानेदारके यहाँसे उसका जो उत्तर आया, उसका सारांश नीचे दिया जाता है।

महाशय,

आपके आज्ञानुसार आज सारी रात, और कल जबतक आपका कोई दूसरा पत्र न आयगा जगतसिंहके मकानके चारों ओर पुलीसका कड़ा पहरा रहेगा। मैंने ऐसा प्रबन्ध कर दिया है कि इस समयके भीतर उस मकानसे एक आदमी भी निकलने न पाये और न कोई प्रवेश ही करने पाये। जगत-सिंहके सदर फाटक पर मैं स्वयं गुप्त वेशमें तैनात रहूंगा। इस पर खूब ध्यान रक्खूंगा कि जगतसिंह और उसके नौकर चाकर जरा भी सन्देह न करने पायें कि उनका मकान पुलीससे घिरा हुआ है।

पत्रका इस प्रकार उत्तर पाकर रामपालसिंह उस रातको समरसिंहके यहाँ ही ठहर गये। उनके सभी चर मालिकके आदेशानुसार अपना अपना काम पूरा करनेके लिये उसी रातको इधर उधर दौड़ पड़े।

# सत्रहवां परिच्छेद.

## उपसंहार।

दूसरे दिन सवेरेसे दो बजे दिन तक रामपालसिंह कहाँ थे, क्या करते थे, किसीको कुछ भी मालूम न हुआ। अपनी सब तैयारी कर, दो बजे रामपाल सिंह जगतसिंहके मकान पर उपस्थित हुए।

जगतसिंह अपने बैठकखानेमें बैठा हुआ अपने दो एक अनुचरोंसे गत रात्रिके गोलमालकी चर्चा कर रहा था और किस तरहसे अब जान बचे, इसकी चिन्ता कर रहा था। इतनेमें रामपालसिंहने वहाँ उपस्थित होकर पूछा—"जगतसिंह किसका नाम है?"

जगतसिंहको वह अच्छी तरहसे ही जानते थे, परन्तु उन्होंने ऐसे ही पूछा मानों जगतसिंहसे उनकी कभी की भेंट नहीं है।

जगतसिंहने सन्देहके साथ पूछा—क्यों महाशय! आपको क्या जरूरत है? आपका नाम?

रामपालसिंहने गम्भीर भावसे उत्तर दिया—मेरा नाम? मेरा नाम रामपालसिंह है। मैं सरकारी जासूस हूं। सरकार मुझे राजा रामपालसिंह कहती है।

जगत०—किस मतलबसे आप यहाँ तशरीफ लाये?

रामपाल०—मैं आपकी धनसम्पत्ति लेने आया हूं।



जगत०—हमें अपनी धन-सम्पत्ति विक्रय करना नहीं है।

इसके सिवा यदि आपका कोई और मतलब न हो तो आप सीधे अपना रास्ता लीजिये।

रामपाल०—मैं आपका अभ्यागत हो कर नहीं आया हूं। आपसे प्रार्थना भी नहीं करता हूँ कि आप अपनी धन-सम्पत्ति मुझे बेच दीजिये। आपको वाध्य होकर सब सम्पत्ति बेच देनी होगी, यही शुभ समाचार सुनानेके लिये आया हूं।

जगत०—देखिये, ध्यान कर लीजिये कि अभी आप मेरे मकानमें खड़े होकर बातें कर रहे हैं,। मैं जिस तरहसे चाहूं यहाँसे आपको निकाल सकता हूं।

रामपालसिंहने क्रोधित होकर कहा—यह मकान आपका नहीं है। कानूनके अनुसार आप इस मकानकी एक ईंट पर भी दावा नहीं कर सकते।

इतना कहकर रामपालसिंहने पाकेटसे एक छोटीसी वंशी निकाल कर बजायी। तुरत एक आदमी बैठक खानेमें दाखिल हुआ। उस आदमीको देखते ही जगतसिंह चौंककर खड़ा हो गया। रामपालने उस आदमीकी ओर संकेत करके कहा—"इस आदमीको देखनेसे ही आपको याद आ जायगा, कि कमलाको आपहीने इलाहाबादके पास छुड़वा दिया था?

जगत०—झूठ बात है! मैं इसे नहीं पहचानता। इसे कभी भी नहीं देखा है।

रामपालसिंहने फिर वंशी बजायी। अबकी बार एक बूढ़ेने उस कमरेमें प्रवेश किया। जगतसिंहने उसको देखते ही आँखें

लाल कर कहा—यह कौन ? यह तुम्हारे दलका कोई आदमी है क्या ? अच्छा अब समझा, कि तुम सब लोग मिलकर मेरे विरुद्ध षड़यन्त्र कर रहे हो।

बूढ़े मंगरू ने तुरत पूछा—हां, हां, अब तुम मुझे नहीं पहचानोगे ! अब मैं वह मंगरू नहीं हूं। ( क्रोधसे ) पाजी ! हराम खोर ! तूने मुझे नहीं पहचाना !

जगतसिंह एक छलांगमें कूदकर मंगलके पास आ पहुँचा और क्रोध पूर्वक बोला— क्या ! मेरे घर आकर तू मुझे गाली देता है ? जूते लगावाकर मैं घरसे वाहर निकलवा दिया तव जानेगा ! पाजी ! बदमाश कहींका !

रामपालसिंहने जगतका गला पकड़ जोरसे खींचकर बैठाया और बोले—"जनाब आली ! इतने क्रोधित क्यों होते हैं ? जरा ठण्डे होकर मेरी सारीं बातें सुननेकी कृपा करें !"

जगतसिंहने क्रोधसे आंखें लाल करके रहा— देखो ! जासूस रामपाल ! मेरे मकानमें अनधिकार प्रवेश कर तुम एक रईसका अपमान कर रहे हो ! कानूनसे तुम दण्डके भागी हो !

रामपालसिंहने हँसते हुए कहा—यह मुझे अच्छी तरह मालूम है !—कानून मैं आपसे कम नहीं जानता हूं ! मैं जो काम करता हूं, उसका आगा पीछा पहले सोच लेता हूं ! इसके लिये आप निश्चिन्त रहिये !

इसके बाद सहसा रुद्रमूर्त्ति धारण कर दांत पीसते हुए



उन्होंने कहा—पापी ! बदमाश ! तू अब भी मेरे सामने बात

करनेका साहस करता है! उधर देख! शायद कमलाके मृत पिताकी सन्तप्त आत्मा तुझे दण्ड देनेके लिये यहां सशरीर अवतीर्ण हुई है! जिनकी सम्पत्तिसे तू मौज उड़ा रहा है, उन्हींके साथ विश्वासघात कर तूने विष द्वारा उनको मार डाला था। उनकी लड़कीको तूने तरह तरहके कष्ट दिये, तेरे पापोंका प्रायश्चित्त देखनेके लिये, उनकी पवित्र आत्मा स्वर्गसे उतर आई है! तुझे आंखें नहीं हैं, तू देख नहीं सकता शैतान! बदमाश! फिर भी अस्वीकार करेगा?

रामपालसिंहने फिर बंशी बजायी! समरसिंहने धीरे धीरे बैठकेमें प्रवेश किया!

उन्हें देखते ही जगतसिंहने कहा—ओः। इसको खूब पह-चानता हूं! यह पाजी जुआचोर हैं! यह जालसाजी करके लड़कीको कमला कह मेरी सम्पत्तिपर दखल जमाना चाहता है परन्तु अदालतमें इसका जाल टिकने न पाया तब यह अपनासा मुँह लेकर लौट गया! इसके साथ षड्यन्त्र कर तुम मुझे बशमें करना चाहते हैं! जाओ! यहां तुम्हारी दाल न गलने पायगी! तुम मुझसे एक कानी कौड़ी भी नहीं पा सकते!

रामपालकी बंशी फिर बजी! चार पहरेदारोंसे घिरे हुए भीमसिंह और हिम्मतसिंह हथकड़ी बेड़ीसे आभूषित होकर आ पहुंचे!



भीमसिंहको इस प्रकार बन्दीकी अवस्थामें देखकर जगत-

सिंहका एक बारगी खून सूख गया! उसने निराश होकर कातर कण्ठसे कहा—"यह क्या भीम! तुम मेरे विरुद्ध गवाही देने आये हो?"

भीमसिंहने कहा—देखो जगतसिंह !अब तुम्हारी चालाकी नहीं चलेगी! अब यदि खैर चाहो तो, कमलाका धन कमला-को लौटा दो और रामपालके हाथ पैर पकड़ो, जिससे वह तुम्हारा दण्ड कुछ हल्का करनेकी कोशिश करें! तुम्हारे ही लिये मेरा सर्वनाश हुआ है! तुम्हारे काममें जबसे मैंने हाथ दिया है, तभीसे मुझे बार बार यह लाञ्छना भोगनी पड़ रही है। इसीलिये आज मैं सन्तप्त होकर तुम्हारे विरुद्ध साक्षी देनेके लिये खड़ा हुआ हूं! तुम्हारे दिये हुए कमलाकी सम्पत्ति विषयक सभी कागज पत्र मैंने रामपालसिंहको दे दिये हैं! अब किसी तरहसे भी तुम्हारी रक्षा नहीं है!

जगतसिंह उन्मत्त होकर चिल्ला उठा—सब जालसाजी है! सब जूआ चोरी है! कागजपत्र, दलील दस्तावेज सब जाल हैं! तुम लोग षड़यन्त्र कर मेरा सर्वनाश करना चाहते हो!

रामपालसिंहने कहा—देखो जगतसिंह! तुम्हारा भाग्य बहुत ही खोटा है! इसलिये तुम मुझसे चालाकी करना चाहते हो! तुम जानते नहीं, कि मैं जिस काममें हाथ देता हूं, उसके लिये सबसे पहले सब तरहसे तैयार हो लेता हूं! तुम यदि इन्कार भी करो तो मैं हथकड़ी बेड़ी पहना कर आज तुम्हें हवा-

लात में बन्द करूँगा। इतनी शक्ति मुझमें है! खबरदार समझ बूझ कर बातें करो!

जगतसिंहका साहस अब जाता रहा! उसने गिड़गिड़ाकर कहा—आप मुझे क्या करनेको कहते हैं?

रामपाल—इतने आदमियोंके सामने कमलाकी सम्पत्ति तुम कमलाके नाम इक़बाल कर दो! यदि ऐसा करनेको तुम राजी न होओगे तो आज तक तुमने जितनी चोरी-डकेती और खून किये हैं, अदालतमें सबका विचार करवाऊँगा और तुम्हें फाँसी या कालेपानीकी सजा दिलवाऊँगा!

जगत—इस सम्बन्धमें एक बार कमलाकी विमातासे पूछना पड़ेगा! एक बार मुझे अन्दर महलमें जानेकी आज्ञा दीजीये! भागूँगा नहीं, इसकी फिक्र न कीजिये!

रामपालसिंहने हँसकर उत्तर दिया। भागनेका रास्ता होगा तब तो! इस मकानसे एक चींटी भी बाहर नहीं निकल सकती है! आप खुशीसे भीतर जाइये!

जगतसिंह भीतर जाकर उदास मुँह किये हुए तुरत लौट आये! रामपालसिंहने पूछा—इतनी जल्दी लौट आये?

जगतसिंह बोले—सर्वनाश हो गया है! सर्वनाश हो गया है! कमलाकी विमाता आड़मेंसे शायद सभी बातें सुन रही थीं। उन्होंने विष खाकर प्राण त्याग कर दिया है! उनकी लाश फर्शपर पड़ी हुई है!



समरसिंहने कहा—अच्छा ही हुआ है। उन्होंने बुद्धिमानीका